जाहरपीर : गुरु गुग्गा

डा० सत्येन्द्र

जाहरपीर : गुरु गुग्गा

डा० सत्येन्द्र एम० ए० पी-एच० डी०
रीडर—आगरा विश्वविद्यालय हिन्दी विद्यापीठ

आगरा विश्वविद्यालय, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा प्रकाशन

प्रकाशक
आगरा विश्वविद्यालय
हिन्दी विद्यापीठ
आगरा।

मुद्रक—
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस आगरा।

प्रथमावृत्ति ५]   दिसम्बर १९५९   [मूल्य

जाहरपीर : गुरु गुग्गा

[एक लोक-पापड तथा तद्विषयक लोक-साहित्य का अध्ययन]

'जाहरपीर' को ही गुरु 'गुग्गा' भी कहा जाता है । जाहरपीर अथवा गुरु गुग्गा का ब्रज में बहुत महत्त्व है । पेंजर महोदय ने 'कथा-सरित्सागर' के प्रथम भाग के प्रथम परिशिष्ट 'पश्चिमोत्तर प्रदेश' के सबध में लिखा है—"In the census returns 123 people recorded themselves as votaries of Guga, the snake-god"

'जनसख्या-गणना में १२३ व्यक्तियो ने लिखाया कि वे सर्प-देवता गुग्गा के भक्त हैं' ।[१]

गोगा चौहान के सबध में टाड महोदय ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ में तीन स्थानो पर कुछ उल्लेख किया है । एक स्थान पर उन्होंने लिखा है—

"गोगा चौहान वछराज का पुत्र था । सतलज से हरियाना तक के समस्त प्रदेश पर उसका अधिकार था । उसका स्थान मेहरे या 'गोगा की मेढ़ी'[२] सतलज पर स्थित था । महमूद के पहले भारतीय आक्रमण में गोगा चौहान ने अपने पैंतालीस पुत्रो और साठ भतीजो के साथ इस स्थान की रक्षा में प्राण त्यागे ।" वह रविवार था, तिथि थी नवमी । राजपूताने के छत्तीसों कुल[३] इस दिन को गोगा की स्मृति में पूज्य मानते हैं । मरुभूमि में जहा 'गोगा देव का थल' है, वहाँ तो इसकी बहुत मान्यता है । गोगा के घोडे 'जवाडिया' का नाम भी बहुत लोकप्रिय हो गया है । राजपूताने भर में श्रेष्ठातिश्रेष्ठ युद्ध के अश्व को 'जवाडिया' का प्रशसा सूचक नाम दिया जाता है" ।[४]

---

१ The Ocean of Story Vol I p 203 (Tawney & Penzer)

२ "His tomb 200 miles to S W of Hissar, 20 miles beyond Dadrera His territory Hansi to Garra (Gharra) capital Mehera on river" यह सूचना ईलियट महोदय ने दी है ।

३ टाड ने पाद-टिप्पणी में लिखा है 'छतीस पौन' । 'Chatees Pon'

४ Tod Annals and Antiquities of Rajasthan (popular edition) Volume II P 362

टाड महोदय ने मन्डोर में जो भव्य स्मारक नागदा के किनारे देखे थे उनमें से एक म उन्होंने देखे गणेश भैरव (हम) चामुण्डा कंकाली मातृकी[१] उसके बाद की पंक्ति में सबसे आगे मल्लिनाथ तब पाबू जी रामदेव राठौर, हरबा सांकला गोगा चौहान तथा मेवोह मगूलिया। इसी वर्णन में गोगा चौहान के संबंध में टाड ने फिर लिखा है कि—

'गोगा चौहान जो अपने सैंतालीस पुत्रों के साथ महमूद के आक्रमण में सतलज मार्ग की रक्षा करता हुआ बलि गया' ।[२]

गोगा चौहान (मन्डोर)

टेम्पल महोदय ने जाहरपीर अथवा गुरु गुग्गा का एक बड़ा लोकगीत अपने संग्रह में दिया है। यह गीत वास्तव में 'स्वांग' है जो जागरण में खेला जाता था। इसकी भाषा हिन्दी है। एक दूसरा गीत उन्होंने बिस्सो के मिरासी गायक से लिया है। श्री जे॰ डी॰ कनिंघम महोदय ने 'हिस्ट्री आफ द सिक्ख' (संस्करण १८४९) में पृष्ठ ११ पर पाद-टिप्पणी में गोगा का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि "पंजाब के निचले हिमालयों में गूगा अथवा गोगा के बहुत से मन्दिर हैं और मैदानों का वार्षिक पर्व भी वैसे ही प्राचीन

१ Is a statue of the Nathji or spiritual guide of the Rahtores in one hand he holds his mala or Chaplet in the other his Churri or patriarchal rod for the guidance of his flock. Tods Raj Vol. I p 574

२ Tod s Rajasthan Vol I p 574

वीर की स्मृति के प्रति श्रद्धा रखता है। उसके जन्म अथवा उद्भव के कितने ही विवरण दिये जाते हैं। एक उसे गजनी का प्रमुख बताता है, और अपने भाई उर्जुन और सुरजन से लडाई करने वाला कहता है। दोनो भाइयो ने उसे मार डाला पर अचानक एक चट्टान फटी और उसमें से गूगा शस्त्रास्त्र सज्जित घोडे पर सवार प्रकट हुआ। एक अन्य विवरण में उसे रजवर्रा (Rajwarra) जगल के दर्द दरेहरा का स्वामी कहा गया है। यह टाड के वर्णन से कुछ कुछ मिलता है, जो इसी वीर के सबध में है, जो महमूद की सेना से लडते लडते लडते मारा गया। वोगेल ने 'इडियन सर्पेण्ट लोर' मे लिखा है कि गूगा पर बहुत लिखा जा चुका है।[७]

इनके बाद जाहरपीर अथवा गुरु गुग्गा पर अन्य आधुनिक उल्लेख मिलते हैं। इनसे यह अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है कि गुरु गुग्गा राजस्थान, पजाब और पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में विशेष मान्य रहा है।[८] गुजरात में भी इसकी प्रतिष्ठा है पूर्व मे इसका नाम प्राय नही मिलता।

राजपूताना गजेटियर के उल्लेखो मे बताया गया है कि —

स्वय मदौर मे, मोतीसिंह के बाग के पास कुछ चैत्य हैं जो मारवाड के अतीत गौरव की गाथा कहते हैं। इसके समीप ही एक और महत्त्वपूर्ण स्थान है जिसे तेतीस करोड देवताओ का स्थान कहा जाता है। इसमें १६ विशाल प्रतिमाएँ हैं। इन प्रतिमाओ में से सात प्रतिमाएँ इस प्रकार हैं —

१ गुसाई जी एक बडे धर्म गुरु।

२ मल्लिनाथ जी ये राव सलखा के ज्येष्ठ पुत्र थे। उन्ही के नाम पर मल्लानी जिले का नामकरण हुआ है।

---

७ वही उसने निम्नलिखित साहित्य का उल्लेख किया है —

1 A Cunningham A S R Vols XIV p 79 ff
2 A Cunningham ,, ,, XVII p 159
3 Ind Ant. Vols XI-p 53f
4 ,, ,, XXIV pp 51 ff
5 D. Ibbetson Karnal Settlement Report. P 379
6 W Crooke Popular Religion Vol. 1 pp 211 ff
7 Kangara District Gazetteer p 102 f
8 H A Rose Punjabi Glossary Vol 1 pp 171 ff
9 Mandi State Gazetteer pp 144 ff
10 Chamba state Gazetteer pp 183 f

८ राजपूताना गजटीयर खड ३ अ (Vol IIIa) द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट रेजीडेंसी तथा बीकानेर एजेंसी टेक्स्ट लेखक मेजर के० डी० आर्सकाइन I A, C I E पायोनियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९, में पृष्ठ १९७, २५६ तथा ३८७-३८८ पर टिप्पणिया हैं।

विमर्श

सबसे पहला प्रश्न उठता है कि भारतीय धर्मों के विकास में इस जाहरपीर-अनुष्ठान का क्या स्थान है?

यदि इस समस्त लोकवार्ता का विश्लेषण किया जाय तो विदित होगा कि

(अ) (१) गुरु गुग्गा एक योद्धा अथवा वीर हैं।
(२) वे ऐतिहासिक पुरुष हैं।
(३) उनकी अकाल मृत्यु हुई है।

(आ) वे जाहरपीर कहलाते हैं।

(इ) उनकी लोकवार्ता का संबंध नागों से है। नाग उनकी पूजा के माध्यम हैं।

(ई) वे सिर धाने वाले या सिर खेलने वाले देवता हैं।

(उ) सिर धाने के अनुष्ठान में उनके जीवनवृत्त का वर्णन और गायन प्रधान माध्यम हैं। दर्शन के लिए 'पट-चित्र' रहता है।

(ऊ) कोड़ा या चाबुक एक प्रधान उपादान है।

(ए) गुग्गा का संबंध घोड़े से भी है जो उनके साथ पैदा हुआ।

पहले दो प्रश्नों का संबंध 'नाम' से भी है। 'गुरु गुग्गा' अथवा गोगापीर और जाहरपीर ऐसे नाम क्यों? लोकवार्ता न नाम साम्य से एक व्युत्पत्ति बताती है।

गुरु गोरखनाथ की सेवा की बाछल ने फल देने का अवसर आया तो उसकी बहन काछल गुरु गोरख के पास पहुँची। गुरु गोरखनाथ ने उसे फल दे डाले। बाद में पहुँची बाछल। अब गुरुजी के पास क्या था? जो देना था वे दे चुके। पर सेवाएँ तो बाछल ने की थीं। फलतः गुरुजी ने झोले में से 'गूगल' निकाल के दी। गूगल से पैदा होने के कारण ही गुरु गुग्गा नाम पड़ा। गूगल' गूगल गूगा अथवा गोगा भी। ऐसे विश्वासों के आधार पर ऐसे नाम रखे जाते हैं इसमें संदेह नहीं। यह गुग्गा भी इसी नियम से रखा गया है। किन्तु यह ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। नाम निश्चय ही कुछ अद्भुत है और अभी अनुसंधान चाहता है। गोगा की कहानी में गौओं से भी उसका संबंध है उस संबंध से गोगा गौओं की रखवाली करनेवाला भी हो सकता है।[१०] किन्तु यह नाम जितना लौकिक विदित होता है उतना संस्कृत नहीं।

इसी के साथ इसके आगे प्रश्न आता है फिर यह 'जाहरपीर' क्यों कहलाये।[११]

---

१ डा वासुदेवशरण अग्रवाल के परामर्श पर श्री मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है 'जाहरपीर' को गुगापीर (सं गोग्रह-गोग्गह-गोगा — यह मध्यकालीन नाम था। जो लोग गायों की रक्षा के लिए मरते मरते प्राण दे देते थे वे गोगा कहाते थे) भी कहते हैं। 'पीर शब्द "वीर' शब्द का पूर्विका पैशाची रूप विदित होता है। डा रांगेय राघव ने इस शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए लिखा है
"यदि गूगा "चक्र" का अपभ्रंश है तो"

११ ईलियट ने लिखा है कि मराठे इन्हें जाहिरपीर कहते हैं ['Mahrattas call him Zahir Pir' —M H T R. of N W Pr पृ ४ (२११)

'वीर'[१२] शब्द का अर्थ बुजुर्ग या गुरू होता है, अत' "गुरू" को पीर नाम दिया गया। यह ठीक ही है। पर, यह 'जाहर' क्या है ? समस्त कथा में इस "जाहर" शब्द का रहस्य नही खुलता। 'जाहर" यदि 'जाहिर' का ही दूसरा रूप है तब तो 'प्रत्यक्ष' या प्रकट अर्थ हो सकता है। तव "जाहरपीर" का अर्थ होगा, ऐसा गुरू जो अपने गुरुत्व को प्रकट दिखा रहा हो। कोई कोई जाहर को 'जहर' भी कहते है। जहर अथवा विप से सम्वन्ध रखने वाला गुरू। गुरू गुग्गा का सबध सर्पो से माना जाता है। क्रुक्स ने उसे सर्पों का देवता माना है। गुरू गुग्गा की प्राय प्रत्येक वार्ता में यह उल्लेख है कि उसने माता के पेट में से ही सर्पों को विवश किया था कि वे उसको माँ के बैलो को डस लें, जिससे मा अपने मायके न जा सके। तव जाहरपीर का अर्थ हो सकता है जहर वाले सर्पों से सबध रखने वाला गुरू। किन्तु ये सभी बातें अधकार में टटोलने के समान प्रतीत होती हैं।" मूल कथा में 'जाहरपीर' का रहस्य नही खुलता। इस शब्द का उसमें अर्थद्योतक प्रयोग तक नही हुआ। 'पीर' शब्द धार्मिक क्षेत्र में विविध पीरो की परपरा की ओर सकेत करता है। उधर "जाहरपीर" का सबध नाथ सप्रदाय से है। आज तक "नाथ" लोग ही इसे अपनाये हुए है। प्रत्येक कथा में गुरू गोरखनाथ अवश्य आते हैं। इससे इसका सबध गोरखपथी नाथ-सप्रदाय से होना चाहिये।

नाथ सप्रदाय में एक "जाफरपीरी" सप्रदाय का उल्लेख मिलता है। [देखिये—नाथ-सप्रदाय, लेखक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी] जाफर का जाहिर या जाहर होना असभव नही है। या तो यह "जाफरपीर" ही "जाहरपीर" है या "गुरू गुग्गा" "जाफरपीर" के सप्रदाय के प्रसिद्ध पीर हैं। पीर के सबध में योगियो में जो रिवाज प्रचलित हैं उनकी ओर ध्यान जाता है।" इनसे भी यह सिद्ध होता है कि 'पीर' का

---

१२. पीर शब्द वीर से उत्पन्न माना जाय तो प्रश्न यह आता है कि वह 'गुरू' का पर्यायवाची कैसे हुआ ? योगियों के सबध में डा० रागेय राघव न अपने प्रबध 'गोरखनाथ' में बताया है कि "योगियो में श्राद्ध नही होता। बरसी होती है। बरसी पर सात गद्दिया बनायी जाती हैं जो १ पीर, २ जोगिनी, ३ साख्य, ४ वीर ५ धन्दारी (गोरखनाथ के रसोइये) ६ गोरखनाथ और ७ नेक के लिए होती हैं। पीर की गद्दी को सोने चादी के सिक्के और गाय दी जाती है, वीर को तावा आदि [गोरखनाथ (प्रबन्ध) टकित प्रति पृ० ३५६।] यहा पीर और वीर दोनो शब्द अलग अलग अर्थ में प्रयुक्त हुए है।

१३ प० झावरमल्ल शर्मा ने एक पाद-टिप्पणी में लिखा है—

"अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अन्यतम आदि कार्यकर्ता प्रख्यात प० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पचानन का अनुमान है कि गोगाजी चौहान को जो मुसलमान जाहिरपीर कहने लग गये, इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होने गोगाजी के "गो" और "गाजी' टुकडे कर लिए। और "गो" के साथ "गाजी का योग देखकर अपने विश्वासानुसार पीर कहने लग गये। जाहिर का अर्थ तो "प्रकट" या प्रकाश है, किन्तु यहा जाहिरपीर का मतलव जौहर या जुझार मालूम होता है। (शोध पत्रिका भाग १, अक ३, 'गोगा चौहान पर एक दृष्टि'।) यह भी एक अनुमान ही है।

३ पाबूजी राठौर राजपूत इनके विषय में कहा जाता है कि ऊंट का पहले पहल इन्होंने ही प्रयोग किया। ये गायों के रक्षक थे।

४ रामदेवजी ये तोमर राजपूत थे इनका संबंध दिल्ली के अनंगपाल के घराने से था। इन्होंने रामदेवरा नामक ग्राम बसाया था (पोकरन से लगभग ८ मील)। यहां प्रतिवर्ष अगस्त या सितम्बर में रामदेवजी के सम्मान में एक मेला लगता है। रामदेवजी कभी कभी रामशाह पीर भी कहे जाते हैं। निम्नवर्गीय जनता इनकी पूजा करती है। कहा जाता है कि इन्होंने कभी झूठ नहीं बोला था। सन् १४५८ में आपने जीवित समाधि ली थी यह कहा जाता है।

५ हरभूजी ये पँवार राजपूत थे। इनका संबंध सांकली से माना जाता है। ये फलौदी के समीप बैंगटी गाँव के रहने वाले थे। यहां पर इनकी एक झाड़ी बताई जाती है जो आज भी पूजनीय है। राउ जोधा के ये कृपापात्र थे।

६ जाम्भा जी ये भी पँवार राजपूत थे। ये बीकानेर के हरसर नामक स्थान के थे। विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में मान्य हैं।

७. मेहाजी गहलोत या सिसोदिया वंश के एक राजा थे।

८ गोगाजी चौहान राजपूत थे। ये मुसलमान हो गये थे। हाँसी से सतलज तक इनका राज्य था। कहा जाता है कि ये दिल्ली के फिरोजशाह द्वितीय के साथ लड़ते लड़ते मारे गये। यह युद्ध ११ वीं शती के अन्त की घटना बताया जाता है।

९ जलन्धरनाथ जी नाथ सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध योगी थे। इनके एक शिष्य देवनाथ थे जो महामन्दिर में एक विश्राम मंदिर के नीव डालने वाले के रूप में मान्य हैं।

राजपूताना गजेटियर्स खंड तृतीय ए, पृष्ठ १९७
दी वैस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजीडेंसी एण्ड दी बीकानेर एजेंसी
बाइ मेजर के डी अर्सकाइन आई॰ए सी आई ई इलाहाबाद
द पाइनियर प्रेस १९ ९

गुरु गोगा जी —

गुरु गोगा जी योद्धा संत थे। इनके संबंध में जो विवरण राजपूताने के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं उनमें बहुत भिन्नता मिलती है। सांप के काटे हुओं की रक्षा करने वाले के रूप में इनकी प्रसिद्धि है। इनका मूर्ति की पूजा दो रूपों में होती है घोड़ी पर चढ़े हुए अथवा सर्प के रूप में। इनकी पूजा कई वर्गों में प्रचलित है।

[राजपूताना गजेटियर खंड तृतीय ए॰ पृष्ठ २१६, द वैस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजीडेंसी एण्ड द बीकानेर एजेंसी आदि।]

"उत्तर पूर्व में गोगाना नामक स्थान पर एक पशुओं का मेला अगस्त तथा सितंबर में होता है। इस मेले में १ ।१५ हजार आदमी भाग लेते हैं। इसे 'गोगा मेड़ी' मेला के नाम से पुकारा जाता है। यह नामकरण 'गोगा चौहान' राजपूत के नाम पर हुआ है। ये मुसलमान हो गये थे। इनका राज्यकाल ११ वीं शती माना

जाता है । इनका राज्य हाँसी से सतलज तक बताया जाता है । अनेक गाँवो की जनता का विश्वास है कि इनकी मढ़ी में मन्दिर के एक बार दर्शन करने से साँप के काटने से मुक्ति हो जाती है । यहाँ से एक मील की दूरी पर एक गोरख टीला है । इसके संबध में बताया जाता है कि यह स्थानीय संत गोरखनाथ का पहला निवास-स्थान है । इनके संबध में केवल इतना ही ज्ञात है कि ये एक पहुँचे हुए सिद्ध योगी थे ।

[वही, पृष्ठ ३८७]

राजगढ़ तहसील रैनी से दक्षिण पूर्व में एक दद्रेवा[६] नामक गाँव है । यह पश्चिमी किनारे पर है । यह मुसलमान चौहान सन्त गोगा की राजधानी बताया जाता है । इसका वर्णन पहले 'नोहर तहसील', वाले विवरण में आ चुका है । यहाँ गोगा के सम्मान में प्रति वर्ष भादो (अगस्त-सितम्बर) में एक छोटा सा मेला लगता है ।

[वही पृष्ठ ३८८]

यहाँ तक साहित्यिक और ऐतिहासिक उल्लेखो का विवरण दिया गया है ।

लोक-साहित्य में इसके दो रूप मिलते हैं । एक तो सामान्य मनोविनोदार्थ स्वांग वाला रूप जिसका संकलन टेम्पल महोदय ने किया है । यह जालंधर में खेला जाता था ।* ब्रज अथवा पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में स्वांग वाला रूप नही मिलता ।

ब्रज में गुरू गुग्गा के गीत का आनुष्ठानिक महत्त्व है । गुरू गुग्गा या जाहरपीर एक देवता के रूप में माने जाते है । इनके अनुयायी भक्त अपने घरो पर इनका जागरण भी कराते हैं और इनके थान की यात्रा भी करते हैं, यात्रा को 'जात' कहते हैं । जागरण के अवसर पर कपड़े पर कढ़ा हुआ इनका जीवनवृत्त दीवाल पर टाग दिया जाता है, और एक बड़ा लोहे का कोड़ा या चाबुक जागरण करनेवाला नाथ हाथ में लिये रहता है । जागरण में गुरू गुग्गा का गीत गाया जाता है । इस गीत में गुरू गुग्गा का ही जीवन-वृत्त रहता है । उसे गाते गाते नाथ पर गुरू गुग्गा का आवेश आ जाता है, नाथजी खेलने लगते हैं । जागरण अब सफल माना जा सकता है । इस समय गुरू गुग्गा अथवा जाहरपीर से मनचाही मुराद माँगी जा सकती है और अन्य विविध बातें भी पूछी जा सकती हैं ।

जात में गुरु गुग्गा के सोहले गाये जाते हैं ।

इस प्रकार गुरू गुग्गा विषयक इस दूसरे प्रकार के लोक-साहित्य का धार्मिक महत्त्व है ।

---

६ एक जातक में उल्लेख है कि दर्दर (पालि० दद्दर) दर्दर-नाग पहाड के नीचे रहते थे । द्र० सर्पेण्ट लोर-वोगेल, पृष्ठ, ३३

*दूरान्वय से तो यह स्वांग वाला रूप भी अनुष्ठान का अंग माना जा सकता है । यक्ष-पूजा में किसी विशिष्ट यक्ष से संबंधित घटनाओ का नाटक खेला जाता था । बौद्ध जातक में उल्लेख है कि जीवक ने एक यक्ष का मंदिर बनवाया था और उसके जीवन की घटनाओ को नाटक के रूप में अभिनय द्वारा प्रस्तुत कराया था ।

विमर्श

सबसे पहला प्रश्न उठता है कि भारतीय धर्मों के विकास में इस जाहरपीरी अनुष्ठान का क्या स्थान है ?

यदि इस समस्त लोकवार्ता का विश्लेषण किया जाय तो विदित होगा कि

(अ) (१) गुरु गुग्गा एक योद्धा अथवा वीर हैं ।
(२) वे ऐतिहासिक पुरुष हैं ।
(३) उनकी अकाल मृत्यु हुई है ।

(आ) वे जाहरपीर कहलाते हैं ।

(इ) उनकी लोकवार्ता का संबंध गाथा से है । गाथ उनकी पूजा के माध्यम हैं ।

(ई) वे सिर आने वाले या सिर बोलने वाले देवता हैं ।

(उ) सिर आने के अनुष्ठान में उनके जीवनवृत्त का वर्णन और गायन प्रधान माध्यम है । वर्णन के लिए 'पट-चित्र' रहता है ।

(ऊ) कोड़ा या चाबुक एक प्रधान उपादान है ।

(ए) गुग्गा का संबंध घोड़े से भी है जो उनके साथ पैदा हुआ ।

यहाँ दो प्रश्नों का संबंध 'नाम' से भी है । 'गुरु गुग्गा' अथवा गोगापीर और जाहरपीर ऐसे नाम क्यों ? लोकवार्ता न नाम साम्य से एक व्युत्पत्ति बताती है ।

गुरु गोरखनाथ की सेवा की बाछल ने फल देने का अवसर आया तो उसकी बहन काछल गुरु गोरख के पास पहुँची । गुरु गोरखनाथ ने उसे फल दे डाले । बाद में पहुँची बाछल । अब गुरुजी के पास क्या था ? जो देना था दे दे चुके । पर सेवाएँ तो बाछल ने की थीं । फलतः गुरुजी ने झोले में से 'गूगल' निकाल के दी । गूगल से पैदा होने के कारण ही गुरु गुग्गा नाम पड़ा । गूगल' गूगल गूगा अथवा गोगा भी । ऐसे विश्वासों के आधार पर ऐसे नाम रखे जाते हैं इसमें संदेह नहीं । यह गुग्गा भी इसी नियम से रखा गया है । किन्तु आज ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता । नाम निश्चय ही कुछ अद्भुत है और अभी अनुसंधान चाहता है । गोगा की कहानी में गौओं से भी उसका संबंध है उस संबंध से गोपा गौओं की रखवाली करनेवाला भी हो सकता है ।[१] किन्तु यह नाम जितना लौकिक विदित होता है उतना सरल नहीं ।

इसी के साथ इसके आगे प्रश्न आता है फिर यह "जाहरपीर" क्यों कहलाये ।[११]

---

१ डा॰ वासुदेवशरण अग्रवाल के परामर्श पर श्री अम्बाप्रसाद सुमन ने लिखा है 'जाहरपीर' को गूगापीर (सं॰ गोग्रह-गोग्गह-गोगा — यह मध्यकालीन नाम था । जो लोग गायों की रक्षा के लिए मरते मरते प्राण दे देते थे वे गोगा कहाते थे) भी कहते हैं । 'पीर शब्द 'वीर' शब्द का चूलिका पैशाची रूप विदित होता है । डा॰ रांगेय राघव ने इस शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए लिखा है
'यदि गूगा 'गूगल' का अपभ्रंश है तो'

११ ईलियट ने लिखा है कि मराठे इन्हें जाहिरपीर कहते हैं [Mahrattas call him Zahir Pir' —M. H. F. R. of N. W. Pr. पृ॰ सं॰ (२५२)

'वीर'[12] शब्द का अर्थ बुजुर्ग या गुरू होता है, अत "गुरू" को पीर नाम दिया गया। यह ठीक ही है। पर, यह 'जाहर' क्या है ? समस्त कथा में इस "जाहर" शब्द का रहस्य नही खुलता। 'जाहर" यदि 'जाहिर' का ही दूसरा रूप है तब तो 'प्रत्यक्ष' या प्रकट अर्थ हो सकता है। तब "जाहरपीर" का अर्थ होगा, ऐसा गुरू जो अपने गुरुत्व को प्रकट दिखा रहा हो। कोई कोई जाहर को 'जहर' भी कहते हैं। जहर अथवा विष से सम्बन्ध रखने वाला गुरू। गुरू गुग्गा का सबध सर्पों से माना जाता है। क्रुक्स ने उसे सर्पों का देवता माना है। गुरू गुग्गा की प्राय प्रत्येक वार्त्ता में यह उल्लेख है कि उसने माता के पेट में से ही सर्पों को विवश किया था कि ये उसकी माँ के बैलो को डस लें, जिससे मा अपने मायके न जा सके। तब जाहरपीर का अर्थ हो सकता है जहर वाले सर्पों से सबध रखने वाला गुरू। किन्तु ये सभी बातें अधकार में टटोलने के समान प्रतीत होती हैं।[13] मूल कथा में 'जाहरपीर' का रहस्य नही खुलता। इस शब्द का उसमें अर्थद्योतक प्रयोग तक नही हुआ। 'पीर' शब्द धार्मिक क्षेत्र में विविध पीरो की परपरा की ओर सकेत करता है। उधर "जाहरपीर" का सबध नाथ सम्प्रदाय से है। आज तक "नाथ" लोग ही इसे अपनाये हुए हैं। प्रत्येक कथा में गुरू गोरखनाथ अवश्य आते हैं। इससे इसका सबध गोरखपथी नाथ-सम्प्रदाय से होना चाहिये।

नाथ सम्प्रदाय में एक "जाफरपीरी" सम्प्रदाय का उल्लेख मिलता है। [देखिये—नाथ-सम्प्रदाय, लेखक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी] जाफर का जाहिर या जाहर होना असभव नही है। या तो यह "जाफरपीर" ही "जाहरपीर" है या "गुरू गुग्गा" "जाफरपीर" के सम्प्रदाय के प्रसिद्ध पीर हैं। पीर के सबध में योगियो में जो रिवाज प्रचलित है उनकी ओर ध्यान जाता है।[14] इनसे भी यह सिद्ध होता है कि 'पीर' का

१२ पीर शब्द वीर से उत्पन्न माना जाय तो प्रश्न यह आता है कि वह 'गुरू' का पर्यायवाची कैसे हुआ ? योगियो के सबध में डा० रागेय राघव न अपने प्रबध 'गोरखनाथ' में बताया है कि "योगियों में श्राद्ध नही होता। बरसी होती है। बरसी पर सात गद्दिया बनायी जाती है जो १ पीर, २ जोगिनी, ३ सारूय, ४ वीर ५ धन्दारी (गोरखनाथ के रसोइये) ६ गोरखनाथ और ७ नेक के लिए होती है। पीर की गद्दी को सोने चादी के सिक्के और गाय दी जाती है, वीर को ताबा आदि [गोरखनाथ (प्रबन्ध) टकित प्रति पृ० ३५६।] यहा पीर और वीर दोनों शब्द अलग अलग अर्थ में प्रयुक्त हुए है।

१३ प० झावरमल्ल शर्मा ने एक पाद-टिप्पणी में लिखा है—

"अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अन्यतम आदि कार्यकर्ता प्रख्यात प० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पचानन का अनुमान है कि गोगाजी चौहान को जो मुसलमान जाहिरपीर कहने लग गये, इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने गोगाजी के "गो" और "गाजी' टुकडे कर लिए। और "गो" के साथ "गाजी का योग देखकर अपने विश्वासानुसार पीर कहने लग गये। जाहिर का अर्थ तो "प्रकट" या प्रकाश है, किन्तु यहा जाहिरपीर का मतलब जौहर या जुझार मालूम होता है। (शोध पत्रिका भाग १, अक ३, 'गोगा चौहान पर एक दृष्टि'।) यह भी एक अनुमान ही है।

संबंध किसी न किसी रूप में नाग से अवश्य है। क्योंकि बरसी पर केवल पीर को ही नाग दी जाती है।

नाग अथवा सर्प-पूजा और गुरु गुग्गा :

गुरु गुग्गा का संबंध नागों या सर्पों से माना जाता है। इसे सर्पों का देवता भी कहा गया है। प्लूटार्क ने लिखा है कि 'पुराने जमाने के मनुष्य वीरों से सांप का संबंध विशेष दिखाते थे। अन्य पशुओं से उतना नहीं।'[14] वीरों का सांपों से किसी न किसी प्रकार का संबंध प्राचीन काल से ही चला आता है। ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में आगे लिखा है कि —

'सालमिस के युद्ध में जहाजों में एक सर्प प्रकट हुआ था उसे वीर साइक्रीयस माना गया था। ये वीर किसी पाखंड (cult) की वस्तु हो जाते हैं या रोग निवारक स्थानीय दई-देवता बन जाते हैं। इनकी समाधि के पास से जब लोग निकलते हैं तब आतंकित रहते हैं अथवा इनकी समाधि पर लोग भविष्य जानने या मानताएँ करने जाते हैं। (एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका)

इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नाग या सर्प का वीर-पूजा से घनिष्ठ संबंध है। किन्तु नागपूजा का इतिहास बहुत लम्बा और बहुत पुराना है। यह जानना आवश्यक है कि नागपूजा का कौन-सा रूप जाहरपीर गुरु गुग्गा से संयुक्त हुआ और क्यों!

गुरु गुग्गा का सर्पों से संबंध मानने का आधार यह है —

१ जैसा बीकानेर गजेटियर में लिखा है कि गुग्गा को सर्पदंश से बचाने वाला माना जाता है।[15] गोगामेड़ी गांव में जहाँ गोगामेड़ी का मेला होता है गोगाजी की समाधि है। इसकी जाति वाले से सर्प कभी नहीं काटता।[16]

२ मथुरा के भट्टनाथ वाले जाहरपीर के गीत में ये पंक्तियां आती हैं

'जाहर को पैंड में स्यांपु लहरिया लेइ
पानी भैला डसि लए वासा ऐ दर्शन देइ

इन गीत के अन्तर्गत ही यह कथा है कि जब बाछल घर से निकाल दी गयी तो वह अपने मायके के लिए चली। मार्ग में गाड़ी रुकी। गुग्गा पेट में थे। उन्होंने सोचा कि यदि मेरी मां ननसाल पहुँच गयी और वहाँ मैं उत्पन्न हुआ तो मेरा नाम "निगुर्रा" पड़ जायगा। गुग्गा को मां का ननसाल जाना पसन्द नहीं आया। वह पक्षि के रूप में पाताल में वासुकि के पास पहुँचा और उनसे कहा कि जाकर मेरी मां की गाड़ी के बैलों को डस लो। सर्पों को उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ा।

---

१४ 'The men of old time as Plutarch observed associated the snake most of all beasts with heroes (Enc. Brit.)

१५. राजपूताना गजटियर खंड तृतीय ए,पृ २२१

१६ " " पृ १८७

इस 'अभिप्राय' में कही कही कुछ हेर फेर भले ही हो पर यह मिलता सभी में है ।

३ कही कही 'नागपचमी' को भी गुरू गुग्गा का ही त्योहार माना जाता है ।

४ गुजरात की लोकवार्त्ता में उल्लेख है कि गूगा के साथ ही एक साँप भी उसकी माता के गर्भ से पैदा हुआ था । दोनो में बहुत प्रेम था । बाद मे यह साँप गूगा को आडे समय मे सहायता करता रहा था ।

नाग-पूजा में साम्प्रदायिक पापड की स्थापना होने तक हमें निम्न विकास-क्रम विदित होता है —

अ	ऐनिमिस्टिक अवस्था [17]	१ किसी जाति का 'नाग' टोटम से सबध होना ।
		२ जाति और टोटेम का एक नामकरण ।
		३ वह जाति 'टोटम' की पूजा करने लगी ।
आ	माइथिलाजिकल (पौराणिक अवस्था)	४ उस जाति में पूज्य टोटेम विषयक गाथाओ का निर्माण
इ	सिद्ध अवस्था	५ 'टोटम' को पूजा के लिए प्राप्त करन के प्रयत्न, तत्सबधी सिद्धियाँ ।

---

१७ ओ' मल्ले (O' Malley) ने 'पापुलर हिन्दुइज्म' में एक स्थान पर लिखा है —"इस प्रकार उदय होती है ऐनिमिज्म (Animism) अर्थात् यह विश्वास कि सभी वस्तुओ में आत्मा है, अथवा और विस्तृत अर्थ में, ऐसी प्रत्येक वस्तु जो किसी न किसी रूप में मनुष्य को प्रभावित करने की कुछ भी कार्यक्षमता रखती है, रूह (Sptrit) से तथा मनुष्य जैसी इच्छा-शक्ति (will) से युक्त होती है । फलत विश्व को उन आत्माओ से परिपूर्ण माना जाता है जो मानव को प्रभावित करने की शक्ति रखती है । इसका अनिवार्य परिणाम होता है कर्तव्यो का असाधारण वैविध्य, जिनका अच्छा सार मोनियर विलियम्स ने दिया है कि चट्टानें, लाट तथा पाषाण-खड, पेड,पुष्कर तथा नदिया, उसके व्यवसाय के औजार, उपयोगी पशु, भयावह सरीसृप, मनुष्य जो अपने असाधारण गुणो के लिए विख्यात हो चुके है, महान शौर्य, पवित्रता, गुण या दुर्गुण के लिए भी, अच्छे या बुरे दैत्य (demon), भूत और पिशाच, मृतपूर्वजो की आत्माए, अर्द्ध देव, प्रत्येक ही, नही सभी के सभी, दैवी समादर या पूजा में अपना अपना भाग रखते है ।" ए० सी० टरनर ने कुमायू की जातियो का विवरण देत हुए डोमो के धर्म पर प्रकाश डाला है । डोमो का धर्म ऐनिमिस्टिक और दैत्य पूजापरक (demonistic) है । "अब भी डोमो के अपने देवता और मदिर हैं और अलमोडा में इनके देवता हैं भोलानाथ, गगाराम, हरु, श्याम, ग्वाल, निरकार, आदि । इनमें से कुछ तो ऐसे मनुष्य थे जिन्होंने घोर पाप कृत्य किये थे, इनके भूत की पूजा करनी पडती है, ऐसे भी हैं जिन्हें भयानक आघात मिला, या जो मार डाले गये, ये लोगो के सिर आ जाते हैं । डोमो में जगारिया (स्याने) यह बताते हैं कि कौन सा देवता सिर आया है । गाना और नाचना होता है, भेंट चढ़ती है, देवता या देवताओ की आत्मा जगारिया के सिर आती है, और वह तब निदान और प्रतिकार बताता है ।"

६ साम्प्रदायिक स्थिति — ६ विशेष सम्प्रदाय अथवा पापंथ के रूप में स्थिति

७ ह्रास — ७ सम्प्रदाय का ह्रास अन्य पापंथो से संबंध

८ और सर्प से रक्षा की चिकित्सा का प्राधान्य पापंथ के सम्प्रदाय रूप का अभाव।

नागपूजा के इस विकास-क्रम मे 'गुरु गुग्गा' के पापंथ का आरंभ 'ह्रास' काल मे हुआ माना जायगा। अत निश्चय ही गुरु गुग्गा का सर्पों या नागो से कोई मौलिक संबंध नही। यह संबंध उसे संयोग से प्राप्त हुआ है।

'संयोग' किस प्रकार घटित हुआ होगा। इसके संबंध मे निम्न विकल्प हो सकते है —

१ गुग्गा का जन्म भादों मे हुआ। इसमे 'नागपूजा' का माहात्म्य है।

२ नागो से आजीविका करनेवाले समुदाय नाथ सम्प्रदाय मे सम्मिलित हुए और उन्होने ही 'गुग्गापीर' को अपना लिया।

३ वह स्थान जहाँ गुग्गा ने समाधि ली पुराना नाग-पूजा का स्थल हो या नागो से संबंधित किसी सिद्ध आदि से संबंधित हो।

४ अथवा ऐसे सिद्धो-पीरो से सामान्यत यह भावना उत्पन्न ही हो कि उनके प्रभाव से नाग या सर्प का विष काम नही करता।

मुझे ऐसा विदित होता है कि ये सभी संयोग के कारण इस संबंध में प्रस्तुत रहे हैं।

(१) गुग्गा का जन्म भादो में नवमी को हुआ यह प्रसिद्ध है। यह नवमी गोगा नवमी कही जाती है। इस दिन सर्प के रूप में गोगा की पूजा होती है। या कही कही नागपंचमी को गोगा या गूगा पंचमी भी कहा जाता है। इस तिथि के एकीकरण से और गुग्गा को सर्पों को वश करने वाली लोकवार्ता से गुग्गा और सर्पों का संबंध सिद्ध हुआ होगा।

(२) संपेरे भी कभी नाथ-सम्प्रदाय के अन्तर्गत न आये भले ही न हो। वे जोगी तो विदित होते ही है। संपेरो के उद्भव के संबंध में एक लोकवार्ता जाटों में प्रचलित है—

'गुरु गोरखनाथ अपने १४ चेलो के साथ कामरूं पहुँचे। वहाँ शहर के बाहर एक स्थान पर उन्होने अपने डेरे तम्बू लगा दिये। सब चेलो में शिरोमणि थे मछंदरनाथ। मछन्दरनाथ के अतिरिक्त समस्त चेलो को गोरखनाथ जी ने भिक्षा के लिए नगर में भेजा। सभी जब नगर में इधर उधर भिक्षार्थ गए तो वहाँ की स्त्रियों ने जादू कर टोने मार कर, किसी को भेड़ा बना लिया किसी को तोता किसी को कुत्ता बैल। गोरखनाथ ने बहुत प्रतीक्षा की। बहुत देर हो जाने पर भी कोई शिष्य लौटता नही दिखायी पड़ा। तब गोरखनाथ ने अपने बीन में से जालनाथ को निकाला। जालनाथ ने कामरूं के सभी जादू का पता खोज लिया। अपने डेरे के पास जो कुआँ

था उसमें ही रहने दिया। कामरूं की स्त्रियां जल लेने उसी कुए पर आयी, तो सोख-नाथ ने उन्हें गदहिया बना कर एक पास की गुफा में बंद कर दिया। अब कामरूं में शोर मचा। गोरखनाथ ने कहा—हमारे चेलों को तुम लोग मुक्त करदो तो तुम्हारी स्त्रियां भी मुक्त हो जायगी। पुरुषों ने घरों में बंद तोतों मैंनो के गले के बंधो को तोड डाला, गोरखनाथ के शिष्य अपना अपना रूप पाकर गुरू के पास आगये। औघड-नाथ रह गये। वे एक तेली के यहां बैल बने पाट चला रहे थे। गोरख ने बताया तो लोगों ने उन्हें भी मुक्त किया। तब गोरखनाथ ने सोखनाथ से कहा कि अब स्त्रियों को मुक्त कर दो। सोखनाथ ने सबको तो मुक्त कर दिया, पर वह एक धोबिन पर रीझ गया, उसे नहीं किया। उसने गुरू से कह दिया "भले ही मुझे 'भेख' के बाहर कर दीजिये पर मैं इसे नहीं दूंगा। गुरूजी ने धोबी को समझा दिया और सोखनाथ को शाप दिया कि तुम जंगलों में रहोगे और सांप खिला खिला कर अपनी जीविका चलाओगे। इन्हीं सोखनाथ की परंपरा में संपेरे हैं।"[१८]

इससे यह विदित होता है कि संपेरे कभी पूरी तरह गोरख सम्प्रदायानुयायी थे। गोरखनाथ ने कितने ही पंथों को अपने क्षेत्र में से बहिष्कृत कर दिया था। संपेरे उन्हीं में से एक हैं। इस प्रकार सांपों का गोरख-सम्प्रदाय से अप्रत्यक्ष संबंध तो विदित होता ही है। गोरखनाथ सिद्ध थे, और उनकी आन मंत्रों में विद्यमान है*। सांपों को कीलने में अथवा उनका विष उतारने में भी गोरख-विधि का उपयोग होता होगा। अतः गोरख-सम्प्रदाय से संबंधित होने के कारण गूगाजी में भी गुरू विषयक सिद्धि की स्थापना हुई होगी, और गूगाजी सांपों से संबंधित हो गये होंगे। भादों में जन्म लेने से जो मान्यता उन्हें मिली वह इस संयोग से और दृढ हुई होगी। यहां यह बात लिख देना आवश्यक है कि गोगाजी का संपेरों से भी कोई सीधा संबंध है, इसके प्रमाण नहीं मिले। नाथ सम्प्रदाय की संपेरोंवाली शाखा भी गूगाजी को मानती है यह विदित अभी तक नहीं हो सका है। गूगा को मानने वाले औघडनाथजी की परंपरा में ही प्रायः मिलते हैं। (३) गोगामेंडी अथवा गोगानों पशुओं के मेले के लिए प्रसिद्ध है, गोगाजी की कथा से यह विदित होता है कि माता से अपमानित होने पर वे गोरखनाथ जी से मिले। गोरखनाथ जी ने कहा कि यहां तुम अपना घोडा घुमाओ घोडे से बारह कोस का चक्कर लगाया, उसके बीच में धरती फट गयी, जिससे घोडे के साथ गोगाजी समा गये। बारह कोस का वह घेरा जंगल होगया। यह कथांश यह संकेत करता है कि जहां गोगाजी ने समाधि ली वहां गुरू गोरखनाथ विद्यमान थे। इसमें ऐतिहासिक गोरखनाथ का उल्लेख है या नहीं, यह तो दूसरी बात है, पर यह कथांश इतना तो अवश्य ही बताता है कि जहां गूगा ने समाधि ली वह स्थान गोरख-नाथ का स्थान था। वह अवश्य गूगाजी से पूर्व गोरख के नाम से प्रसिद्ध रहा होगा। वही प्रसिद्धि वहां गूगा को मिली। यह बात लक्ष्य करने योग्य है कि समाधि से कुछ ही दूर, संभवतः एक कोस पर, एक गोरखटीला आज भी गोगानों में विद्यमान है। इस

---

१८ सूखानाथ से प्राप्त। ये सिरोठी अछनेरा के हैं।

* देखिये—'भारतीय साहित्य' प्रथम अंक, 'मंत्र' शीर्षक लेख।

संभावना से गुग्गा का नागों से संबंध दृढ़तर किया होगा। और (४) इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि सिद्धों और नागों का एक विशेष प्रकार का संबंध लोकवार्त्ता मानती है। घर के व्यक्ति मृत्यु पाने पर सर्प-योनि में पितृ की स्थिति प्राप्त करते हैं। और घर में अपने प्रियजनों के बीच बने रहते हैं। जो व्यक्ति बहुत धन छोड़कर मरता है वह साँप बनकर उसकी रक्षा करता है। इस प्रकार सर्पयोनि पितृयोनि है अथवा प्रेत योनि है। गोगाजी मृत्यु के उपरान्त भी सिरियल से मिलते थे यह प्रेत की स्थिति है और इसके कारण उनका साँपों से संबंध परिकल्पित हुआ। (५) साँपों को भूमि-पुत्र माना जाता रहा है। भूमि गोरूप होती है। गौ की रक्षा में प्राण देने और भूमि में समा जाने के कारण भी गुग्गा को सर्पों से संबंधित माना गया होगा। भूमि में समाकर गोगाजी पाताल में गये होंगे। पाताल ही सर्प-लोक है क्योंकि वे वहीं के देवता हैं। सीता जब भूमि में समायी थी तो पृथ्वी माता सर्पों द्वारा वाहित सिंहासन पर बैठ कर पृथ्वी में से निकली थीं।

गुग्गा के संबंध में मिलनेवाली लोकवार्त्ताओं में सर्पों या नागों से एक संबंध तो ब्रज की कहानियों में आता ही है कि गुग्गा ने वासुकी को अपने चमत्कार से विवश किया कि वह मां को गायों के बैलों को डस ले। इसके अतिरिक्त भी साँपों से कई संबंध ब्रज से बाहरवाली कुछ कहानियों में हैं। गुग्गा जब विवाह के लिए गये तो मार्ग में सर्पों ने एक झील के ऊपर पुल बना दिया था। जिससे बरात पार उतर सके।[१८] दूसरी लहर में जो किसी-किसी वार्त्ता में गुग्गा की सन्तान मानी गयी है, वासुकी को वाजा व सर्पों ने कोट का घेरा डाल दिया था। लुधियाने में यह माना जाता है कि गुग्गा मूलतः नाग था पर एक सुंदरी से विवाह करने के लिए उसने मनुष्य रूप धारण किया संभवतः फिर नाग बन गया।[१९] यह भी कहीं माना जाता है कि बचपन में वह पालने में एक साँप का बच्चा खेलते देखा गया था। वासुकि नाग ने उसे सिरियल से विवाह करने में सहायता दी थी। राजा ने जब सिरियल का गुग्गा से विवाह करना अस्वीकार कर दिया तब बगराड़ में आकर गुग्गा ने बाँसुरी बजायी जिससे वासुकि नाग आया और उसने तातिग नाग को उसके साथ कर दिया। तातिग नाग ने सिरियल को डस लिया फिर सँपेरा बन कर राजा के पास पहुँचा और वचन लेकर कि राजा गुग्गा से सिरियल का विवाह कर देगा तातिग ने सिरियल का विष उतार दिया।[२१] पञ्जाब की कहानी में वासुकि नाग गुग्गा का प्रतियोगी था जिसे गुग्गा ने पराजय कर दिया था। कुल्लू की एक वार्त्ता में गुरुघर नागनी वासुकी नाग की पुत्री थी। गुजरात की लोकवार्त्ता में गुग्गा के साथ साथ ही उसकी मां के ही पेट से एक साँप भी पैदा हुआ था। इसी कारण उस महावीर को वह बहुत प्यार करता था। इस प्रकार लोकवार्त्ता ने गुग्गा और नाग के जिस संबंध की कल्पना की है वह ऊपर बताये गये कारणों से ही सिद्ध नहीं होती।

---

१८. Ind Ant XXXI p 51 quoted in Indian Serpent Lore
१९ Ludhiyana Gazetteer 1901 p 88.
२१ R C Temple Legends of the punjab—vol. I p 121ff

किन्तु इन सबसे भी अधिक जो सभावना इन लोकवार्त्ताओ की झाँकी से मिलती है वह यह है कि 'नाग पापड" भारत का एक मौलिक और प्राचीन, सभवत वेदो से भी प्राचीन पापड है। यह एक लोक-सप्रदाय था। जब बौद्धधर्म लोक-सप्रदाय के रूप में खडा हुआ तो उसने 'नाग सप्रदाय' को तो 'आत्मसात' करने की चेष्टा की, और इसके लिए एक विधि का उपयोग किया। उसने नागो से किसी न किसी प्रकार का सबध स्थापित कर लिया। अत नागो का बौद्ध-धर्म से घनिष्ठ सबध हो गया। बौद्ध-धर्म के उपरात नाथ सप्रदाय ने यही चेष्टा की, और बौद्ध-धर्म के अवशेष का नागो से जो सबध रहा, वह गोरखनाथ से जुडा, वही जाहरपीर या गोगाजी से होगया। जाहरपीर के वृत्त में कई बौद्ध अवशेष विद्यमान हैं —

१ भगवान बुद्ध की मा अपने मायके जा रही थी, बुद्ध मायके में नही पैदा हुए बीच में एक कुज में पैदा होगये। यह बात गूगा की कहानी में है। गूगा ने अपने नाना के घर जन्म लेना ठीक नही समझा, मायके के लिए बाछल चल पडी थी, पर बीच ही से लौटना पडा।

२ भगवान बुद्ध ने एक नाग को अपने तेज से वश में किया था[२२]। पैदा होने के पूर्व ही गूगा ने अपने तेज से वासुकि को परास्त किया और उसे अपना आदेश पालने के लिए विवश किया।

३ नागो ने भगवान बुद्ध के लिए पुल तैयार किया था।[२३] ऐसा ही पुल सर्पों ने एक झील के ऊपर गोगाजी और उनकी बरात के लिए किया था।[२४]

४ भगवान बुद्ध का घोडा उसी दिन उत्पन्न हुआ था जिस दिन भगवान बुद्ध हुए थे। इसी प्रकार गूगा और उसके घोडे नीला या जवाडिया का जन्म भी साथ-साथ हुआ था।

जे० पी० ऐच० वोगल, पी-ऐच० डी० ने अपनी पुस्तक "इडियन सर्पेंट लोर" में नाग-पूजा के मूल और महत्त्व पर सक्षेप में विचार करते हुए कई मतो का उल्लेख किया है, जिन्हें हम अत्यन्त सक्षेप में यहा देते हैं

---

२२ उरुविल्व के कश्यपो के यज्ञगृह में एक भयानक सर्प था जिसके तेज को अपने तेज से भगवान बुद्ध ने हर लिया था। तब उस सर्प को उन्होंने भिक्षा-पात्र में में डाल लिया था (महावस्तु, विनयपिटक, महावग्गा में 'इडियन सर्पेंट लोर' में उल्लेख।)

२३. दे० दिव्यवदान। तक ISL पृ० ११६

२४ इस सबध में वोगल महोदय की टिप्पणी सभिप्राय है —

'This and some other details of his story seem to be reminiscences of Buddist Lore, ISL p 264

१ मत	२ माननेवाले	३ साहित्य
१ नाग मूलतः सर्प नहीं थे। ये सर्पपूजक थे। ये उत्तरी भारत में बसे हुए थे और तूरानी भाषा की आदिम जाति के थे। इन्हें आर्यों ने आकर अपने आधीन किया। आर्य या द्रविड़ सर्पों की पूजा करने वाले नहीं थे।	जेम्स फरगुसन	ट्री एंड सर्पेंट वरशिप (१८६८)
२ नागों का संबंध उन दैत्य-सत्ताओं (demoniacal beings) से है जिनका सबसे अच्छा स्वरूप (were wolve) में प्रगट होता है। ये मनुष्य के रूप में भी दिखायी पड़ते हैं। इनका मूल वह भावना है जो पशुओं और मानवों में अविभाज्य अभेद मानती है इसी भावना के परिणाम स्वरूप 'नाग' देखने में आदमी लगते हैं जब कि हैं वे वस्तुतः सर्प। एक बौद्ध ग्रंथ के अनुसार उनका सर्प-स्वभाव दो अवसरों पर प्रकटित होता है यौन समागम तथा शयन में।	श्री ओल्डनबर्ग	Die Religion des Veda
३ नाग सारतः जल-आत्माएँ (water spirits) हैं। ये प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकरण हैं। साँपों की तरह भूमर्कों मारे बिजली चमकते हुए, वर्षा के कारण आकाश के नाग हुए, ये ही झीलों और तालाबों में पृथ्वी पर उतार लिये गये और अन्त में विषधर सर्पों से इनका एकीकरण होगया।	हेन्रिक कर्न	Over den Vermol-delykan oorsprong der Naga Verceringe Bijdr etc
४ नाग सूर्यवंशी एक जाति थी फनधारी नाग इसका टोटेम था। उत्तरी भारत में तक्षशिला इनका प्रधान नगर था। तक्षक उनका नायक था।	१ डा सी एफ ओल्डम २ ई डब्ल्यू हॉपकिन्स	1 The Sun and the Serpent (London. 1905) १ ऐपिक माइथालोजी
५ यह मान्यता कि मृत राजा प्राचीन काल में सर्प-योनि में जन्म लेते थे इसी कारण उनकी पूजा प्रचलित हुई।		

१ मत	२ माननेवाले	३ साहित्य
६ नागपूजा का मूल जटिल है। किसी एक बात को उसका कारण नही माना जा सकता — १. सर्प की पशु रूप में पूजा है। २ सर्प केल हरने के साम्य से जल, स्रोत तथा नदी के देवी-देवताओ का प्रतीक भी यह होगया है। ३. इसमें वैदिक 'अहि' की जैसी भावना का भी आरोप हुआ है— जिससे तूफान और प्रकाश के अधकार से होनेवाले सघर्ष विषयक महान गाथा (myth) का सवध भी दिखायी पडता है।		
७ नागपूजा के आरभ का पहला वीज वस्तुत सर्पके भयसे ही उगा। तव उनके विशिष्ट स्वभाव के कारण विविध कल्पित तत्त्व जुडे १ साँपो को पृथ्वी, अतरिक्ष और स्वर्ग में व्याप्त २ उनमें माना गया। विलक्षण शक्तियो की उद्भावना की गयी।		

(अ) वर्षा में विलो में पानी भरने से इनके वाहर निकलने से उद्भावना कि सर्पो में वर्षा लाने की चमत्कारिक शक्ति है।

(आ) उसके चलने में आवाज न होने, से उद्भावना—नाम लेते ही प्रकट होते है। अत इनका नाम लेना ही वर्जित होगया।

(इ) सर्प दो जीभें निकालता है इससे उद्भावना कि सर्प हवा पीकर जीता है। हवा खाकर रहना तपस्वी का चरम उत्कर्ष, अत सर्प तपस्वी का आदर्श।

(ई) केंचुली उतारना देखकर उद्भावना कि इस कचुली में आख से लगा लेने पर आदमी अदृश्य हो सकता है।[२५] केंचुली में चमत्कारक गुण माना गया है।[२६] इसीसे सर्पो को अमर माना गया कि वे केंचुली उतारकर नया शरीर धारण करते है और अमर हो जाते है।[२७]

(उ) सर्प काटने से तुरत मृत्यु होने के कारण उद्भावना कि सर्पो में वह जादुई

---

२५ सर्प में (आ) गुण के कारण और केंचली पडी मिलने के कारण यह धारणा वनी होगी।

२६ अथर्ववेद

२७ ताड्य महाब्राह्मण (२५, १५)

सक्रिय होती है जिसे तमस कहते हैं। उनके नथुनों से भाप की लपटें निकलती हैं। साँप अपनी सांस से ही प्राण ले सकता है।

(ऊ) खोल आदि के निकट मिलने से और बिलों में प्रवेश करने और निकलने से उद्भावना कि ये पाताल निवासी हैं।

(ए) जंगलों तथा घास-पातों में घूमने के कारण उद्भावना कि ये औषधियों के ज्ञाता हैं।

(ऐ) सर्प का प्रादुर्भाव वर्षा में अतः उद्भावना कि ये उर्वरत्व के देव हैं।

(ओ) हवा खाकर रहने से तपस्वी भाव का फल (औ) से मिल कर ये संतान प्रदान कर सकते हैं।

(अं) घरों में दिखलायी पड़ते हैं उद्भावना कि ये घर के देवता हैं। इसी का विस्तार कि ये पुरखे हैं जो इस योनि में आये हैं।

(अः) घरों में जमीन में प्राचीन लोग धन गाड़ते थे। जिसा से सर्प निकलता देख उद्भावना कि पुरखे धन की रक्षा के लिए सर्प बने हैं।

(क) ऐसे ही अद्भुत कर्मों के कारण नागों को देवता माना गया। उन्हें रूप बदलने वाला भी माना गया। रूप बदलने में मनुष्य रूप को प्रधानता मिली।

इस समस्त ऊहा-पोह के उपरांत भी यह प्रश्न उठता है कि नाग और नाग जाति म सम्बन्ध कैसे हुआ। 'नाग' पशु का नाम है या जाति का नाम है, या दोनों की अलग-अलग उद्भावना है। किन्तु इससे भी अधिक महत्त्व की समस्या यह है कि नाग और नाग जाति का सम्बन्ध कब और कैसे हुआ? यह सम्बन्ध आरंभ में संयोग से हुआ होगा। जहाँ नाग लोग रहते होंगे वहीं सर्प भी विशेष होंगे। इनके प्रति उनका आकर्षण हुआ होगा उनका ज्ञान प्राप्त किया होगा उन पर अधिकार किया होगा और उनसे अपना धार्मिक सम्बन्ध जोड़ा होगा। तब नाग और नाग-जाति का सम्बन्ध टोटमवादी जाति के जैसा ही बनेगा। इस सम्बन्ध के स्थिर हो जाने के उपरांत और नाम पड़ जाने पर उक्त कारणों से 'नाग' लोग उसकी पूजा में प्रवृत्त हुए होंगे और उसके आधार पर उन्होंने अपनी जाति का पायक स्थापित किया होगा। बौद्ध-पूर्व युग में भारत के सामान्य जन म नाग पायक का बहुत प्रचार था जैसा ऊपर बताया जा चुका है। डब्ल्यू डब्ल्यू हण्टर, सी आई ई ऐल ऐल डी ने 'दि इण्डियन एम्पायर' (लन्दन १८८२) में (पृ १७१—१७२) बताया है कि 'बौद्धधर्म ने आर्य-पूर्व की इन जातियों को भारतीय तन्त्र (Indian Polity) में घुला-मिला लेने में बहुत प्रयत्न किया था। यूनानी-बाख्त्रिक तथा सिथियन आक्रमणों (३२७ ई पू० से ५४४ ई) के दीर्घ संघर्ष-युग में भारतीय आदिम जातियों ने पूर्वापर अधिक महत्त्व प्राप्त किया होगा चाहे शत्रु के रूप में चाहे मित्र के रूप में। इसके बाद ये जातियाँ पूर्व में उत्तरी भारत के अच्छे क्षेत्रों में बिखरी मिलती हैं। अब भी ऐसे ध्वस्त नगरों और किलों को हम मध्य और उत्तरी भारत में विद्यमान पाते हैं जिनका सम्बन्ध इन आदिम जाति के लोगों

से स्थानीय वार्त्ता में वताया जाता है , ये जातियां इस क्षेत्र का कभी शासन करती थी। जनगणना के फलस्वरूप इनके अस्तित्व की और पुष्टि हुई है। इसीमें तक्षको का उल्लेख हटर महोदय ने किया है—इसी सवध में वे कहते हैं 'ये सिदियन तक्षक ही वस्तुत महान् नागजाति का स्रोत माने जाते हैं—ये तक्षक या नाग सस्कृत-साहित्य में और कला में वहुत प्रमुख स्थान रखते हैं । आज भी इन्ही के नाम की नाग जाति विद्यमान है। सस्कृत में तक्षक और नाग दोनो का अर्थ सांप होता है अथवा सपुच्छ दानव (monster)। तक्षको को सिदियन टक्को से सवधित माना जाता है, अत प्रमाणाभाव में अनुमान से एलखान के दूसरे पुत्र 'नगम' से इन नागो की उत्पत्ति वतायी जाती है, जो सदिग्ध है । ये दोनो नाम सस्कृत के लेखको के द्वारा विविध अनार्य जातियो के लिए उपयोग में लाये गये हैं। महाभारत में पाडवो ने खाडव वन के तक्षक को जलाया था । तक्षक तथा नाग वृक्षो और सांपो के पूजक थे। इन जातियो के रिवाजो और देवताओ ने भारतीय वस्तु तथा चित्र-कला को वहुत अधिक प्रभावित किया है। चीनी भाषा में प्राचीन भारत की नाग-भूगोल का पूरा विवरण दिया हुआ है। नाग-राज्य वहुत से थे और शक्तिशाली थे। बौद्धधर्म ने अनेक नाग राजाओ को अनुयायी वनाया था । इस नाग-सप्रदाय को च्युत करके बौद्ध धर्म ने बुद्ध के समय में ही नाग-सप्रदाय के अनुयायी नागो को अपने वश में किया, और अपना अनुयायी वनाया। भगवान बुद्ध का नागो से घनिष्ठ सवध हो गया, और बौद्ध धर्म का जो रूप लोक-क्षेत्र से सवधित रहा, उस रूप में आगे की ऐतिहासिक गति से बौद्ध सिद्धो में उसने परिणति पायी और तव नाथो से उसका गठवधन हुआ । उनके माध्यम से गुरु गुग्गा को नाग-सवध प्राप्त हुआ। और यह सवध उन कारणो से विशेष रूप से पुष्ट हुआ जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

यक्ष और गुरू गुग्गा

गुरु गुग्गा का नागो से सवध तो लोक-वार्त्ता में भी प्रसिद्ध है। उन्हें नाग-देवता ही माना जाता है। किन्तु गोगाजी विषयक अनुष्ठानो का समाधान इस से नही होता इसीलिए यहीं हमें एक और सभावना पर विचार करना है। क्या 'गूगा' का यक्ष-पूजा से कोई सवध हो सकता है। बौद्ध युग में, नही, बुद्ध के समय में ही, यक्ष भी उतने ही प्रवल थे, जितने नाग। यक्षो और नागो से सवध वाली बौद्ध कथाएँ प्राय एक-सी ही प्रतीत होती हैं। यक्षो को भगवान बुद्ध ने जिस विधि से वश में किया, कुछ वसी ही विधि नागो के लिए भी रही। यहा तक कि यक्षो और नागो के प्रमुख नामो में भी वहुत साम्य मिलता है। यक्षो के स्थानो पर भी बुद्ध और बौद्धो ने युक्ति से अधिकार किया था। अत यक्ष-पक्ष का लोक में उस आधार पर कुछ न कुछ प्रभाव रहना ही चाहिये जो बौद्ध धर्म के विकास अथवा ह्रास की कड़ी के रूप में प्रस्तुत हो। आज भी लोकवार्त्ता में व्रज में 'यक्ष' जखया के नाम से पूजा जाता है। साधारणत 'यक्ष' पूजा 'वीर' के नाम से होती है। अनेको वीरो के थान आज भी जहाँ तहा विखरे पडे हैं। (देखिये जनपद वर्ष १, अक ३, वैशाख सवत २०१०,

वीर-बरहा' नामक निबंध लेखक डा वासुदेव शरण अग्रवाल । तथा 'ब्रजभारती')। गुरु गुग्गा के पार्श्व में जिन बातो से यक्ष प्रभाव सूचित होता है व ये हैं —

१ गूगुल का महत्व ।
२ सिर मांगने की प्रक्रिया ।
३ नागो से संबंध ।
४ यक्ष-ध्वज ।
५ वाहन ।
६ यक्ष मंडल ।
७ वीर पूजा ।

१ यक्षों का संबंध गूगुल से है यह बात इससे सिद्ध है कि संस्कृत में गूगल का नाम ही यक्षधूप' है । गुरु गुग्गा का जन्म लोकवार्ता के अनुसार गूगुल से हुआ है । फल जो काछल से मागी थी बाबा गोरख की झोली में गूगुल ही था जो बाछल को मिला । इस प्रकार गुग्गा' का जन्म ही 'यक्ष योनि' से लोकवार्ता के साथ संबद्ध हो जाता है । परा-प्राकृतिक जन्म संबंध में 'दैवी फल' का अभिप्राय (कथानक रूढ़ि) बहुत प्रचलित है । कथासरित्सागर में महारानी वासवदत्ता ने पुत्र कामना से शिव का व्रत किया । शिव प्रसन्न हुए । उन्होंने वरदान दिया कि पुत्र होगा । एक रात को स्वप्न में एक जटाधारी ने आकर वासवदत्ता को एक फल दिया ।[२८]

इसी स्थल पर पेंजर महोदय ने टिप्पणी में बताया है कि 'आर्य' समाज तथा रिवाजो में परा-प्राकृतिक उत्पत्ति के समस्त प्रश्न पर 'दी लीजेण्ड ऑफ पर्सियस' खंड १ मे पृ ७१ से १८१ तक हार्टलैंड ने भली प्रकार विचार किया है।[२९] (वी शौविन (V Chauvin op cit, V P 43) के Conception extraordinaries शीर्षक भी देखिये ।)

परित्यागसेन उसकी धूर्त स्त्री और उसके दो बेटो की कहानी' में दोनो पत्नियो को दुर्गा से दो दैवी फल' मिलते हैं । यह कहानी Ocean of story V II P 136 में दी हुई है । अध्याय cxx में भावी सम्राट् विक्रमादित्य की मा को शिव ने सन्तान निमित्त एक फल दिया । यह फल कभी आम होता है ।[१] स्टोक्स में पृ ६१ पर लीची फल दिये गये हैं । अन्य कहानियो में 'अनार' दिया गया है ।

किन्तु गुग्गा के संबंध में 'टाड ने जौ का उल्लेख किया है और बाद में तथा टेम्पल ने पंजाबी गीतो में 'गूगल' आता है । ब्रज लोकवार्ता में यक्ष-पूजा जाख की जखैया' के रूप में होती है । जखैया पर घेंटे (सूअर के बच्चे) बलि दिये जाते

---

२८. Ocean of story V II P 136
२९ The Ocean of story Part I Appendix I P 203
१ Stokes Indian Fairy Tales, पृ ४ और Old Deccan Days पृ २५४ शास्त्री फोकलोर इन नार्दर्न इण्डिया पृ १४

है। घेंटो का हिन्दू समुदाय में भगियो और महतरो से ही विहित सबध है। अत भारतीय रिवाज में दूरान्वय से यक्ष या जखैया का पूजने वाला समुदाय कभी महतरो में परिज्ञात हुआ। गुरू गुग्गा के प्रति महतरो की भक्ति का एक जातीय कारण यह भी हो सकता है।

२ सिर आने की प्रक्रिया का सबध सामान्यत यक्षो से लगाया जाता है। यक्षो में कितनी ही प्रकार की शक्तिया मानी गयी हैं। ये चाहे जब, चाहे जैसा रूप बदल सकते हैं। ये अदृश्य हो सकते हैं। वस्तुत जैन साहित्य के विद्याधर और यक्ष एक ही विदित होते हैं। कथासरित्सागर में पेंजर ने बतलाया है कि यक्ष के अर्थ ही है, विद्या-शक्तियो का धारण करनेवाला (बीइग पजैस्ड आव मैजिकल पावर्स)[३१]। सिर आने की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाय तो विदित होगा कि सिर आने के दो रूप हैं। एक तो देवता सिर आता है। देवता सिर पर इसलिये बुलाया जाता है कि उससे होने वाले अन्य अनेक कष्टो से छुटकारा पाया जा सके और अभिलषित वस्तुओ का वरदान पाया जा सके। पीर अथवा देवी का सिर आना ऐसा ही होता है।

दूसरे प्रकार में खोरवाला सिर आता है। किसी को खोर हो जाने पर उस खोर करने वाले को अनुष्ठान द्वारा बुलाया जाता है, और उसे भगा देने की विधियाँ की जाती ह। भूत लग जाने या प्रेत लग जाने या मियाँ की खोर पर तो ये सिर आते ही हैं, साँप के काट लेने पर साँप भी सिर आता है। इस प्रकार के सिर आने का सबध 'डैविल डान्स' से है, जिसके सबध में यह कहा गया है कि

A form of exorcism, said to be allied to the Shamanism of Northern Asia, prevalent in Southern India and appearing also in Ceylon, Northern India, Tibet, etc It is usually employed to entice the demon from the body of a sick person into the body of the dancer Devil dancing is found in the demonic Bon cult of Tibet

Devil Dances and devil beating cerimonials found in various places in China may be a Lamaist importation Data is incomplete In Lamaist temples priests disguised as gods and devils attack each other in mock combat (R D J Standard Dictionary of folklore, legend)

वस्तुत 'गुरू गुग्गा' का प्रकार पहली कोटि का है। गुग्गा की खोर नही होती, यद्यपि जाहरपीर के गीत में आरभ में ही, जब तक उसने जन्म भी नही लिया, वह वासुकि, अपने नाना और बाबा के सिर चढा है, अपनी खोर की है। पर पाखड अथवा सम्प्रदाय के रूप में वह खोर करने वाला नही, पहले उसकी मनौती की जाती है, पूजा

---

३१ The Ocean of Story Part I, Appendix I, page 203

की जाती है तब वह सिर आता है, तब उसका आवेश होता है। अतः गुरु गुग्गा के जागरण में जो नाट्य होता है वह पारिभाषिक रूप से 'रेलिजस डान्स' नहीं माना जा सकता। फिर भी लोकवार्ता और नृविज्ञान के विद्वान इसके मूल के संबंध में जो मानते हैं वह सत्य ही विदित होता है।

देवता या किसी आत्मा के सिर आने की भावना का आरंभ शामानिज्म से विदित होता है। इस शामानिज्म का संबंध बौद्ध श्रमण से है। श्रमण का शमन शमन का शामन हुआ है। बौद्ध प्रचारक देश विदेशों में गये। ये प्रचारक ही नहीं थे समाज के सेवक भी थे। चिकित्सा से इनका किसी न किसी प्रकार का संबंध बैठता है। विदित होता है कि इन्होंने चिकित्सा की दो प्रणालियाँ अपनायीं १—औषधि आदि के द्वारा जिसके आधार पर बने चिकित्सा-शास्त्र में आज भी एक अंग थेराप्युटिक्स कहलाता है। इस शब्द में थेर 'स्थविर' का ही पर्याय है। २—सिद्ध की आत्मा का आवाहन कर, उसकी सहायता से चिकित्सा करना। यही पद्धति 'शामानिज्म' कही गयी। इसमें शमन' शब्द बौद्ध श्रमण है। श्रमणों ने बौद्ध धर्म से आत्मावतरण का सिद्धान्त प्राप्त किया था और किसी भी देश के आदि निवासियों के ऐनीमिस्टिक विश्वासों से उसका सामञ्जस्य करके देवता भूत-प्रेत के सिर आने के व्यवहार को ग्रहण किया होगा। ऐनिमिज्म+श्रमणीय बौद्धधर्म=शामनवाद।

गुरु गुग्गा के सम्प्रदाय के साथ यह शामनिज्म=शामनवाद तो है ही क्योंकि 'जागरण' होता है और गुग्गापीर सिर आता है। वह पुत्र प्रदान करता है अन्य अनेक रोगों को दूर करता है आदि। यह बौद्ध परंपरा+यक्ष परंपरा मिलकर सिद्ध परंपरा में परिणत हुई, नाथों के लौकिक स्तर पर गृहीत हुई और वहाँ से गुरु गुग्गा के अनुयायियों ने ली। इसके साथ 'पट' अथवा चंदोवे का विधान भी इस बौद्ध परंपरा की ओर संकेत करता है। बौद्धों में सिद्धों की जीवनी को प्रदर्शित करने वाले पट होते हैं जो धार्मिक अवसरों पर प्रदर्शित किये जाते हैं।

इस प्रकार सिर आने की प्रक्रिया के साथ निम्न तत्वों का घनिष्ठ संबंध है

१ चंदोवा
२ पताम्बर
३ जागरण
४ चाबुक
५ पतासन

चंदोवा

जाहरवीर के जागरण में एक चँदोवा पीछे दीवाल पर टाँगा जाता है उसके समक्ष जागरण के समस्त अनुष्ठान होते हैं। इस चंदोवे में गुरु गुग्गा के जीवन की कुछ घटनाएँ चित्रित रहती हैं। गुग्गा की कहानी की मुख्य-मुख्य घटनाएँ पहले कपड़े

में से अलग अलग काट ली जाती है, फिर उन्हें एक पट पर सी दिया जाता है। इसके मध्य में एक चक्र रहता है, तब शेष समस्त में घटनाओ के प्रतीक। यह चँदोवा
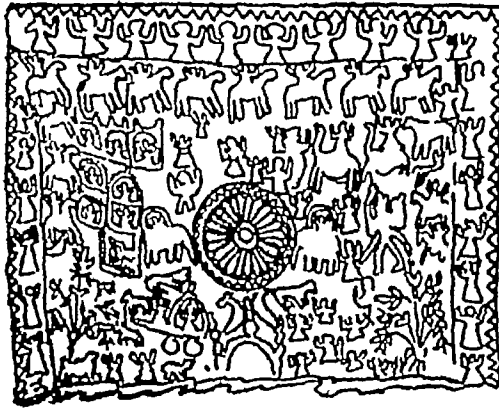
जाहरपीर चँदोवा लोहवन से

चित्र २

पट-पूजा की अत्यन्त प्राचीन प्रथा का रूपान्तर है। आरभ में ये पट पत्थर के बनते थे। जैनियो में 'आयाग पट' का कितना महत्त्व है, सभी जानते हैं। बौद्धो में भी पत्थरो पर बुद्ध भगवान के जीवन की घटनाए, जातक आदि की कथाएँ अकित की जाती रही हैं। जब बौद्ध लोग देश देशान्तरो में गये तो पत्थरो को ले नही जा सकते थे। तब सभवत कपडो का उपयोग किया गया होगा। राहुल जी तिब्बत से अनेको पट लाये थे जिनमें सिद्धो के चित्र हैं। ये पटना म्यूजियम में हैं। ऐसे पट तिब्बत के बौद्ध मदिरो में विशेष उत्सवो के अवसर पर टाँगे जाते थे। इन पटो पर चित्र अकित करने की कला भारत में पुरानी प्रतीत होती है। जैन भगवती सूत्र में १५,० में एक 'गोसाले मखलोपुत्ते' का उल्लेख है। 'माख' उन लोगो को कहते थे जो चित्र दिखा दिखा कर जीवन-यापन करते थे। मखली वे होगे जो ये चित्र बनाने का व्यवसाय करते होगे। पतजलि ने महाभाष्य (३,२, ३) में कृष्ण लीला के चित्रो के प्रदर्शन की बात लिखी है। विशाखदत्त के मुद्राराक्षस (अक १) में 'यमपट' दिखा-दिखाकर जीविका अर्जित करने वाले का उल्लेख है। यह विदित होता है कि इन पटो के दो रूप होगये एक तो अत्यन्त आनुष्ठानिक जो धर्म-कार्यों के अवसर पर काम में लाये जाते होगे। दूसरे सामान्य, जिन पर कृष्ण-लीला या नरक-स्वर्ग चित्रित करके सामान्य साम्प्रदायिक भावना के साथ लोगो को दिखा-दिखाकर जीविका उपार्जित की जाती होगी। बगाल की लोक-प्रवृत्तियो में ये दोनो प्रणालियाँ आज भी प्रचलित हैं। श्री आशुतोष भट्टाचार्य ने 'बाङ्लार लोकसाहित्य' नामक पुस्तक में लिखा है—

"वर्त्तमाने प्रधानत मेदिनीपुर, बाँकुडा, वीरभूम अर्थात् पश्चिम बगेर पश्चिम सीमान्त-वर्ती कयकटि जिलाये चित्रकर वा 'पटुया' बलिया परिचित एक श्रेणीर लोक वास

करे। किन्तु पौराणिक ओ लौकिक देवदेवीर चित्र अंकन ओ ताहादेर विवरण मुहे मुहे गान करिया ताहादेर जीविका निर्वाह हइया थाके। इहादेर व्यवहृत संगीत इहादे निजेदेरइ रचित-इहाइ पटुयार गान वा पटुआ संगीत नामे परिचित।

भट्टाचार्यजी ने पटुआ जाति का कुछ विस्तृत वर्णन देकर यह अभिमत प्रगट किया है कि यह अनार्य जाति है। इस संबंध में उन्होंने एक युक्ति यह भी दी है कि पटुआ जाति का एक वर्ग सँपेरा है। ये साँप खिलाते हैं। गीत गाकर पटो पर सर्प देवी मनसा के चित्र दिखाकर जीविका उपार्जित करते हैं।

पट-जीविका के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए भट्टाचार्य जी ने बाण भट्ट के हर्षचरित और विशाखदत्त के मुद्राराक्षस में इन्हें विद्यमान बताया है। अत पट जीविका की धारा छठी-सातवीं शताब्दी तक पहुँचाती है। उन्होंने बताया है कि इन पटों के मुख्य विषय तो हैं—

१ बेहुला-लखीन्दर-मनसा विषयक

२ रामायण विषयक

३ भागवत विषयक

इन मुख्य विषयो के अतिरिक्त कहीं-कहीं निम्न विषय भी पटो पर अंकित रहते हैं –

४ पार्वतीर शंखा परिधान

५ कमले कामिनी

६ गौराङ्ग-लीला

७ चोराई पट

८ साहेब पट

९ डाकातेर पट इत्यादि

यहीं भट्टाचार्यजी के एक निष्कर्ष का अवतरण उल्लेख करना आवश्यक है

"अथाने लक्ष्य करिवार कयेकटि विषय आछे—पटुआगण महाभारतेर काहिनी-विषयक कोन पट अंकन करे ना एवं मनसा-मंगलेर विषय रामायण एवं कृष्णलीलार तुल्य प्राधान्य लाभ करे। एइजन्याइ अनियाछि ये संभवत पटुआगन पूर्वे केवल मात्र साँपुडे वा बेदेर व्यवसायी छिल सुतरां सर्पेर अधिष्ठात्री देवी मनसारइ माहात्म्य ताहारा पटेर मध्ये दियाइ प्रचार करित। अतएव कालक्रमे पटेर मध्ये अन्यान्य विषय वस्तु गृहीत हयोआ सत्वेओ मौलिक विषयटि इहादेर मध्ये केवल मात्र ये रक्षा पाइयाछे ताइ नहे समान प्राधान्य रक्षा करिते पारियाछे।[१२]

इस विवरण से हमें पटुआ जाति पट तथा नाग या मनसा-मनस के पारस्परिक घनिष्ठ संबंध की सूचना मिलती है। इन पटो से धर्म-प्रचार का संबंध होते हुए भी ये जीविका निर्वाह के साधन रहे। द्वार-द्वार पर इन्हें दिखाकर इनके बहाने कुछ धार्मिक चर्चा और मनसा का प्रचार करते हुए अपनी जीविका के लिए कुछ भिक्षा या शुल्क पटुआ लोग पाते रहे।

---

१२ बाङ्लार लोकसाहित्य श्री आशुतोष भट्टाचार्यकृत १२३१

इन पटो के साथ एक और प्रकार के पट बगाल में प्रचलित है। लेखक के शब्दो में "तवे पूर्व वगे एक श्रेणीर पट देखिते पाओया जाय, ताहा गाजीर पट नामें परिचित । हाते गाजो वा मूसलमान धर्म प्रचारकदिगेर अलौकिक जीवन-वृत्तात ममूह चित्र रूपायित हइया थाके । धर्म प्रचारेर वाहन—साहित्य रस परिवेशक नहे ।[33]

यद्यपि दो प्रकार के पटो का उल्लेख किया गया है, पर दोनो के साथ किसी न किसी प्रकार की धार्मिकता अथवा पापड लगा हुआ है और दोनो के विपय-वस्तु का लक्ष्य और विधान प्राय एक ही है। किसी न किसी कथा को प्रस्तुत करने के लिए ही इन पटो का विधान हुआ है। उसके उपयोग भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में भिन्न-भिन्न हो गये हैं। मूल का सवध धर्म या पापड से भी होना चाहिये और जीवन-कथा से भी। धर्म या पापड के साथ मूल में टोने का भाव भी धार्मिक होगा। समस्त इतिहास पर दृष्टि डालने से विदित होता है कि इस प्रकार के जीवन-वृत्तो को धार्मिक भावना से अभिमडित करके प्रस्तुत करने की प्रणाली जैनो और बौद्धो में प्राय साथ-साथ मिलती है। नागो और यक्षो से इन दोनो का लौकिक धरातल पर घनिष्ठ सवध था, अत यह 'पट प्रणाली' इन सप्रदायो ने लोक से ही ली होगी। चित्राकन की कला का मौलिक सवध असुर-सस्कृति से विदित होता है, वाणासुर की कन्या 'उपा' चित्रकला में अत्यन्त निपुण थी। चित्रकला के विधान को असुरो तथा नागो ने पत्थर में शिल्प के लिए अपनाया होगा। वहा से बौद्धो और जैनो ने इसे ग्रहण किया, तव बौद्धो ने अपनी श्रमणीय और परिव्राजकीय आवश्यकताओ की दृष्टि से तथा भौगोलिक कारणो से भी 'वस्त्रो' पर उसे उतारा होगा। तव पतजलि के समय कृष्ण आदि के लिए भी इनका उपयोग होने लगा होगा। पटवा जाति के लोग ऐसे ही किसी बौद्ध वर्ग के होगे जो पट बनाते होगे। व्रज में भी इस जाहरपीर का पौरोहित्य पटवा-नाथो से सवधित है। व्रज म आज पटवो और सपेरो का सवध नही मिलता, पर जैसा वगाली क्षेत्र से हमें विदित हुआ है पटवो और सँपेरो का जातिगत सबध है। 'पट' के द्वारा सर्प की देवी (जो पश्चिम में देवता हो गया) का चित्र प्रस्तुत किया जाता होगा। वाद में 'पट' मात्र से सबध रखनेवाले पटवा होगये, और सर्पमात्र से सवध रखने वाले सँपेरे हो गये। उनके मुख्य विपय का सवध सर्प अथवा नाग से अवश्य वना रहा। वगाल में मनसा-'सर्पों की देवी' है यही पट से सबधित है, तो व्रज में गुग्गा या जाहरपीर भी सर्प के देवता हैं और चदोबा उनका वही पट है, जिस पर उनका जीवनवृत्त अकित है, और गीतो के द्वारा जिसे गाया जाता है।

श्री आशुतोष भट्टाचार्य जी ने बताया है कि —

"चित्र एव गीति उभये मिलियाइ एकटि अखड रसेर सृष्टि हय—एक हइते अन्नरके विच्छिन्न करा जायपना। सेइजन्य पटवार निजस्व सगीत व्यतीत केवल मात्र ताहार चित्रेर स्वतत्र कौन मूल्य नाइ, चित्र व्यतीत पटवा-सगीतेरओ कौन परिचय नाइ। ईहादेर एइ अखड योगायोगेर भितर दिया ईहादेर उभयेरइ रस ओ सौन्दर्य विकाशपाय।"[34]

३३ वही " " पृ० १५८
३४ वही, पुष्ठ १५३

चित्र से गीत साकार होता है, गीत से चित्र को अर्थ मिलता है। यह जीविका के लिए पट के उपयोग के साथ है। गुग्गा के पार्श्व में भी यह संबंध तो है। चंदोवा गुग्गा के जीवन-वृत्त को कुछ चित्रों के द्वारा अंकित करता है और जोगी उसी जीवन वृत्त को गाता है गीत में। पर यह संबंध 'पट-जीविका' व्यवसायी पटों की भांति उतना अनिवार्य नहीं। क्योंकि गुग्गा के जागरण में चित्र में कथा दिखाना अभीष्ट नहीं, न गीत के द्वारा पीर का चरित्र-वर्णन सुनाना ही अभीष्ट है। दोनों का संबंध दर्शकों या प्रेक्षकों से नहीं। दोनों का संबंध गुरु या पीर की पूजा, मनौती और अन्ततः उसके आह्वान के अनुष्ठान से है। अतः गीत भी इस अनुष्ठान का एक टोनेवाला अंग है। और चित्र भी उसी प्रकार एक टोनेवाला अंग है। दोनों अपने अपने निजी टोने विषयक गुण के कारण यहां आये हैं। टोने का यह गुण इन्हें आदिम प्रवृत्ति का अवशेष सिद्ध करता है। आदिम टोनेवाले चित्रों और गीतों से ही जीविका के पट-गीतों का आविर्भाव हुआ होगा। यहां से विभिन्न क्षेत्रों में इन्होंने स्थान प्राप्त किया होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'पट' का यक्षों से दूर का संबंध है। नागों से अवश्य निकट का संबंध है।

ध्वज

चंदोवे के साथ एक ध्वज भी होता है। यह मोरपंखों का मुख्यतः बना होता है और तरह तरह के पदार्थ झंडियाँ घंटियाँ इससे लटकी रहती हैं। इस ध्वज का संबंध यक्षों से हो सकता है क्योंकि औपपातिक सूत्र में यक्ष मंदिर का जो वर्णन दिया हुआ है उसमें ऐसे ध्वज का उल्लेख प्रतीत होता है। यक्ष-मंदिर का यह वर्णन कुमार स्वामी के अंग्रेजी अवतरण से रूपान्तर करके यहां दिया जाता है।

चम्पा के निकट पुन्नभद्द नामक चेइय (चैत्य) था। यह अत्यन्त प्राचीन था जिसका वर्णन पहले जमाने में वृद्ध यशस्वी धर्मी और सुविख्यात लोगों ने किया है। यहां छत्र थे, ध्वजाएं थीं और घंटियों की पताकाएँ थीं, पताकाओं पर पताकाएँ थीं जिससे यह सजा हुआ था और 'लोम हत्थ' थे।

चौड़े वर्तुलाकार शीर्ष झुके लहराये स्तवक थे सब मधु-गंध पुष्पों के पांच रंगों के पुष्पों के जो वहां बिखरे हुए थे। कालागुरु, कुंदरुक्क और तुरुक्क की प्रकम्पित धूमलहरियों की सुगंध से यह प्रसन्न था। यह चैत्य चारों ओर विशाल वन से आवृत था। इस वन के मध्य में एक चौड़ा स्थान था जहां यह बताया जाता है कि एक विशाल और सुन्दर अशोक वृक्ष था जिसके नीचे यक्ष का स्थान था।

इस वर्णन में और चीजों के साथ 'लोम हत्थ' का उल्लेख है। कुमार स्वामी महोदय ने लिखा है कि 'पाली में लोम हत्थ का अर्थ होता है 'रोंगटे खड़े होना (भय आश्चर्य अथवा आनंद के कारण)। हो सकता है कि यहां इस शब्द का भाव यही अभिप्राय हो कि देखने में भव्य। किसी वस्तु से अभिप्राय न हो अथवा इसका अभिप्राय बाल की पूंछ के चंवर से हो जो कि यक्ष-मन्दिर के लिए ठीक है।[19] पर

१९. 'यक्ष' से कुमार स्वामी पृ० १९, २।

वस्तुत मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें से कोई भी अभिप्राय ठीक नही, 'लोम हत्थ' मोरछली के बने इसी ध्वज को कहते हैं। मोरपख जब खडे लगाये जाते हैं तो लोम हत्थ की परिभाषा के अनुकूल ठहरते हैं।

जाहरपीर की समाधि भी यक्ष की भाँति एक विशाल जगल मे है, जिसके मध्य में गोगा का स्थान है। 'तवारीख राज श्री बीकानेर' में लिखा है कि गोगा जी के स्थान के इर्द गिर्द दूर तक जगल पडा हुआ है। जगल म खैरो के पेड हैं। खैरी का गोद उत्तम समझा जाता है। गोगा जी के बेहड (वणी) से कोई दरख्त (पेड) काट नही सकता।[३६] यक्ष का वृक्षो से घनिष्ठ सबध है। ये 'रुक्ख देवता' हैं। भगवान बुद्ध का भी वृक्ष से सबध है, गोगा का भी वृक्ष से सबध है। प० झावर मल्ल शर्मा ने एक और लोकवार्त्ता का उल्लेख किया है 'गाँव गाँव खेजडी गाँव गाँव गोगो' प्रत्येक गाँव में खेजडी का वृक्ष मिलेगा और उसके नीचे गोगा का थान।

जागरण

जागरण इस समस्त आयोजन का एक प्रधान अग है। वस्तुत जागरण स्वय कोई महत्त्व नही रखता। देवी-देवताओ की मानता में समय ही इतना लग जाता है कि रात्रि-जागरण करना ही पडता है। ऐसे सभी कृत्य प्राय रात्रि में ही होते हैं। जागरण का सबध केवल जाहरपीर से ही नही, देवी आदि अन्य देवताओ से भी है। कुछ अन्य सस्कारो में भी वह अनिवार्य है विवाह में 'रतजगा' अनिवार्य है। इस रतजगे में भी देवी मानता होती है। आज के विवाह विषयक रतजगे में तान्त्रिक प्रभाव की झलक स्पष्ट दिखायी पडती है। जागरण या रतजगा इसी सिद्धि-अनुष्ठान की दृष्टि से ऐसे अवसरो पर आवश्यक हो जाता है। डेविलडान्स में भी जागरण होता है। बगाल में 'जाग-गान' होते हैं जो जागरण के समय गाये जाते हैं। सोनाराय या सोना पीर नामक एक पीर का भी जागरण होता है।[३७] जागरण का कोई अनिवार्य नियमित सबध यक्ष पूजा से हो, ऐसा विदित नही होता। श्री आशुतोष भट्टाचार्य ने जाग-गान और जागरण का मूल युद्ध विग्रहोपरान्त वीर यश वर्णन की आदिम प्रणाली में माना है। आज न युद्ध-विग्रह रह गये हैं उस रूप में, न वैसा वीरस्तवन। उनका स्थान सन्तो-पीरो ने ले लिया है, वैष्णवो के प्रभाव में चैतन्य आदि भी इस जागरण-गान के विषय बन गये हैं। किन्तु प्रतीत होता है कि वीर-परपरा एक पहलू है। इसका दूसरा पहलू पीर-परपरा है। पीरो का सबध सिद्ध और सिद्धियो से है। इनमें जागरण का मूल होगा—किसी न किसी प्रकार की तान्त्रिक आवश्यकता। 'वीर-पीर' दोनों परपराओं के मिल जाने से तान्त्रिक और औत्सविक दोनो प्रणालियाँ आज के जागरण औ जाग-गान से सबधित हो गयी हैं।

---

३६ तवारीख राज श्री बीकानेर। प० झावर मल्ल शर्मा के निबध में उद्धृत।

३७ दे० बाङलार लोक साहित्य श्री आशुतोष भट्टाचार्य पृ० १७९

प्रश्न से उसका सवध ठीक-ठीक नही वैठता। यह स्पष्ट ही तान्त्रिक अवशेष विदित होता है। देवता के सिर आने का अभिप्राय है उस देवता का सिद्ध होना, प्रत्यक्ष होना। सिद्ध या तान्त्रिक जिस प्रकार सिद्ध हुए देवता से अपनी कामना-पूर्ति की याचना करता है, वैसी ही याचना यहाँ देवता से की जाती है।

इस विवेचन से स्पष्ट विदित होता है कि जाहरपीर या गुरू गुग्गा पर 'यक्ष-पूजा' का कुछ प्रभाव तो अवश्य है, पर वह आया उस जैसे अन्य प्रभावो के साथ लगकर ही है। यक्ष की अपेक्षा तो प्रेत-पूजा से इसका विशिष्ट सवध प्रतीत होता है, प्रेत ही दूसरे के शरीर में आवेश के द्वारा अपना अभीष्ट पूरा करता है। 'पीर' वस्तुत प्रेत ही होजाता है, क्योकि मृत्यु के उपरान्त ही सिर पर आकर अपना अस्तित्व वताता है और अपनी पूजा चाहता है। प्रेतात्मा का सवध भी वृक्षो से होता है।

यहाँ पर यह कह देना भी आवश्यक है कि कुछ विद्वानो की दृष्टि में प्रेतात्मा विषयक विश्वास भी यक्ष-मत का ही परिणाम है। इस सवध में कुमार स्वामी के ये शब्द सामने आते हैं

"In fact the idea of alternate human and Spirit birth, the idea, in fact, of Sansara seems to be inseparably bound up with the yaksha theology"

नागो और यक्षो का घनिष्ठ सवध है। दोनो ही का स्वरूप एक दूसरे में घुलमिल गया है। अत यह स्वाभाविक है कि जिस सिद्ध पीर अथवा वीर का नागो से सवध हो, उसके पापड में यक्ष-प्रभाव के अवशेष भी परिलक्षित हो।

वीर पूजा

सिर आने की प्रक्रिया से ही नही 'वीर पूजा' के भाव से भी जाहरपीर अथवा गुरू गुग्गा को यक्ष-परपरा की पूजा में मानना होगा। जैसा ऊपर वताया जा चुका है, कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि यह 'पीर' शब्द ही वीर का रूपान्तर है और यह 'वीर' शब्द वह 'वीर' है जो 'यक्ष' के लिए उपयोग में आता था। डा० वासुदेवशरण जी ने 'वरमवीर' या 'ब्रह्मवीर' से लेकर न जाने कितने वीरो का उद्घाटन काशी विश्वविद्यालय के गोष्ठे में किया है। ब्रह्म भी 'यक्ष' का ही नाम था। केनोपनिषद् में प्रकट होने वाला 'यक्ष' था, उसे उमा हेमवती ने ब्रह्म नाम दिया था। इन वीरो के थान जहाँ तहाँ वने मिलते हैं। ये वीर चौंसठ योगिनियो के साथ गिनती पर चढ़कर 'वामन' होगये। यहाँ पर यह वामन "वावन" (५२) सख्या-सूचक से अधिक आकार द्योतक "वौने" का समानार्थी विदित होता है, और यह यक्ष वामन ही है। वामन वीरो के फिर तो नाम भी गिनाये गये हैं। वीर विक्रमाजीत ने इन वावन वीरो को सिद्ध करके वश में कर लिया था, वस्तुत विक्रमादित्य ने सभी विद्याएँ सीखी थी। वह यक्ष–विद्या, अथवा विद्याधर विद्या का पडित था। तभी 'वीर' कहलाता है। यह वीर विद्याधर है, यक्ष है, यह वह वीर नही जो अग्रेजी 'हीरो' का पर्यायवाची है। स्पष्ट ही यहाँ वीर विषयक दो परपराएँ दिखायी पडती है

१ वीर यक्ष-परंपरा अथवा विद्याधर-परंपरा
२ वीर शूरवीर (हीरो) परंपरा*

---

*वीर पूजा के संबंध में अलक्जेंडर कनिंघम महोदय ने (देखिये-आर्क्यालाजिकल सर्वे आव इंडिया—खण्ड १७ पृ १९९ पर 'हैमनवरशिप इन नार्दर्न इण्डिया) बहुत विस्तार के साथ लिखा है। इनके मत से प्रेत भूत बैताल पिशाच वीर तथा शाक पर्यायवाची ही हैं। 'वीर' शब्द तो इस अर्थ में आपके मत से भारत भर में प्रचलित है। आपका अनुमान है कि 'पहले पहल संभवत इसका प्रयोग केवल उनके लिए होता था जो युद्ध में काम आते थे। क्योंकि वीर, लेटिन के vir वीर की भाँति 'शूरवीर' (hero) का ही द्योतक है। दक्षिण में युद्ध में काम आनेवालों के स्मारक की शिलाएँ 'वीर-कल' अथवा शूरवीर शिला' कहलाती हैं। कनिंघम साहब ने बताया है कि आज 'वीर-पूजा' में केवल मृत-हृत वीरों की ही पूजा नहीं वीर-पूजा उस व्यक्ति के भूत प्रेत की पूजा है जो किसी भयानक दुर्घटना से मौत का शिकार हुआ है अथवा जिसकी अकाल मृत्यु हुई है। वज्रपात से दैवयोग से विष अथवा रोग से जिसकी अकालमृत्यु हुई हो वे स्त्रियाँ जिनकी प्रसव वेदना से मृत्यु हुई हो जिनको किसी अपराध में मृत्यु दण्ड मिला हो जिनको शेर चीते ने मार डाला हो बिजली गिरने से मर गये हों, अथवा अन्य किसी मर्मान्तक घात से जिनकी मृत्यु हुई हो इन सभी के प्रेतों की पूजा होती है—वीर ये वीर कहलाते हैं।

ये 'वीर' अपनी मृत्यु के स्वरूप से नाम के अनुकूल विख्यात होते हैं—
ताड़-वीर—ताड़ वृक्ष से गिर कर मरने वाले का प्रेत
बाघत-वीर—बाघ से मारे जाने वाले का प्रेत
बिजलिया वीर—बिजली से मारे जाने वाले का प्रेत
नागवा वीर—सर्पदंश में मारे जाने वाले का प्रेत
प्रसव वेदना अथवा प्रजनन में मर जाने वाली स्त्री का प्रेत 'चुड़ैल' कहलाता है।

यह प्रेत-पूजा उत्तर भारत के प्रत्येक भाग में विद्यमान है। प्राय प्रत्येक गाँव में एक प्रेत वीर होता है, बहुतों में तो तीन या चार तक हैं। इसका इतना विस्तार है कि मुसलमान गाजी भी इसके क्षेत्र में आ गये हैं। बहराइच के विख्यात शहीद सालार बहुधा गाजी पीर कहलाते हैं। इनकी कब्र पर हिन्दू-मुसलमान दोनों ही जाते हैं।

कनिंघम साहब का एक निष्कर्ष यह भी है कि जिन मृतात्माओं के प्रेतों की पूजा होती है वे अधिकांश अन्त्यज जातियों के पुरखे हैं।

वीरों की पूजा में सर्वत्र फूल-फल पकी मेमने बकरे, चढ़ाये जाते हैं। हाथी और घोड़ों की मृण्मूर्तियाँ चढ़ायी जाती हैं और आवश्यक मंत्र गाये हैं।

वीरों के मन्दिर मिट्टी के चौकोर चबूतरे होते हैं जिन पर मिट्टी की पिंडियाँ या ध्वजा बने रहते हैं इन पर सफेदी पुती होती है, और लाल धारियाँ पड़ी रहती हैं। यह चबूतरा बहुधा पेड़ों के नीचे होता है।

कनिंघम साहब ने बताया है कि यह वीर-पूजा स्थानीय प्रेतों की ही होती है।

प० झाबरमल्ल शर्मा जी ने पच पीरो पर विचार करते हुए[३८] उन्हें उस वीर परपरा के आधीन माना है जो दूसरे वर्ग में आते हैं, और 'हीरो वरशिप' के क्षेत्र में हैं। इस दूसरी वीर-परपरा से ही 'अश्व' का घनिष्ठ सबध होता है।[३९] गूगा

और आस-पास एक-दो गाँवो तक सीमित रहती है। पर सभी प्रेतो में तीन प्रेतो की पूजा स्थानीय सीमाओ को लाघ गयी है, और काफी विस्तृत प्रदेश में ये वीर पूजे जाते है—ये वीर है गूगा चौहान, हरशू बाबा, तथा हरदौर लाल।

इस विवरण से स्पष्ट है कि कनिंघम महोदय गूगा चौहान की पूजा को मात्र वीर या प्रेत पूजा मानते हैं। पर जैसा गम्भीर अध्ययन से विदित होगा कि यह आशिक सत्य ही है।

३८ दे० शोध पत्रिका, भा० १ अ० ३ सित १९४७ पृ० १४२ १४३ तथा मरु-भारती, वर्ष ३, अंक ३, अक्टूबर १९५५ पृ० १९।

३९ **लोकवार्त्ता में अश्व—**

कथा सरित्सागर में 'विदूषक' की कहानी में उल्लेख है कि जब राजा आदित्यसेन के घोड़े ने एक जगह ठोकर खायी तो तीर की तरह वह राजा को ले उडा और विंध्य पहाडियो के दुर्गम जगल में जाकर रुका। वहाँ घबडाये हुए राजा ने घोडे के पूर्व जन्म को जानने के कारण—उसे दण्डवत करते हुए कहा —

"तुम देवता हो, तुम्हारे जैसे प्राणी को अपने स्वामी से घात नही करना चाहिये। मैं तुम्हें अपना रक्षक मानता हूँ। मुझे किसी सुखद मार्ग पर ले चलो।" जब घोडे ने यह बात सुनी तब उसे बहुत खेद हुआ और उसने मनत राजा की बात मान ली, क्योंकि श्रेष्ठ घोडे दैवी होते हैं।"

(The Ocean of Story. Vol. II pp 515)

पेंज़र महोदय ने यहाँ पाद टिप्पणी में घोडो के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी दी है। उसका आवश्यक अंश यह है —

"ग्रिम ने अपनी **ट्यूटानिक मायथालाजी** (दे० स्टाल्लीब्रस्स का अनुवाद, पृ० ३९२) में लिखा है—वीरो (heroes) को पहचानने के लिए एक मुख्य लक्षण यह है कि उनके पास बहुत समझदार घोडे होते हैं, जिनसे वे बातें भी करते हैं। एचील्लीज (Achilles) के ज थॉस (Xanthos) तथा बालियोज से बातें करने की घटना की पूर्ण तुल्यता सुन्दर वेयर्ड के कार्लिङ्ग उपाख्यान (Legend) में मिल जाती है। ग्रिम ने योरोपीय साहित्य से और भी बहुत से दृष्टान्त दिये हैं। कुमारी स्टोक्स के सग्रह की बीसवी कहानी की तीसरी टिप्पणी भी देखिये और 'ग्रीकिस्से मार्के' (Griechische Marchen) में वर्नहर्ड स्किम्दत की टिप्पणियाँ भी पृ० २३७ पर। पूर्वकालीन आर्यों के लिए योद्धेय अश्वो की बहुत उपयोगिता थी, अत वैदिक-काल से ही हमें घोड़ो की पूजा होती मिलती है। देखिए ऋ० ४ ३३। अश्व-पूजा तथा अश्वबलि पर, क्रुक की फोकलोर आव नार्दर्न इडिया, खड २, पृ० २०४-२०८ की टिप्पणियाँ पठनीय हैं। स्पेन निवासियो द्वारा जब मध्य अमेरिका के इडियनो को सबसे पहले घोडे मिले तब वे परा-प्राकृतिक माने

का अपने नीले बछेड़े या बछड़िया से बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। व्रज की लोकवार्ता में यह घोड़ा भी पीर माना गया है क्योंकि जिस प्रकार गुरु गुग्गा गूगल से उत्पन्न हुए उसी प्रकार यह घोड़ा भी उत्पन्न हुआ और दोनों एक दिन एक समय उत्पन्न हुए। इससे दोनों का संबंध उनमें भाइयों जैसा था। आज भी जिन्हें गोगा के दर्शन गोगामेड़ी में होते हैं उन्हें वे घोड़े पर चढ़े ही दिखायी पड़ते हैं क्योंकि वे घोड़े के साथ ही उस भूमि में समा गये थे।

यहाँ पीर से वीर पर पहुँचकर हम अब वीरों की परंपरा में पहुँचना चाहते थे वहाँ हमें अश्व के सहारे दूसरे प्रकार के वीरों के वर्ग में पहुँचना पड़ता है।

अत अब हम कह सकते हैं नाग-यक्ष समुदायों से रूपान्तरित बौद्ध धर्म की वह धारा जो आदिम जातियों के संपर्क में आयी और जो तंत्र से होकर गोरख संप्रदाय में सम्मिलित हुई वह ऐतिहासिक वीरपूजा और उसके उपाख्यान से मिलकर गुरु गुग्गा या जाहरपीर की परंपरा बनी। मुसलमानों का प्रभाव भी इस पर पड़ा या दूसरे शब्दों में मुसलमानों ने भी इसे ग्रहण कर लिया। यह मुसलमान जोगियों के माध्यम से हुआ। इस प्रकार इस पाषंड ने सभी धार्मिक प्रवर्तनों का प्रभाव ग्रहण किया और उनका कोई न कोई अवशेष अपने पूर्ण पाषंड में बनाये रखा।

इसी के साथ एक और विशिष्ट बात इस पाषंड के साथ जुड़ी हुई है। राजस्थान के इतिहासकार यद्यपि पंचपीर को पंचवीर मान कर राजस्थान के पाँच बड़े बड़े वीर-पुरुषों के नाम गिनाते हैं पर गुरु गुग्गा के परिवार के लोकवर्ती में मान्य पंचपीर कोई और ही हैं वे हैं

१ नीला सीधी घोड़ी का
२ नरसिंह ब्राह्मणी का पुत्र
३ भज्जू चमारी का पुत्र
४ रतनसिंह भंगिन का पुत्र
५ जाहरपीर बाछल का पुत्र चौहान

ये पाँचों एक दिन एक समय एक ही विधि से उत्पन्न हुए थे। गुरु गोरखनाथ के गूगल से।

जाते थे और वैसी ही उनकी पूजा होती थी। धर्मगाथा (या पुराण-कथा-माइथालाजी) में घोड़े के सम्बन्ध में जानकारी के लिए द्र० डानिया मैंनेमैंगीज जूलाजिकल माइथालाजी खंड १ पृ २९०-२९९ तथा ३३०-३३५ में दे गुबेरनातिस 'अबेर ग्लौबे (Aberglaube) में पाउली-विस्सोवा पृ ७६ फोक-लोर, खंड १९, १९ प पृ० ६५ पर कुक की होमैरिक फोक-लोर पर कुछ टिप्पणियाँ भी ध्यान देने योग्य है।

सर्प-निवारण की क्रिया के साथ भी अश्व का सम्बन्ध भारत में वैदिककाल से विदित होता है। गृह्य सूत्रों में सर्पबलि का विधान है। यह 'सर्पबलि' नामक अनुष्ठान चौमासे भर होता है। इस अनुष्ठान में कुछ मंत्रों का उच्चारण भी होता है, जिनमें एक श्वेत प्राणी का भी आह्वान किया जाता है। इस श्वेत प्राणी का उल्लेख ऋग्वेद में तक

इस पचपीरी विधान में एक अनोखी सामाजिक क्रान्ति के विधान के बीज मिलते हैं। सबसे उच्च वर्ण ब्राह्मण भी इन पचपीरो में सम्मिलित है। सबसे निम्न-वर्ग भगी भी यहाँ है। चमार भी सम्मिलित है और राजपूत भी। एक वर्ण इसमें नही है, वैश्य वर्ण। इसी के साथ एक यह तथ्य भी दृष्टव्य है कि वैश्यो से विशषत अग्रवालो से गोगाजी की मानता सवधी नाता बहुत घनिष्ठ है।[40]

जाहरपीर के स्वरूप को समझकर यह कहा जा सकता है कि यह कोई सप्रदाय अथवा मत नही, क्योकि उसकी कोई दार्शनिक व्याख्या करने वाली सस्था नही। इसे तो एक 'पापड' (जिसे अग्रेजी में कल्ट कहते हैं) मात्र ही माना जा सकता है। गुरू गुग्गा की मान्यता किसी आध्यात्मिक अभिप्राय से नही की जाती। गुरू गुग्गा की शरण में मोक्ष-प्राप्त करने अथवा ईश्वर-दर्शन की अभिलाषा से कोई नही जाता। इसकी समस्त मान्यता का तत्व यही है कि इसकी पूजा से जीवन के विघ्नो से मुक्ति मिलने की सभावना है। साथ ही सतान, धन, धान्य में भी श्रीवृद्धि होगी। इस दृष्टि से पचपीरो में विविध वर्णों के समावेश से किसी दार्शनिक, सामाजिक अथवा आध्यात्मिक समस्या पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडने की बात इससे सिद्ध नही होती। जिस युग में इस सप्रदाय का यह स्वरूप निश्चित हुआ, उस युग की मनोवृत्ति का इस पापड के स्वरूप निर्माण में किसी न किसी सीमा तक हाथ अवश्य है। अपने इस स्वरूप से

है। यह वह घोडा है जो आश्विनी कुमारो ने पेदु (Pedu) को दिया था इसको इसी कारण 'पैड्व' भी कहते हैं। यह सर्पों को अपने खुरो से कुचलता है। विंटरनिज ने इसे 'सौर अश्व' (Solar Horse) बताया है।

४० प्रो० सत्यकेतु विद्यालकार डी० लिट०, (पेरिस) 'अग्रवाल जाति का इतिहास' नामक पुस्तक के छठे परिशिष्ट की दूसरी टिप्पणी में 'गूगापीर' पर बताते हैं कि —

अग्रवाल जाति का गूगापीर के साथ विशेष सबध है। प्राय सभी प्रान्तों के अग्रवाल गूगापीर को मानते हैं। और भाद्र के महीने में जब गूगा का मेला लगता है, तो उसमें बडे उत्साह से सम्मिलित होते हैं। जो लोग इस अवसर पर गूगा की समाधि पर पूजा करने के लिए जा सकते है, वे वहाँ जाते हैं, जो समाधि पर लगे मेले में शामिल नही हो सकते, वे अपने यहाँ ही गूगा का सम्मान करते हैं। गूगा की पूजा के तरीके सब स्थानों पर अलग अलग है। मध्य-प्रान्त के तोमार नामक स्थान पर गूगा की पूजा के लिए तीस हाथ लम्बा एक डडा लेकर इस पर कपडे और नारियल बाँधे जाते हैं। श्रावण-भाद्रपद में प्राय· प्रति दिन भगी लोग इस डडे का जुलूस शहर में निकालते हैं। लोग उसके सम्मुख नारियल भेंट करते हैं। अनेक अग्रवाल उसकी पूजा के लिए सिन्दूर आदि भी देते हैं। कुछ उसे अपने घर पर विशेष रूप से निमन्त्रित करते हैं और रात भर अपने पास रखते हैं। सुबह होने पर अनेक भेंट उपहार के साथ उसे विदा दी जाती है। सयुक्त प्रान्त, बिहार, पंजाब आदि में भी गूगा की पूजा के लिए इससे मिलती जुलती पद्धति प्रचलित हैं।

इस पार्थक में एक बात तो निश्चय ही सुलभ कर दी कि जाहरपीर की सीमा में ऐसे भक्ति के अवसर पर, ऊँच नीच की पारस्परिक छुआछूत नहीं रही।

निष्कर्ष

१ गोगाजी गुरु गुग्गा अथवा जाहरपीर एक पायक है संप्रदाय नहीं।
२ इसका आनुष्ठानिक संबंध जोगियो से है। इन जोगियो का गोरख-संप्रदाय से दूर का संबंध रहा।
३ जोगियो ने गोरख से संबंध रखते हुए गोगाजी के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के साथ बौद्ध धर्म की उस परंपरा के पार्थक को अपनाया जिसमे यक्ष-नाग-संस्कृति के अवशेष प्रबल थे और जो आगे तब नाथ और मुस्लिम पीर परंपरा से प्रभावित हुई। किन्तु जिसकी आन्तरिक आत्मा 'एनिमिज्म' की थी।
४ ऐतिहासिक व्यक्तित्व के कारण 'वीर' पूजा के भाव इससे संबद्ध हुए।
५ गोगाजी के परिकर के 'पचपीर' पंचायती परंपरा के हैं। पचपीरी परंपरा के तो अकेले गोगाजी हैं।
६ इतने समस्त प्रभावो के होते हुए भी इस पायक का संबंध आदिम ऐनिमिस्टिक तत्वो से है। अनुष्ठान का समस्त विधान यक्ष-नागो से संबंधित चिन्ह-दर्शन सिर-आगा चाबुक चमस में मडो ये सभी तत्व प्रागैतिहासिक काल से चले आने वाले टोटेमिस्टिक सम्प्रदायो[४१] के अवशेष है। यद्यपि आज इसका संबंध केवल भारत भूमि से नही विश्व भर में ऐतिहासिक और टोटेमिस्टिक अवशेष जहाँ जहाँ मिलते है गोगाजी विषयक अनुष्ठानो और तत्वों से मेल बैठ जाता है।
७ इस प्रकार यह पायक भारत के प्राचीन और नवीन सभी सास्कृतिक विशेष गुणो को आज भी सँजोये हुए चल रहा है।

गुरु गुगा की कथा

गुरु गुगा गुग्गा अथवा गोगा की कहानी के कई रूप प्रचलित है। टौडेल ने लिखा है कि गुगा बागड़ देश का राजा था। वह चौहान जाति का वीर राजपूत था और पृथ्वीराज का

---

४१ Totemism is the magico-religious system characteristic of tribal Society Each clan of which the tribe is composed is associated with some natural object usually a plant or animal which is called its totem. The clansmen regard them selves as akin to their totem species and descended from it [Studies in Ancient Greek Society—George Thomson New Edi 1954 P 36]

समकालीन था[४२]। एक अन्य परपरा से यह अपने पैंतालीस पुत्रों और साठ भतीजों के साथ महमूद गजनी से युद्ध करते हुए मारा गया। एक तीसरी परपरा के अनुसार यह औरगजेब के समय में था। यथार्थ में इसके इतिहास के सबध में कुछ भी निश्चित ज्ञान उपलब्ध नही। हाँ, लोकवार्त्ता का तानाबाना अवश्य पुरा हुआ है। हम सुनते हैं कि कैसे गुरू गोरखनाथ की कृपा से यह बाछल से उत्पन्न हुआ, यद्यपि काछल ने षड्यन्त्र करके बाधा डाली थी, कैसे इसके धूर्त्त मौसरे भाई अरजन और सरजन ने इस पर आक्रमण किया, और वे युद्ध में हारे और मारे गये, कैसे मा ने इसे शाप दिया और अन्तत यह भूमि में समा गया, और कैसे यह मृत्यु के उपरात भी अर्द्धरात्रि होने पर अपनी पत्नी से मिलने आता था। इसका भक्त घोडा जवाडिया ('जौ से उत्पन्न') इसके अद्भुत साहसो में महत्वपूर्ण भाग लेता है।[४३]

अनेको कहानियो में नागो से इसका घनिष्ठ सान्निध्य माना गया है। लुधियाना में तो यहाँ तक कहा जाता है कि पहले यह साँप था, 'एक राजकुमारी से विवाह करने के लिए इसने मनुष्य का रूप धारण किया। बाद में अपना मूलरूप ग्रहण कर लिया।[४४] कुछ कहते है कि पालने में यह जीवित नाग का मुख चूसते देखा गया था। बहुत सी कथाओ में, इसका बासक नाग से सबध बतलाया गया है जिसने इसे सिरियल (जो सुरैल, सुरजिल या छरिआल भी कही जाती है) से विवाह करने में सहायता दी थी।

राजा ने अपने वचन-भग करके अपनी लडकी गूगा को नही दी, तो वह वन में गया, वहाँ बासुरी बजाकर पशु पक्षियो को मोह लिया। वासुकि नाग भी मुग्ध हुआ और उसने तातिग नाग को गूगा की सेवा में नियुक्त कर दिया। गूगा ने तातिग नाग को धूपनगर भेजा। यह नगर कारू देश में था, जो जादूगरो का देश था। सिरियल को एक बाग के तालाब में नहाते देख कर तातिग सर्प बन गया। और सिरियल को डस लिया। फिर ब्राह्मण का वेष धारण करके सपेरा बन गया। राजा के सामने पहुँचाये जाने पर उसने राजा से यह लिखवाकर ले लिया कि यदि सिरियल ठीक हो गयी तो वह सिरियल का सबध गूगा से कर देगा। तब उसने नीम का लहरा लेकर मत्र पढ़ते हुए, अपने पैर के अँगूठे से सिरियल का विष चूस लिया। राजा ने सातवें दिन विवाह की तिथि निश्चित

४२—पृथ्वीराज के समकालीन होने का उल्लेख सर हेनरी ईलिअट ने भी किया है। 'He is said to be contemporary of Prithviraj . .. ,'

देखिये 'मैमोयर्स आफ दी हिस्ट्री, फोकलोर एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन आव द रेसेंज आव द नार्थ वैस्टर्न प्रोविन्सेज आव इडिया' पृष्ठ सख्या २५५।

४३—पजाब की पहाडियो में 'गूगा' के घोड़े का नाम 'नीला' है। यह उसी दिन उत्पन्न हुआ था जिस दिन गूगा हुआ।

This and some other details of his story seem to be reminiscences of Buddhist lore ISL

४४—Ludhiana District Gazetteer, 1904 (Lahore 1907) pp 88 f

की। इतना कम समय होते हुए भी गुग्गा चमत्कार पूर्वक समय से ही फेरो के लिए कूपनगर पहुँच गया।[४६]

चम्बा में प्रचलित कहानी में वासक नाग गुग्गा का मित्र नहीं वरन् प्रतिद्वन्द्वी है। जब नायक एक बड़ी बरात के साथ अपने भावी ससुर की राजधानी (ससुर बंगाल का राजा बताया गया है) को चला तो वासक और उसके दल ने उसका सामना किया जिसमें नाग हार गये और नष्ट हो गये।[४६] [Indian Serpent Lore by Vogel pp 26 ff.]

यो तो हम ऊपर कई कथाओं का उल्लेख कर चुके हैं जिनमें गोगाजी के संबंध में अलग अलग विवरण दिया हुआ है। प्रत्येक वृतान्त में कहा गया है कि गोगाजी पृथ्वी में समा गये थे। क्यों समा गये थे? इसके भी दो कारण दिये जाते हैं। एक तो यह कि माता से अभिशप्त होकर उन्होंने पृथ्वी में समा जाने का विचार किया। वे सिद्ध थे। अतः पृथ्वी ने उन्हें स्थान दिया। दूसरा यह है कि गुरु गोरखनाथ ने अथवा स्वयं पृथ्वी ने उनसे कहा कि पृथ्वी में तो मुसलमान ही स्थान पा सकते हैं, तो गोगाजी जाकर अजमेर * गये मुसलमान बने और तब मेड़ी पर आये जहाँ पृथ्वी फट गयी और वे उसमें समा गये। अभी तक गोगाजी के जिन वृत्तों का वर्णन हुआ है उनसे बिल्कुल भिन्न वृत्त पं० झाबरमल्ल शर्मा जी ने 'मरु-भारती' वर्ष ३ अंक ३ अक्तूबर १९५५ राजस्थान के लोक-देवता (पृष्ठ १ ११) में दिया है। इससे भी पूर्व 'शोध-पत्रिका' में उन्होंने विस्तारपूर्वक गोगाजी के वृत्त पर विचार किया है। शोध-पत्रिका के निबन्ध से आवश्यक अंश यहाँ उद्धृत किये जाते हैं —

"प्राप्त गीतों और परंपरागत बातों के आधार पर किये हुए अन्वेषण से यह प्रकट है कि गोगाजी चौहान ददरेवा के राव थे और उनके अधीन ८४ गाँव थे। पिता का नाम जूरजपाल *और पितामह का नाम ऊमा था। राठौड़ आसथान के पुत्र धांधल के पुत्र पाबूजी के बड़े* भाई बूड़ाजी की पुत्री केलमदाई के साथ गोगाजी का विवाह हुआ था। कन्या के चाचा अर्थात् श्वसुर होने पर भी पाबूजी गोगाजी से अवस्था में छोटे थे। केलमदाई के विवाह में कन्यादान के समय पाबूजी ने 'राती बोली सांड सोंढिये'[४८] देने का संकल्प किया था। केलमदाई के ससुराल जाने पर जब पाबूजी के संकल्पित सांड सोंढिये नहीं पहुँचे तब उसकी अन्तःपुर में हँसी उड़ायी जाने लगी। इससे केलमदाई को बड़ा दुःख हुआ। तानों को सुनते-सुनते वह तंग आ गयी। अतएव उसने अपनी कष्ट-कथा सोलानम पाबूजी को लिखकर उनके संकल्प की याद दिलायी। इस पर पाबूजी दूर देशस्थ लंक-पत्ती[४९] से वहाँ के उत्कृष्ट ऊँटों के ऊँट-ऊँटनी प्रसिद्ध थे बड़े साहस के

४६—R. C. Temple-Legends of Panjab Vol. I pp. 121 ff

४६—कुमाऊँ में जो वृत्त है उसमें गुग्गा की दुलहिन सुरवर नामकी वासकी नाग की बेटी थी।

४७—कनिंघम ने आर्क्यालॉजिकल रिपोर्ट में 'मक्का' लिखा है। (ले.)

४८—ऊँटनी और ऊँट।

४९—लंका-पत्ती सिन्ध में एक इलाका है जहाँ की सांडनी बहुत अच्छी होती थी। रिपोर्ट मर्दुमशुमारी मारवाड़—पृष्ठ २७।

साथ एक टोला (साँढ साढियो का समूह) घेर लाये और गोगाजी को भेंट कर दिया। गली-गली में ऊँट-ऊँटनी फैल गये। इस प्रकार पाबूजी अपने वचन का पालन कर यशस्वी बने।

गोगाजी की माता का नाम वाछलदे और मौसी का नाम आछलदे था। आछलदे के गर्भ से सुरजन-अर्जुन दो भाइयो का जन्म हुआ था। समीपवर्ती गाँव में उनका निवास था। जमीन-जायदाद को लेकर गोगाजी से उनका विरोध हो गया। इसके परिणाम में बादशाह के दरबार में दिल्ली पहुँच कर वे दोनो पुकारे और खास बादशाह की फौज चढा लाये। फौज ने आक्रमण किया और गौएँ घेर ली, जिसके लिए गोगाजी ने युद्ध किया। उनका 'बाला' भानजा भी मार्ग में साथ हो गया। दोनो ओर से घोर युद्ध हुआ। किन्तु गोगाजी ने गौएँ छुडा ली। सुरजन-अर्जुन मारे गये। बहुसख्यक योद्धा काम आये। जब गोगाजी की माता ने यह सुना कि, गोगाजी ने अपने मौसेरे भाइयो को मार डाला, तब वह क्रुद्ध हुई। गोगाजी युद्ध में घायल हो चुके थे। इसके बाद ददेरा[५०] का निवास त्याग कर गोगाजी मेडी[५१] चले आये और वही उनका देहावसान हुआ।"

इसी निबध में प० झाबरमल्लजी ने कुछ अन्य रूप भी गोगाजी की कथा के दिये हैं। जिनमें से एक श्री मुशी कन्हैयालाल माणिकलाल-रचित 'Gurjar Problems' के आधार पर लिखित 'भारतीय विद्या', जनवरी, १६४६ में प्रकाशित एक नोट का साराश है। वह यह है कि 'गोगा' चौहान को गूजर अपना एक पूर्व पुरुष मानते हैं। गुजरात में प्रति वर्ष गोगाराव का जुलूस निकाला जाता था जो पिछले ३० वर्षों से बन्द हो गया है। वहाँ गोगाराव की एक मिट्टी की बडी मूर्ति बना कर जुलूस के साथ गाँव के तालाब या नदी में पधरायी जाती थी। गोगा चौहान की कहानी एक बूढे सुलतान के कथनानुसार यह है कि "गोगा चौहान एक राजा का पुत्र था। माता के गर्भ से उसका जन्म होने के साथ ही एक साँप का जन्म भी हुआ था, जिसका पालन उसकी माता ने किया। गोगा बडा होने पर अपने सहजात भाई साँप को बहुत चाहता था। जब वह साँप गोगा को छोड कर जाने लगा, तब कह गया कि जब कभी आवश्यकता आ पडे, तब मुझे बुला भेजना, मैं आऊँगा और तुम्हें बचाऊँगा। जब गूजर मुसलमान बन गये, तब गोगा को जाहिर 'पीर' कह कर स्वीकार कर लिया गया। अन्त में उस बूढ़े सुलतान द्वारा

---

५० "ददेरा" नामक गाँव, इस समय बीकानेर राज्य के परगना राजगढ में है।

५१ "गोगा-मेढी"—कस्बा नौहर से पूर्व की ओर ८ कोस के अन्तर पर अवस्थित है। हिसार एव सिरसा जिले का समीपवर्ती स्थान होने के कारण गोगामेडी को Mehri के रूप में हरियाना जिले का गाँव समझने की भूल की जाती है। किसी समय यह चाहे हरियाने में रहा होगा, किन्तु इस समय तो बीकानेर राज्यान्तर्गत परगना नौहर का एक गाँव है।

सांप निकलने पर गुजरात में गाया जाने वाला निम्नलिखित गीत भी उद्धृत किया गया है।

१ दम मुखम गुगा मोहमी
दम गाना सुलतान
गूगे हुजु करे सेंधु
बोलन मीये नाम
२ एरे मुण्ड मातरा
नाग हाथ न धा
बिछु-परिमा ए गवला
मत बाधन कायमा
३ ग्यारत माबन ग्यारवी
लेबा गुगे का नाम
जिस दम गुगा जामिया
भो सुलतानी नाम[१२]

एक दूसरा वर्णन राजस्थान के महाकवि कविराजा सूर्यमलजी मिश्रण के वृहद वंश भास्कर की तृतीय राशी के १२ १५ मयूखों में दिये गये वृत्त के अनुसार है। "बाणासुर के पुत्र रावण को मार कर अजमेर बसाने वाले अजयपाल चौहान के परपौत्र मोम[१३] का पुत्र गोगा चौहान था। उसकी माता का नाम मति था। वह विदर्भ के राजा की पुत्री थी। मति की छोटी बहिन मीति थी जो दोड़ के राजा धमरेव को बिवाही थी। उसके गर्भ से दुर्जन व अर्जन नामक दो भाइयों का जन्म हुआ था। राजकुमार गोग शुक्ल पक्ष के चन्द्र की भांति कला को बढ़ाता हुआ सोलह वर्ष की अवस्था में पहुँच कर अपने लिए निर्दिष्ट अशोक घोड़े पर आरूढ़ हो शिकार के लिये जाने लगा। सिंह और वराह उसकी शिकार के लक्ष थे। इसके बाद उसने रावणासुर के पुत्र बटासुर-बकासुर को उनके संगी साथियों समेत मारा। उस लड़ाई में गोग के शरीर पर बत्तीस घाव आये थे।

१२—Gurjar Problems by K. M. Munshi भारतीय विद्या जनवरी सन् १९४९।

१३—अजयपाल चौहान
|
बटवलन
|
अनङ्गराज
|
मोम
|
गोग

पुत्र की इस विजय पर राजा भीम ने बहुत बधाइयाँ बाँटी और दान पुण्य किया। तत्पश्चात चन्द्रवशीय वगीय राजा श्रीधर की गुणनिधाना कन्या प्रभा के साथ गोग का विवाह सम्पन्न हुआ और राजा भीम ने अपनी रानी विदर्भ-कुमारी के साथ वन में योग मार्गावलम्बन पूर्वक ब्रह्मरध्र मार्ग से देह त्याग किया।

अठारह वर्ष की अवस्था में गोग चौहान पिता की गद्दी पर बैठा। उसका पुत्र शुभकरण भी पिता के समान ही विक्रमशाली हुआ। गोग को तीर्थराज प्रयाग में गोतमवशी कृपाचार्य से शास्त्र और शस्त्र-विद्या सीखने का सुयोग मिला। गोग का नाना नि सन्तान था, इसलिए उसने अपना राज्य गोग को सुयोग्य देख कर सौंप दिया और स्वय अपनी रानी सहित वानप्रस्थाश्रम ग्रहण कर परलोकवासी हुआ। विदर्भाधिपति गोग के मातामह (नाना) की कनिष्ठा कन्या नीति गोड राजा जयदेव को व्याही गयी थी। उसके दो पुत्र सुर्जन और अर्जुन गोग के मौसेरे भाई थे। जब गोग के इन दोनो मौसेरे भाइयो ने सुना कि नाना का देहान्त हो गया और उसका राजपाट गोग ने ले लिया, तब वे दोनो गोग के पास पहुँचे और साभिमान बोले—हमारा गोड कुल क्या निर्बल है कि तुमने अकेले ही नाना का धन-धाम सब कुछ ले लिया। उस पर तो तुम्हारा और हमारा समान अधिकार है। इसलिए आधा विभाग हमें दो। तुम कर्णाटक के राजा हो तो हम भी कबोज के अधीश्वर है।

यह सुन कर गोग ने कहा कि, पहले आते तो तुमको कुछ मिल जाता। नाना जी ने तुमको बुलाया नही, इसलिए मै तुमको कुछ नही दूँगा। नानाजी लोकान्तरित हो गये और अब तुम हिस्सा लेने आये हो? यदि दान लेना चाहो तो सब का सब दे दूँ। किन्तु उसमें बल-प्रकाश का, गर्जन-तर्जन का काम नही। इस कथनोपकथन के परिणाम में सुर्जन-अर्जुन गोड ने लडाई ठानी और उस लडाई में गोग चौहान ने उनको पराजित कर दिया। तब तो सुर्जन-अर्जुन दोनो भाई सब राजाओ के पास पुकार कर थक गये, किन्तु उनका कोई सहायक नही हुआ। अतएव यहाँ से निराश होकर प्रतिहिंसा की भावना से अटक नदी उतर कर वे ईरान के बादशाह अबूफरके दरबार में पहुँचे। उस बादशाह के पास बडी सेना थी। दोनो भाइयो ने उस प्रबल पराक्रमी यवन राज को गोग पर चढ़ाई करने के लिए उत्साहित किया।

अबूफर अपनी बडी सेना के साथ गोग चौहान पर आक्रमण करने के लिए अग्रसर हुआ। अपनी नाक कटा कर दूसरो को अपशकुन देने वाले की भाँति सुर्जन-अर्जुन गोड उसके साथ थे।

"लघि सिन्धु सनामयो सरिता अबूफर साह आयउ।
और और न लुहि तोरस जोर सोर मही मचायउ।"

पाँच योजन (बीस कोस) का भू-भाग सेना से बादलो की तरह छा गया—यवनो की इस चढ़ाई का सवाद सुनकर और एक की पराजय सबकी पराजय समझी जायगी, तथा हमारी भूमि पर दुष्टो का अधिकार हो जायगा—यह विचार

कर योग को सहायता के निमित्त बिना निमंत्रण ही—धर्मसम्मत नीति का अवलम्बन कर महामना राजा लोग एकत्र[२४] हो गये यथा—

मिच्छ सौं इक को बनें सु बन समस्तन को पराभय
इक्क कारन एह मो मुख आय दुष्टन क सु प भय
यौं बिचारि महीप सज्जित ह्वै भये सब आसि इक्कत"

इतने वीर योद्धाओं को अपनी पीठ पर उपस्थित देखकर गोग ने कहा कि आप क्यों खड़े पहले मुझे भिड़ने दीजिए। मुझे मार कर दुष्ट जब इधर को बढ़ें तब आप सब जूझें। यों गोग समुपस्थित ससैन्य राजाओं से वहीं ठहरे रहने का अनुरोध कर स्वयं रण के लिये सज्जित हुआ। उस समय वीरों का रूप बढ़ा और कायरों के मुख का पानी उतर गया। बादशाह अबूफर दो दिन का मार्ग एक दिन में ही तय कर सामने आया। उसने अपने तीस हजार घुड़सवार पहले ही गौएँ घेर लेने के लिए भेज दिये थे। गायों के घिर जाने पर त्राहि त्राहि मची। पुकार सुनते ही गोग अपने अशोक घोड़े पर सवार होकर सजी हुई सेना के साथ चल पड़ा। पाँच कोस पीछा करके उसने यवनों की पीठ जा दबाई। बीस हजार शत्रुओं को मारकर उसने गोधन को छुड़ा लिया। इसके बाद भी चौहान दुश्मन को दबाये ही चला गया। गोग के भागनेय बाल ने खूब हाथ दिखलाये। पीछे से वे राजा लोग भी गोग की सहायता पर आ पहुँचे। कुरुक्षेत्र में भारत की तरह बड़ी घमासान मचाई हुई। नर्मदा के उस पार तक मुसलमानों ने *डटकर मुकाबला किया—किन्तु बाद में उनके पाँव उखड़ गये और वे भागने लगे। हिन्दुओं के* अस्त्रों की मार खाते-खाते वे कायर होते हुए हरियाने पहुँच गये। हरियाने में पहुँचते ही राजाओं ने घेरा दे दिया। गोग ने झपट कर अबूफर पर वार किया जिससे

---

२४ गोग चौहान के सहायतार्थ बिना निमन्त्रण ही एकत्र हो जाने वाले राजाओं की नामावली वंश भास्कर के अनुसार इस प्रकार है —

(१) विदर्भ की सेना के साथ हरिसेन का पुत्र बाल (गोग का भागनेय) (२) बंग देश के राजा का पुत्र भतर्दन (गोग का साला) (३) पटना का राजा कुबेर। (४) अयोध्या के रघुवंशी राजा का पुत्र किशर (५) पाण्डव-वंशी नृपमन्यम। (६) शालीवाहन प्रमार का पुत्र जयसेन (७) प्रतिहार राजा सहल। (८) चोलाधिपति त्रिभुवन का पौत्र विक्रम। (९) मधु द का यादवी राजा शूर। (१) कलिंग का राजा वीर राज। (११) केरल का राजा कुबेर। (१२) मग का राजा विमसेन (१३) सोरठ का राजा जयंत। (१४) शाल्व का राजा शशिबिन्दु। (१५) वाहल का सुबाहु (१६) विमर्द का जय (१७) कुन्तलेश्वर कर्मसिंह (१८) मैथिल राजा प्रसेन (१९) तक्षिक का सूर्य (२) सुवीर का प्रवीण (२१) टकराज का केसरी (२२) मत्स्य देशाधिपति धर्मम (२३) भानुवंशवती मुकुटसेन के राजा का पुत्र रत्नादित्य (२४) मद्रराज सुदर्म (२५) मरु-महीप दुर्लभ।

वंश भास्कर ७ १ १४ वाँ मयूख पृ ७५५ ५६

वह अपने घोडे की रकाव में लटक गया। किन्नर ने अर्जुन गौड का सिर काट डाला सुर्जन भाग गया। हरियाने तक सभी म्लेच्छ मारे गये, और चौहान की जीत के नगारे वजने लगे। इस लडाई में गोग के पक्ष के वे सव राजा भी मारे गये, जिनके नाम पहले दिये जा चुके हैं। अपने वचे हुए सव राजाओ को एकत्र कर गोगा ने कहा कि अव हमारी भी जाने की अवधि आ गयी है। मेरा पुत्र शुभकरण अव वयस्क वीर है। उसके छोटे भाई १५ वीरगति पा गये। वशभास्कर-कार के शव्दो में—

"अजित गती खट मित वरस,[५५] कलिजुग-जावतकाल।
दिन जिहि जनम्यो ताहि दिन, पहुँच्यो नृप पाताल॥
निलय गोग चहुवान के, रचि जन-पद हरियान।
ताको सव पूजत जगत, अव लग नृप चहुवान॥
.. ..
गोग हि भूप प्रविष्ट गिनि नतिजुत रामनरेस।
पूजित जाहिर पीर कहि, कतिपय जवन विसेस॥
ताहि सर्पभय होत नहिं, वरनत जो यह बात।
सर्पहु गोग प्रभाव सुनि, जवी[५६] निलय[५७] तजि जात॥

वशभास्कर-रचयिता-वर्णित गोग चोहान के चरित का यही सार है।

एक और वृत्त का उल्लेख उन्होने ऐसे किया है —

"सिरोही राज्य के रिटायर्ड लेंड रेवेन्यु ऑफिसर लल्लुभाई भीमभाई देसाई ने अपनी पुस्तक "चौहान कुल कल्पद्रुम" में पृथ्वीराज विजय और सिरोही राज्य के इतिहास से उद्धृत वशावलियो में आये हुए चाहमान से ६ठी पीढीस्थ गोपेन्द्रराज का ही नामान्तर गोगाराव अनुमान करते हुए लिखा है कि साँभर के चौहानो ने मुसलमानो के हमले में हर एक समय अपना वलिदान दिया है। वगदाद के खलीफा महमद विन कासिम के साथ गोपेन्द्रराज उपनाम गोगाराव ने ११ लडाइयाँ लडी और वारहवी वार गौओ के रक्षणार्थ अपने ४३ पुत्रो के साथ मारा गया। उसकी राणी मेलणदे राठोड कन्या महासती थी। गोगाराव के पीछे उसकी ३५ राणिया सती हुई। गोगाराव ने वि० स० ७८२ में गढ साँभर में समर किया था। वर्त्तमान समय में इसकी गोगादेव के नाम से पूजा होती है। गोगाराव के युद्ध में वीर-गति-प्राप्त ४३ पुत्रो के विपय में एक "निशाणी" है—

"अचलो ऊदो, अमपत, लालचद, केशव लाडो।
प्रेमो, पीथल, दाम, सदो, आमलमल्ल, छाँडो।

५५—६१३ वर्ष।
५६—जल्दी।
५७—घर छोड जाता है।

सठसौ, मीम समार चोप अमरो मान चेतो।
चसो, डूगो जसराज, नगबीर माधव नेतो।
हुवो कान, हरो, भंत पूठे गार्धन पथारण।
विदो नाग मणिदास मरू, साथ बीजो नारायण।
सुधा सातस ससपुर गोगराज सुत एम सड़े।
शाह ममूद सुकर भामलो तिरयासो तण दिन पड़े[५८]॥

पं भावरमल्ल शर्माजी ने अपने भाव के निबंध में कुछ ऐतिहासिक विचार भी दिये हैं। वे लिखते हैं —

'गोगाजी का जन्म ददेरा[५९] नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता का नाम सुरजपाल था। भारतवर्ष के इतिहास में वीरता के लिए चौहान अभिय सुख्याति प्राप्त कर चुके हैं। जिन वंशों को भारत के सम्राट् पदासीन होने का गौरव प्राप्त है उनमें एक चौहान वंश भी है। अपने हठ के लिये प्रसिद्ध युद्ध प्रतिज्ञ हम्मीर चौहान ही था जिसने अलाउद्दीन खिलजी के हृदय को अपनी वीरता से विकम्पित कर दिया था। दिल्ली के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी की प्रबल पराक्रमी सेना को सात बार रणांगण से भागने के लिये विवश किया था। गोगाजी भी चौहान वंशोद्भूत वीर थे। उनका विवाह पाबूजी राठौर के बूराजी की पुत्री केलमबाई के साथ हुआ था। वह पाबूजी राठौड की भतीजी थी। कन्या दान के समय पाबूजी ने 'सांड सांढिये[१] देने का संकल्प किया था। रिश्ते में कठिया-ससुर होने पर भी पाबूजी गोगाजी से उम्र में छोटे थे। पाबूजी की ओर से सांड सांढिये पहुँचाने में विलम्ब होता देख समुराल वाले केलमबाई की हँसी उड़ाने लगे। इस पर केलमबाई ने सन्देश भेजकर उनके संकल्प का स्मरण दिलाया। पाबूजी ने दूर देशस्थ सिंध लकाखी से एक दो या पाँच बार नहीं बल्कि सांड सांढियो का एक बड़ा टोला रख बड़े साहस के साथ लाकर गोगाजी के मुकाहे भाई भर दिये और यों अपना वचन पूरने का यश प्राप्त किया। गोगाजी गोरखनाथ के सम्प्रदाय के अनुयायी थे। उस समय राजस्थान में प्रायः नाथो की ही शिष्य परम्परा फैली हुई थी। गोगाजी जैसे वीर थे वैसे ही साधक भी थे। साँपो पर उनका असाधारण प्रभाव था। इस समय भी गोगाजी साँपो के देवता कहकर पूजे जाते हैं। कर्नल टाड के "ऐंटीक्वटीज आफ राजस्थान' के नवीन संस्करण के सम्पादक विलियम क्रुक उक्त ग्रन्थ की पाद टिप्पणी में लिखते हैं —

Gugaji or Gogaji was killed in the battle with Ferozshah of Delhi at the end of the thirteenth Century A.D

५८—चौहान कुल कल्पद्रुम-पृष्ठ २२, २३ १।

५९—ददेरा वर्तमान राजस्थान के बीकानेर डिवीजन में राजगढ़ से ८ कोस की दूरी पर है।

१ —ऊट और ऊंटनी।

अर्थात् गोगाजी या गुग्गाजी तेरहवीं शताब्दी ईस्वी सन् के अन्त में दिल्ली के फीरोजशाह तुगलक की लडाई में मारे गये। यह सही है कि फीरोजशाह तुगलक का ददेरा पर आक्रमण हुआ था, किन्तु वह ईसा की १३ वी नही—१४वी शताब्दी के अन्तिम भाग में हुआ था। श्री जगदीश सिंह जी गहलोत के "मारवाड राज्य के इतिहास' में गोगाजी का विक्रम सवत् १३५३ में द्वितीय फीरोजशाह देहली के चढाई करने पर वीरता के साथ लडकर काम आना माना गया है। यदि गहलोत जी की राय में यह जलालुद्दीन फिरोज खिलजी है तो उसकी मृत्यु सवत् १३४२ में हो चुकी थी [देखिये मूल इतिहास] और सवत् १३५३ में इतिहासवेत्ता मुन्शी देवीप्रसाद जी की "यवनराज वशावली" के अनुसार फिरोज का भतीजा अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का बादशाह था। अस्तु, यह ध्यान मे रखने की बात है कि फिरोजशाह तुगलक का समय ईस्वी सन् १३५१ से १३८८ तदनुसार विक्रम सवत् १४०८ से १४४५ है। रिपोर्टमर्दुमशुमारी राज मारवाड[६१] [सन् १८९४ई०] में सवत् १४४० में फीरोजशाह तुगलक के समय मे ददेरे पर आक्रमण होने का उल्लेख मिलता है। यह ईस्वी सन् १३८३ होता है। यही गोगाजी के वीरगति प्राप्त करने का सही सवत् प्रतीत होता है। रिपोर्ट में लिखा है—

"गोगा चोहान, चौहानो में देवता हुआ है, जिसको सांप काटता है, उसके गोगा के नाम का डोरा बांधते हैं। उसको 'तांती' कहते है। गोगा का थान, जिसमें सांप की मूर्ति पत्थर मे खोदी होती है अक्सर गांवो में होता है और इसीलिये यह ओखाणा (प्रवाद) चला है कि 'गांव-गांव गोगा ने गांव गांव खेजड़ी।' अर्थात् 'गांव गांव में गोगा गांव गांव में शमी (जाटी)। भाद्रपद कृष्णा ९ गोगाजी की पूजा का निश्चित दिन है।

केसरिया कुंवर

केसरिया कुंवर गोगाजी का आत्मीय पुत्र होना चाहिये। उसकी पूजा गोगा नवमी से पूर्व दिन अष्टमी को होती है। जिस प्रकार गोगाजी को नागरूप माना जाता है, उसी प्रकार कुंवर केसरिया को भी। मालूम होता है, केसरिया कुंवर गोगाजी से पहले दिन युद्ध में काम में आ गया था। केसरिया के स्तवन-गीत में महिलाएँ उसको 'पदमा नागण का जाया' पद्मा नागिन से उत्पन्न, फुलन्दे का 'बीरा' (भाई) तथा किस्तूरी का ढोला (पति) कहकर वन्दना करती हैं। गीत में 'मडी' का भी नाम आता है, जिसको ददेरा छोडने के बाद गोगाजी ने अपना वासस्थान बना लिया था। गीत के अनुसार केसरिया का बाजा (युद्ध का मारू बाजा) 'धुर मडी' अर्थात् 'ठेठ मडी' में ही बजा, उनकी ध्वजा वही फहराई। उस समय तक इधर नागवश का अस्तित्व बना हुआ था, केसरिया की माता नागवश की थी, इसका गीत से आभास मिलता है।"

---

६१ रिपोर्ट मर्दुमसुमारी राजमारवाड, तीसरा हिस्सा, पृष्ठ १४।

गूग गुग्गा की इस समस्त कथा के विविध रूपों में केवल निम्न बात समान है

१ गोगा जी अपनी माँ के इकलौते पुत्र थे।
२ उनके दो मौसेरे भाई थे।
३ गोगा जी और मौसेरे भाइयो में संपत्ति के लिए झगड़ा हुआ।
४ मौसरे भाई मुसलमानो की फौजो को चढ़ा लाये।
५ इन फौजो ने गायो को घेर लिया।
६ गोगा जी ने गायों को छुड़ा लिया।
७ युद्ध में मौसेरे भाई काम आये।
८ मुसलमानी सेना हार गयी।
९ मौसरे भाइयो की मृत्यु से गोगा जी की माँ उनसे नाराज हुई।
१० गोगा जी जमीन में समा गये।

इन अभिप्रायो के अतिरिक्त शेष सभी अभिप्राय असामान्य और भिन्न-भिन्न हैं जो विविध लोकवार्ताओ से गोगा जी के वृत्त के साथ जुड़ गये हैं। गायो की रक्षा करने के कारण और मुसलमानो की विशाल सेना को हरा देने के कारण 'गोगा जी' 'वीर-पूजा' के अधिकारी हुए। वीर हो जाने पर उनकी अमित शक्ति में दिव्यता का आरोप हुआ और इस दिव्यता से सम्बन्धित अनेको कहानियाँ तरह-तरह से उनके जीवन वृत्त से जुड़ गयी। ऊपर का ढाँचा ऐतिहासिक विदित होता है। प्रचलित लोकवार्ता गीत में गोगा जी और मौसेरे भाइयो में संघर्ष का कारण असमीचीन है। गोगा जी अपने पिता की सपत्ति के अधिकारी हैं। उनके मौसेरे भाई अपनी मौसी यानी गोगा की माँ से कहते हैं कि हमें आपने पाला-पोसा है। हम आपके पुत्र ही हैं जैसे गोगा जी हैं अत: सपत्ति में से हमें भी अपने पुत्र के बराबर अधिकार दिलाइये। गोगा जी की माँ इस बात के लिए प्रस्तुत हैं। पर गोगा जी तय्यार नहीं—अत: दोनो मौसेरे भाई मुसलमान राजा की शरण लेते हैं। यहाँ पर यह बात स्पष्ट है कि मौसेरे भाइयो का गोगा जी की सपत्ति में से हक चाहना अनुचित है। गोगा की माँ को भी इसके लिए प्रस्तुत नहीं होना चाहिये और कोई शासक भी इस अनुचित माँग के लिए यथा समय गोगा जी पर चढ़ाई नहीं करेगा। अत पूर्वसत्त जी का दिया हुआ कारण उचित विदित होता है। गोगा जी को नाना जी की सपत्ति अधिकार में मिली। नाना जी ने गोगा जी को पूरा राज्य सौंप दिया और अपनी छोटी लड़की के पुत्रो को वंचित रखा। नाना जी की मृत्यु के उपरान्त अर्जु न-सर्जु न मौसेरे भाइयो ने अपने हक का गोगा जी पर दावा किया जो उनके अपने युग की दृष्टि से उपयुक्त था। गोगा जी ने इसे अस्वीकार किया यह गोगा जी की दृष्टि से भी समुचित था। गोगा जी की माता की स्वीकृति अर्जु न-सर्जु न के पक्ष में भी नैतिक दृष्टि से ठीक बैठती है। मुसलमान शासक को भी अर्जु न-सर्जु न का पक्ष अनुचित नहीं प्रतीत हुआ होगा। गोगा जी की मा को अर्जु न-सर्जु न का मारा जाना भी इसलिए अधिक अखरा होगा कि उनका हिस्सा भी हम लोगों ने हड़प लिया है, और उन्हें मृत्यु के घाट भी उतार दिया। बहिन के पुत्रो पर ममता का यह रूप अनुचित नहीं।

यह घटना पृथ्वीराज चौहान से पूर्व की भी हो सकती है, कम से कम पृथ्वीराज रासो के वर्त्तमान रूप में आने से पूर्व की तो अवश्य है, तभी इसे] पृथ्वीराज चौहान से जोड दिया गया है—चौहान और मुसलमानी आक्रमण इन दो बातो के आधार पर ही ऐसा हुआ है। जयचन्द और पृथ्वीराज को इसी कारण मौसेरे भाई बना दिया गया है, और जयचन्द ने मुसलमानो को भारत पर चढाई करने के लिए निमंत्रित किया, इसका समाधान कर दिया गया है। इस सम्बन्ध में अभी और अधिक ऐतिहासिक अनुसंधान की आवश्यकता है।*

१ घोडे की कहानी

२ गूगा के जन्म की कहानी—जिसके साथ गूगा के परिवार के लोकवार्ता विषयक पचपीरो के जन्म की बात भी है।

३ वासुकि नाग अथवा नागो से सम्बन्ध की कहानी

४ सिरियल से विवाह की कहानी

५ मृत्यु के उपरान्त भी सिरियल से मिलते रहने की कहानी

ये सभी लोकवार्ता मे जोडी गयी हैं। इसके लोकवार्ता के रूप और स्रोत पर ऊपर यथास्थान विचार हो चुका है।

---

*महाभारत में कौरव विराट-नरेश की गायें घेर ले गये थे। अर्जुन ने उन्हें छुडाया था। गोगा के वृत्त से इस घटना में साम्य है।

परिशिष्ट

१—गुरु गुग्गा के पाखण्ड में बौद्ध अवशेष

ऊपर इस संबंध में संकेत किया जा चुका है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि—

(१) गुरु गुग्गा के जीवन-वृत्त में बुद्ध-जीवन-कथा के अवशेष विद्यमान हैं

(२) इस पाखंड के अनुष्ठान की मूल आत्मा का सम्बन्ध बौद्ध श्रमण चिकित्सा पद्धति से है। उसके अवशेष दिखायी पड़ते हैं।

(३) पाखंड के जागरण अनुष्ठान में प्रयोग में आने वाले पट का प्रयोग बौद्ध पट-चित्रों की परंपरा में है।

(४) इन मूल तत्त्वों के साथ पट में काम आने वाले कला अभिप्राय भी बौद्ध अवशेषों की शृंखला सिद्ध करते हैं। इसे ही यहाँ देखना है। गुरु गोगा जी के अनुष्ठान में काम आने वाले पट-चित्र में पशु और चक्र अवश्य होते हैं।

जाहरपीर चदोवा (सीरौठी)
चित्र सं० १

इस पशु आवृत चक्र का मूल हमें अशोक-चक्र में दिखायी पड़ता है। अशोक स्तम्भ का ऊपरला चक्र पशुओं की एक पंक्ति के बीच में स्थित होता है।
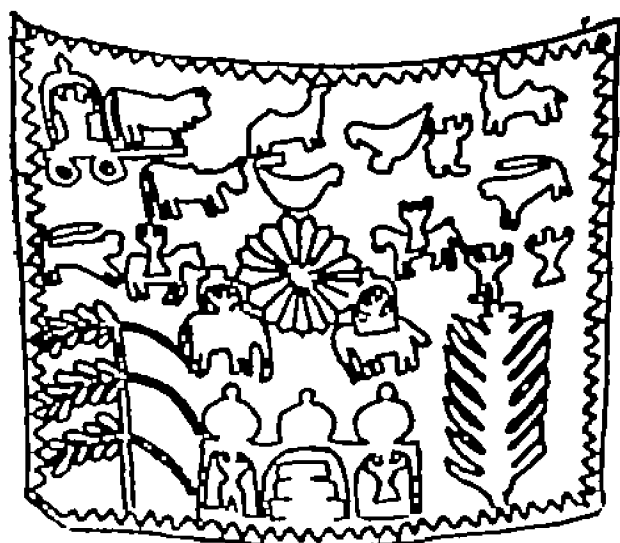
यह धर्मचक्र है जिसका उपयोग भी तो भारत के सभी धर्मों में है। गीता में धर्मचक्र का उल्लेख कृष्ण ने किया है। जैनों के आयाग पटों में यह विद्यमान है पर

जो कार्य यह धर्मचक्र बौद्ध धर्म में करता है, वह अन्य किसी धर्म म करता नही विदित होता ।

जैन आयागपट से—चित्र स० ४

बौद्ध-धर्म म' जब भगवान बुद्ध की मूर्ति या चित्र बनाने की प्रथा नही थी, उस समय वेदिका को या तो शून्य रखा जाता था और उस शून्यता से बुद्ध की सत्ता प्रकट की
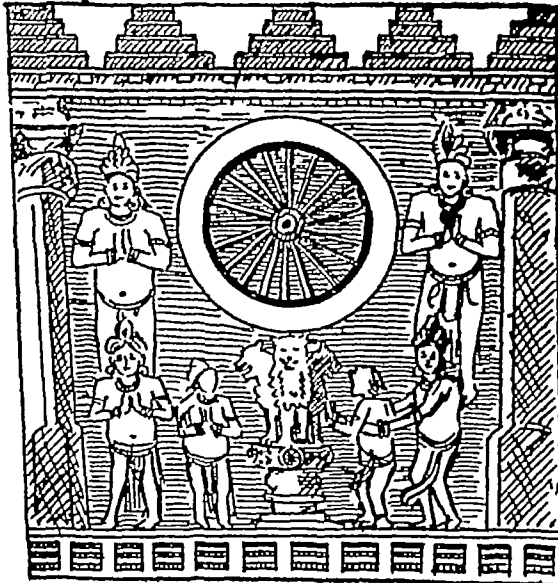
एक बौद्ध शिल्प
चित्र स० ५

जाती थी, या उसके स्थान पर 'चक्र' प्रस्तुत किया जाता था। चक्र वहाँ बुद्ध का ही पर्याय हो गया था। यह महत्व चक्र को अन्यत्र नही मिला। [दे चित्र १]]

गूगा-पट में चक्र ये दोनो धर्म प्रकट करता है—यहाँ चक्र धर्मचक्र भी है और गूगा का प्रतीक भी

इस चक्र के जैसे बौद्ध प्रतीक के रूप में दो प्रकार मिलते है एक २४ अरो[1] वाला और दूसरा बत्तीस अरो वाला[2] वैसे ही गूगा सम्प्रदाय में हमें इसके दो रूप मिलते है।

अशोक चक्र
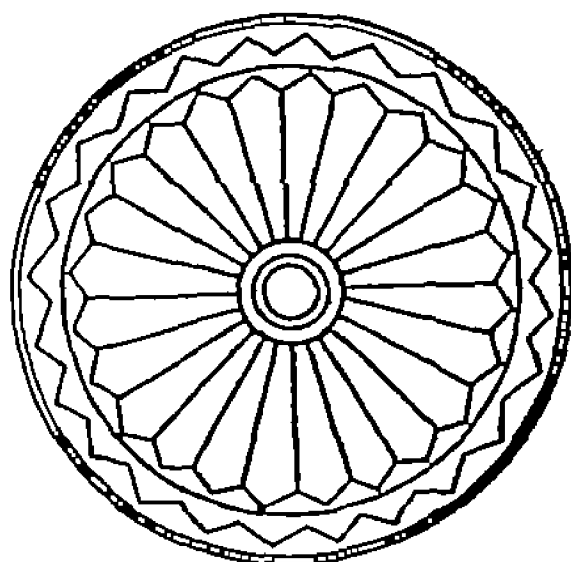
चित्र १

मथुरा वाले गूगा पट में [देखिये चित्र स २] १२ अरे है। आगरा वाले में [देखिये चित्र स ७] १६ यद्यपि १६ अरे जैन आयाग पट में मिलते हैं [देखिये चित्र संख्या ४] किन्तु जैन चक्र का समस्त अभिप्राय बौद्ध अभिप्राय से भिन्न है। १२ अरे वाले चक्र के साथ पशुओ की पंक्ति का अभिप्राय है। आगरे वाला चक्र १२ के आगे १६ के द्विगुणों से १२

---

१ ये बौद्ध धर्म के २४ तत्वो के प्रतीक है। २ अतियो की वर्जना मध्यम तथा तप ४ आर्य सत्य ८ अष्टांगिक मार्ग तथा १ शील=२४ (डा राधा कुमुद मुकर्जी अमृत बाजार पत्रिका मई ११ ५६ के रविवासरीय संस्करण में 'अशोक चक्र' पर निबंध)

२ ये ३२ अरे महापुरुषों के बत्तीस लक्षणो के प्रतीक माने गये है इनका उल्लेख दीर्घनिकाय विसुद्धिमग्ग आदि में हुआ है। [डा राधाकुमुद मुकर्जी उपरोक्त निबंध]

का इगित करता प्रतीत होता है। और पशुओ की अवस्थिति आगरावाले चक्र को वुद्ध-परपरा में ही पोषित करती है।
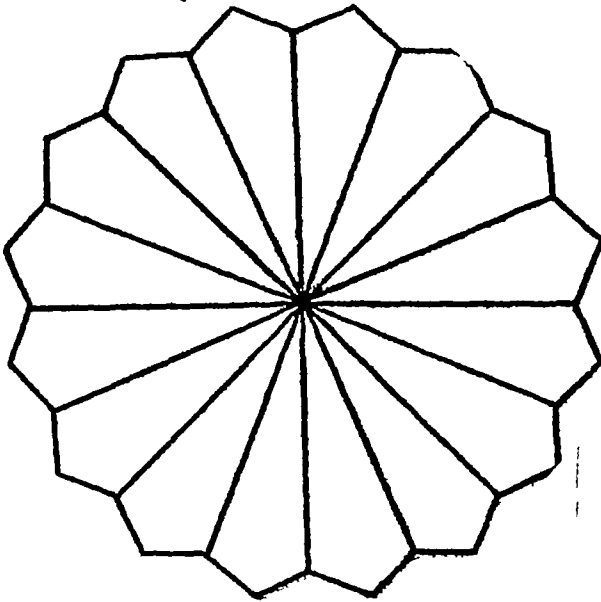
आगरा-पट का चक्र—चित्र सख्या ७

(५) इन्ही के साथ नाग-तत्त्व की विद्यमानता भी इस पापडको बौद्धो के निकट बताती है। नागो के सबध में ऊपर विस्तृत चर्चा हो चुकी है। गूगा जी नाग थे, यह भी बताया जा चुका है। मदौर में जो गूगा जी का शिल्प-चित्र दिया गया है, उसमें उसी शैली का उपयोग किया गया है जो बौद्ध कला में मिलती है। यहाँ एक चित्र मदौर के गूगा-शिल्प-रेखन का दिया गया है (देखिये चित्र स० १), और दूसरा एक बौद्ध-कला का नमूना है। (देखिये चित्र स० ८]

बौद्ध शिल्प नागो की वुद्ध पूजा—चित्र सख्या ८

दोनों की तुलना से स्पष्ट विदित होता है कि नागों का मूर्तांकन करने के लिए बौद्धशिल्प ने जो शैली अपनायी थी कि सिर पर सर्पफण दिखाया जाय उसी का उपयोग गुग्गा जी के मूर्तांकन में किया गया है।

गुग्गा जी के पंजाब में स्थित एक मंदिर का उल्लेख ऊपर किया गया है जिसमें भूमि में से निकलता एक सर्प बनाया गया है गुग्गा जी की मूर्ति के सामने। यह अभिप्राय भी उक्त बौद्ध चित्र सं० ८ में भीत में से निकलते हुए सर्प में दिखायी पड़ता है— ये कला-अवशेष भी बौद्ध प्रभाव के द्योतक हैं और आज भी इस संप्रदाय के द्वारा बौद्ध-धर्म के प्रभाव के रूपान्तर की कहानी कहते हैं। सर्प पूजा में पत्थर में टंकित नाग चढ़ाये जाते हैं जिन्हें नाग-कल कहते हैं। इनमें नागों के साथ चक्र भी रहता है। नाग और चक्र का यह संबंध भी ध्यान देने योग्य है।

नाग-कल—चित्र संख्या ९

नाग-पूजा का विश्व व्यापी रूप
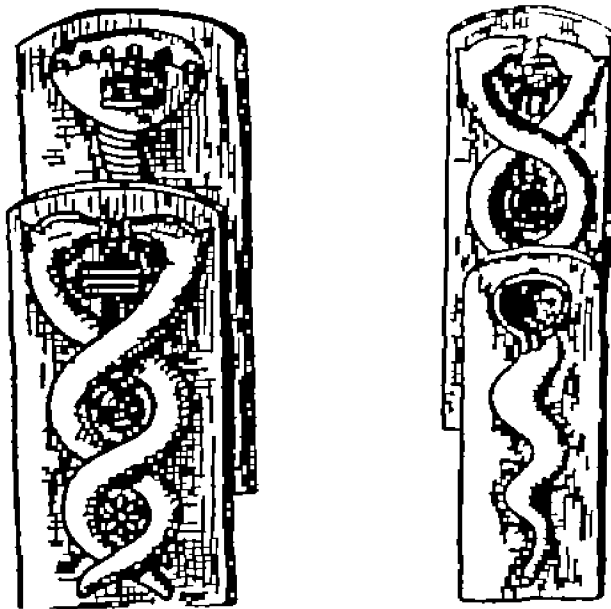
यूनान में माइसीनियन समय से क्रिश्चियन समय तक नाग-पूजा होती रही है।

१ एपिरस में अपोलो का एक पवित्र शाद्वल था। इसमें कुछ सर्प रहते थे जिन्हें डेलफी के अहि की संतान माना जाता था। इनकी देख-रेख एक पुजारिन करती थी। केवल वही उस बाड़े में जा सकती थी जिसमें सर्प रहते थे। यह pre-deistic नाग-पूजा का ही अवशेष था डेलफी से तो इसका संबंध आरोपित कर दिया गया है।

२ क्रोनोस की पहाड़ी पर, ओलिम्पिया के कुञ्ज के सामने एलीथ्यिया का मंदिर था। इसमें सोसिपोली नाम का नाग रहता था। यह राष्ट्र-रक्षक माना जाता था। लोकवार्ता यह है कि एलिस पर जब शत्रु ने आक्रमण किया तो एक स्त्री गोद के बच्चे को लेकर

दोनो सेनाओ के बीच में बैठ गयी। उसका बच्चा तुरत सर्प बन गया। शत्रु उसके भय से भाग खडे हुए। वह सर्प पास ही बिल में घुस गया। उसी स्थान पर यह मदिर बनाया गया।

३ हेरोडोटस के एक अवतरण में ऐरेकथीअस के मदिर में रहने वाले नाग का उल्लेख है। फारसवालो ने जब एथेन्स पर आक्रमण किया था तो ये नाग देवता लुप्त हो गये थे। इस घटना से नगर-निवासियो ने नगर छोडने का आदेश ग्रहण किया था। इस नाग देवता की भी पूजा की जाती थी। इस नाग देवता मे एरिकथीनियोस की आत्मा मानी जाती थी।

४. एरिकथोनियोस भूदेवी का पुत्र था, कुछ के मत से एथेना का पुत्र था। यह सर्प के रूप में पैदा हुआ था। यह भी कहा जाता है कि जन्म पर इसे एक सर्प-युग्म ने पाला-पोसा था।

५ नीलस्सन (Nilsson) नाम के विद्वान ने सिद्ध किया है कि वीर-पापडो (Hrco-cults) का जन्म मृतक-पूजा से हुआ है—और ये वीर, सर्प के रूप में प्रकट होते थे।

६ प्लुतार्क ने बताया है कि प्राचीनो की दृष्टि में वीरो का अन्य जीवो से अधिक सर्प से घनिष्ठ सबध रहा है। गिद्धो से क्लियोमीनीज की लाश की रक्षा एक सांपने की थी जो उसकी लाश पर गुञ्जलक मार कर बैठ गया था।

७ क्यक्रियस, सलामिस के युद्ध से भाग खडा हुआ तो उसे ऐलियूसिस मे डिमेटेर ने शरण दी। यहाँ वह सर्प के रूप में डिमेटेर का परिपार्श्वक रहा। डिमेटेर भी माइनोअन सर्प-देवी है।

८ यूनान में आज भी वे बालक, जिनका बप्तिस्मा नही हुआ होता, 'ड्रकोइ' (Drokoi) कहलाते है—जिसका अर्थ है 'सांप'—क्योकि यह माना जाता है कि ये कभी भी सांप बनकर लुप्त हो सकते है। इसमें आलिम्पिया के बालक की घटना की स्मृति आज तक सुरक्षित है। (द० ऊपर स० २)

९. प्राचीन मिस्र में भी सर्पों की ऐसी ही मानता थी। सर्पों को मृतात्माओ का अवतार सर्वत्र माना जाता है।

१० पश्चिमी अफ्रीका में इस्सापू (Issapoo) के नीम्नो कपेल्लो अहि (Cobra-Capello) को अपना सरक्षक देवता मानते है। इस सांप का चर्म लेकर वे एक बडे वृक्ष से लटका देत है। उसकी पूछ नीचे की ओर रहती है। ऐसा वर्ष में एक बार उत्सव के साथ होता है। इस लटकते चर्म के नीचे होकर उस वर्ष में हुए बच्चे निकाले जाते हैं। उनके हाथ पूँछ से लगाये जाते है।

११ सेनेगम्बिया में सर्प में यह विश्वास है कि बच्चा पैदा होने के बाद आठ दिन के अन्दर एक सर्प बच्चे को देखने आता है।

१२ प्राचीन अफ्रीका में एक सर्प-जाति के लोग अपने बच्चो को सांप के सामने रख देते थे, उनका विश्वास था कि उनके अभिजात बालक को सांप हानि नही पहुँचायेगा।

१३ ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका के 'आकिकयू' एक नदी के सर्प की पूजा करते हैं। और इनके यहाँ यह प्रथा है कि कुछ वर्षों के अन्तर से वे इस सर्प-देवता का अपनी कुमारियों से विवाह कर देते थे।

१४ तातार देश की एक कविता में एक ऐसी जादूगरनी का उल्लेख है जिसके साथ उसके जूते के तले में रहने वाले एक सात फनवाले साँप में रहते थे।

१५ मिस्र में सृष्टि-कर्त्ता रे (Re) से पूर्व आदिकाल में चार मेंढकों और चार सर्पों का अस्तित्व माना जाता है। इनसे 'रे' की उद्भावना हुई। 'रे' सूर्य का समूह, यही अपोफिस नामका सर्प माना गया है, जो अंधकार का प्रतीक है। सूर्य को नाव में बैठकर यात्रा करनेवाला माना गया है। इसके मार्ग में एक सर्प इस पर आक्रमण करने और निगल जाने के लिए बैठा रहता है। उसे मार कर ही मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

१६ बेबीलोनिया में पृथ्वी की प्राकृतिक उत्पादिका शक्ति को सर्प के रूप में पूजा जाता था।

बेबीलोन के गिलगमिश पुराण में उल्लेख है कि जब गिलगमेश उत्नपिश्तिम से विदाई की भेंट में अमरौती का पादप लेकर लौट रहा था तो मार्ग में एक तालाब के पास स्नान करने लग गया। उस अमरौती को उसने किनारे पर छोड़ दिया। इसी बीच में यह साँप आकर उस अमरौती को खा गया तभी से साँप अमर हो गया।

१७ अत्यन्त प्राचीन काल की मृतक पुरुषों को समाधियों से जो कुछ शिल्प के अवशेष मिले हैं उनमें सर्प को मनुष्य का ही दूसरा रूप माना गया है। मनुष्य का एक रूप तो मानवी रहा दूसरा सर्प का। इस पर जेम हैरिसन ने भली प्रकार विचार किया है।

३—वैदिक सर्प तथा सर्प और आर्य

वेदों मे वृत्र का उल्लेख है। वृत्र अहि है। यह वृत्र शब्द ऋग्वेद में कई स्थलों पर बहुवचन में आया है जैसे ऋ० १-२१ ६ ६ ११ १ ७-१२ ४ ७-८३ ६ ९ ८८ ४ १०-८३-७. यहाँ पर वृत्र शब्द के दो अर्थ हो सकते हैं १ बादल-समूह २ वृत्र नाम की जाति के लोग। इन वृत्रों का उल्लेख कहीं दस्युअसुरों के साथ हुआ है कहीं दासों और अन्य आर्यों के साथ हुआ है। दस्युओं के साथ कहीं कहीं इन वृत्रों को अहि भी कहा गया है। इन प्रमाणों के आधार पर डा० अविनाश चन्द्र दास ऐम ए पी-ऐच डी इन्हें सर्पपूजक जाति मानते हैं।

ऋग्वेद म अर्बुद काद्रवेय सर्प का उल्लेख है। पंचविंश ब्राह्मण में एक सर्पसत्र का उल्लेख है उसमें एक अर्बुद ऋषि ग्रावस्तुत पुरोहित थे। इन अर्बुद काद्रवेय को ऐतरेय ब्रा० (६ १) तथा कौषीतकी ब्राह्मण (२९ १) में मंत्र-द्रष्टा माना गया है।

ऋग्वेद और तद्विषयक ब्राह्मणों के अध्ययन से विदित होता है कि ऋग्वेद काल में दो वर्ग थे—एक वृत्र के अनुयायियों का। ये सर्पपूजक थे। वृत्र को ये देव कहते थे। दूसरे इन्द्र के अनुयायियों का। इन दोनों में संघर्ष था। वृत्र जाति पूर्व पक्ष में थी इन्द्रानुयायी उत्तर पक्ष में। इन्द्र ने वृत्र का संहार किया। वैदिक काल में वृत्र सर्प और अहि शब्द एक ही जाति के नाम थे यही महाभारत काल में 'नाग'

कहलाये। गरुड भी एक जाति थी। गरुड़ और सर्पों में परस्पर युद्ध छिडा रहता था। महाभारत में उल्लेख है कि गरुड ने नाग या सर्प जाति को खदेड कर एक अत्यन्त ही सुदर द्वीप में पहुँचा दिया था, और ये सर्प वही वस गये थे।

ऋग्वेद में सर्पराज्ञी नाम की सर्पजाति की ऋषिमहिला का उल्लेख है। इसने सूर्य पर पूरा सूक्त (ऋ० १०,१८६) ही रचा था। शतपथ ब्राह्मण में पृथ्वी को ही सर्पराज्ञी वताया है। यही ऐतरेय ब्राह्मण ने वताया है।

महाभारत से विदित होता है कि यायावर जाति के ऋषि जरतकारु ने वासुकि नाग की वहिन से विवाह किया था। इनका पुत्र आस्तीक था।

पणिस अथवा वणिक जाति के लोग भी वृत्र पूजक और वृत्रानुयायी थे। इन्हें भी आर्यों ने खदेड दिया था[1]।

हरिवश में उल्लेख है कि ऋषि वशिष्ठ के परामर्श से राजा सगर ने शक, यवन, काम्वोज, परद, पल्लव, कोली, सर्प, महिषक, दर्व, चोल, कोल, आदि जातियो से वेदाध्ययन का अधिकार छीन कर देश से वहिष्कृत कर दिया था।

इन सव प्रमाणो से विदित होता है कि वैदिक काल में सर्प-पूजा प्रचलित थी। सर्प-पूजको से आर्य घृणा करते थे। आर्यो और सर्पों में ब्राह्मण-काल में सधि हो गयी। सर्प-जाति के लोगो ने भी वेदो की ऋचाओ के निर्माण में भाग लिया। किन्तु ऐसा विदित होता है कि यह सधि अधिक नही ठहर सकी। आर्य लोगो की सर्पों के प्रति घृणा अन्तर्निष्ठ थी। सभवत सोमरस के लिए ही इन्हें सर्पों से सधि करनी पडी। यह वात ध्यान देने की है अर्वुद काद्रवेय सर्प के मत्र 'सोम' सवधी है। सर्पराज्ञी के सूक्त 'सूर्य' विषयक है। क्योकि सोम को सर्पों द्वारा रक्षित कहा गया है। वाद में आर्थिक कारणों से इसी सोम के लिए सर्पों का गरुडो से सघर्ष हुआ। आर्यों ने गरुडो का साथ दिया। सर्प खदेड दिये गये। गरुड ने सोम पर अधिकार किया। ये सर्प नाग जाति से मिल गये। इन सर्प-नागों से आर्यों का भयकर युद्ध नित्य होता रहा। जैसे नाग-यज्ञ का जन्मेजय ने आयोजन किया था, वैसे कई यज्ञ भारतीय इतिहास में हुए है।

यहाँ पर यह सिद्ध करने से लिए कि इतिहास की पुनरावृत्ति होती है—ऋग्वेद से एक मत्र का भाव दिया जाता है—यह मत्र ऋ० ७-२१ का ३-७ है इस मत्र के एक अश का भाव यह है—

"तैंने अपनी शक्ति से वृत्र का सहार किया है। युद्ध में कोई शत्रु तेरा घात नही कर सका। पहले देवता तेरी दिव्य शक्ति के सामने झुक गये है, उनकी शक्ति तेरी दिव्य शक्ति से हार गयी है, उनकी शक्तियाँ तेरे महत्तम वल के सामने धूल चाटने लगी है।" आदि।

इससे विदित होता है कि वैदिक काल में इन्द्र ने वृत्र अथवा सर्प जाति को परास्त किया, सर्प जाति के लोगो ने इन्द्र के समक्ष हार मानी। सर्प के शक्ति-केन्द्रो में इन्द्र के शक्ति-केन्द्र स्थापित हुए।

---

१ यही कारण है कि वणिक जाति में आज भी गुरु गुग्गा या जाहर पीर की विशेष मान्यता है। दे० 'अग्रवाल जाति का इतिहास' विद्यालकार

वैदिक इतिहास का यह पूर्व युग हुआ। बाद में कृष्ण ने इन्द्र को। इसी प्रकार परास्त किया जिस प्रकार इन्द्र ने सर्प-जाति को किया था। यों कृष्ण ने नाग-जाति को भी व्रज से निष्कासित कर दिया था।

किन्तु सर्प-नाग जाति समाप्त नहीं हो सकी। जन्मेजय के भयंकर नाग-यज्ञ के उपरांत भी यहाँ नागों और सर्पों की बहुलता रही। नागों और सर्पों को सम्पूर्ण विनाश से आस्तीक ने बचाया।

और इतिहास का एक और पृष्ठ कहता है कि भगवान बुद्ध के समय में नाग फिर उतने ही प्रबल हो गये थे क्योंकि लोक-स्तर पर भगवान बुद्ध ने नागों को उसी प्रकार परास्त किया है, अपनी शक्ति के तेज से जैसे इन्द्र ने वृत्र को किया था। और बुद्ध ने समस्त नाग-केन्द्रों पर अधिकार स्थापित कर लिया। यों परास्त होकर नाग बुद्ध के अनुयायी हो गये। नागों और बौद्धों का घनिष्ठ संबंध हो गया।

और ये नाग गुरु गुग्गा के समय तक भी किन्हीं किन्हीं क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बनाये रहे। लोकवार्त्ता में नागपूजा गुरु गुग्गा अथवा जाहरवीर के साथ ही जीवित नहीं वह स्वतंत्र रूप से जीवित है और फल-फूल रही है। व्रज में 'नागपंचमी' सर्वत्र मनायी जाती है। पूर्व में मनसा-पूजा इसी नाग अथवा सर्प पूजा का ही एक रूप है। गुरु गुग्गा अथवा जाहरवीर का संबंध भी नाग पूजा से है।

डा० *अविनाशचन्द्रदास* ने यह सिद्ध किया है कि सर्प या नाग सप्तसिंधु की भूमस्थ आर्यजाति ही थी। डा० अविनाश ने कहीं कहीं इन्हें जंगली जाति माना है जो सोम बेचने पहाड़ों से आती थी जिसे इन्द्रानुयायियों ने लकड़ी की सहायता से निकाल बाहर किया था। उन्होंने इनको अवैदिक आर्य बताया है। प्रमाण में ये तर्क हैं

१ कई सर्प जाति के ऋषि मन्त्रदृष्टा हैं। अर्बुद काद्रवेय सर्पराज्ञी जरत्कार आदि।

२ हरिवंश में सर्प जाति को क्षत्रिय माना गया है (हरिवंश अध्याय २)

जहाँ तक पहले प्रमाण का संबंध है, यह ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि वह यहाँ की सोमाधिकारी जाति से समझौते का परिणाम था। यह बात भी दृष्टव्य है कि अर्बुद ऋषि को सर्प-यज्ञ का ही पुरोहित बनाया गया है। उन्होंने 'सोम' पर ही सूक्त रचना की। इससे केवल यही सिद्ध होता है कि वैदिक आर्यों ने सर्पों का सम्मान किया। हरिवंश का प्रमाण बहुत शिथिल है। उसमें जिनको क्षत्रिय गिनाया गया है वे सभी नृविज्ञान से आर्य नहीं हो सकते।

हमने आरंभ में बताया है कि नाग या सर्प 'टोटेम' या 'तत्सम' होना चाहिये। वैदिक आर्य तत्समीय नहीं थे अतः जो विद्वान सर्पों को आर्य जाति का मानते हैं वे सर्प को तत्समीय नहीं मान सकते।

डा० मार्क शाम शास्त्री आर्य नामों में तत्सम के अवशेष मानते हैं। और मैक्डानल कश्यप (कछुआ) मत्स्य (मछली) अज (बकरी) शुनक (कुत्ते) कौशिक (उल्लू) आदि जातीय नामों में तत्सम मानते हैं। हापकिन्स तथा ब्लूमफील्ड नहीं मानते।

ब्लूमफील्ड ने लिखा है।

"Totemism is founded on the belief that the human race, or, more frequently, that given clans or families drive their descent from animals totemic names like 'Bear' and 'Wolf' carry traces of this sort of belief into our time This particular question is a splendid theme, small of universal ethnology, but I have never been able to discover that it has any considerable bearing upon the ancient religion of India The many hints at its possible importance should be substantiated by a larger and clearer body of facts than seems at present available"

(as quoted by Dr Abinas Chandra Das in Regvedic Culture P 103)

ऐसे ही कुछ तर्कों से विद्वानो ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की थी कि यूनान म 'तत्वम' का अस्तित्व कभी नही था। किन्तु टामसन ने अपनी हाल की एक पुस्तक में 'सर्प', को ही मुख्य आधार बनाकर यह दिखाया है कि वहाँ 'तत्वम' का तत्व था। वह तर्क भारत के इतिहास पर भी लागू होता है। 'सर्प' की जैसी मान्यता और सर्प जाति का साँपो से सबध, सर्प-पूजा की स्थिति, ये सभी बातें निर्विवाद सिद्ध करती है कि 'सर्प जाति और सर्प' का परस्पर 'तात्वमीय' (Totemic) सबध था। अत डा० अविनासचन्द्रदास की भी मान्यता इन्ही के तर्कों से ठीक नही ठहरती। सर्प जाति को सर्प के स्वभाव की तुलना से नाम दिया गया होता तो वह जाति सर्प-पूजक न होती। सर्प-पूजा तत्वमीय स्थिति का एक प्रमाण है।

यह सर्प पूजक नाग जाति पजाव में किसी न किसी रूप में अपना अस्तित्व बनायें हुए थी, यह गोल्डनवाउ में फ्रेजर महोदय ने बताया है। राजस्थान में इस जाति का अस्तित्व भी होना चाहिये, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा बगाल-आसाम में इसके पर्याप्त प्रमाण हैं।

जोगी.

हिन्दी विद्यापीठ ने दो जोगियो से 'जाहरपीर' का गीत और सोहिले आदि सग्रह किये हैं। एक लोहवन, मथुरा के मट्टानाथ हैं। दूसरे आगरे में अछनेरे के पास के गाव 'सीरोठी' के सूखानाथ हैं।

सूखानाथ ने बतलाया कि वह बाबा गोरखनाथ के चला औघडनाथ की शिष्य-परपरा से सबधित है। औघडनाथ बाबा गोरखनाथ के चौदह सौ चेलो में से एक थे। औघडनाथ के सबध में सूखानाथ तो कुछ नही बता सके, पर डा० रागेयराघव ने अपने प्रबध म लिखा है

"आगरे के श्मशान म कुछ दिन आकर ठहरने वाले, भैरव का चोला धारण करने वाले, लक्कड बाबा ने मुझ बताया कि वे आई पथी थे। पूछने पर कहा कि

लोकवार्ता गीत

जाहरपीर

[गायक लोहवन के मट्टानाथ]

पट्टा नाच

जाहरपीर की कथा का विश्लेषण

जाहरपीर पर अब तक जो विचार हुआ है, उससे स्पष्ट है कि वह विविध सम्प्रदायो और मतो के ऐक्य से सगठित पापड है। उसकी कथा पर अभी तक जितना प्रकाश डाला गया है, उससे यह प्रकट होता है कि वह वीर पूजा का अधिकारी व्यक्तित्व रखता है, और उसकी गाथा जैसे वीर गाथा हो। किन्तु यहाँ आवश्यक यह है कि इस कथा का विश्लेषण और किया जाय।

प्रथम दृष्टि से ही यह विदित होता है कि इस कथा में निम्न तन्तु स्पष्ट हैं—

१ जाहरपीर की जन्म-कथा।
२. जाहरपीर की विवाह-कथा।
३ जाहरपीर की युद्ध-कथा।
४ जाहरपीर की निर्वाण-कथा।
५ सिरिअल की निर्वाण-कथा।

पहली कथा मे निम्न अभिप्राय है

१. राजा रानी संतानाभाव से पीडित—

लोक कथाकार ने इसमें कई अभिप्रायो को जोड कर इस सतानाभाव की स्थिति को अत्यत असह्य दिखाया है

उसने १ सतान की आवश्यकता दिखाई है।
२ ज्योतिषियो पडितो से विधियाँ पूछी हैं।
३ वाग लगवाया है।
४ वाग के फल फूल राजा के देखने से कुम्हिलाते हैं। रानी उन्हें वासी वताकर समाधान करती है।
५ वाग में राजा जाता है तो वाग सूख जाता है।
६ उसका साढू उसे अपने महल में नही आन देता।

(३–६: इन तत्वो से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा ही भाग्यहीन है।)

७ राजा राजपाट छोड कर चल देता है, वाछल साथ जाती है।
८ अन्तत राजा लौटता है।

२ संतान-प्राप्ति के लिए जोगी-सेवा—

१ गोरखनाथ के आने से वाग हरा हो जाता है।
२ वाछल गोरख की सेवा करती है।
३ पहली सेवा का फल न मिलने पर फिर सेवा करती है।

३. जोगी से फल प्राप्ति—

१ वाछल की पहली सेवा का फल धोखा देकर उसकी वहिन काछल ले जाती है।

२ बाछल को बाछल समझ गुरु उसे ही फल देते हैं।
३ बाछल को दूसरी सेवा पर एक जौ का गूगुल मिलता है।

४ फल का उपयोग—

१ काछल दोनों फलों को अकेली खाती है।
२ बाछल गूगुल या जौ को पांच व्यक्तियों में बांट देती है। वे पांच हैं

१ यह स्वयं।
२ घोड़ी।
३ चमारिन।
४ महतरानी।
५ ब्राह्मणी।

५ बाछल पर लांछन—

१ बाछल गर्भवती।
२ ननद से बिगाड़।
३ ननद द्वारा बाछल के चरित्र पर लांछन।

६ बाछल का निष्कासन—

१ देवर बाछल को मारने का प्रयत्न करता है पर तलवार नहीं चलती।
२ निष्कासन।

७ मार्ग में बाधा—

१ बाछल के बैल को सर्प काटता है।
यह सर्प स्वयं गर्भ स्थित जाहरपीर की चेष्टा से आया है।
२ पिता और ससुर लेने आये
जाहर ने दोनों को करामात दिखायी जिससे दोनों बाछल को लेने आये।

८ गृह प्रतिवर्तन—

बाछल सासुरे आई।

९ संतान प्राप्ति—

बाछल के जाहरपीर हुआ अन्य
चारों के भी सन्तानें हुईं ये पच पीर कहलाये।

इस कथानक में कुछ अभिप्राय को छोड़ कर शेष सभी सामान्य लोक-कथाओं के तत्व हैं जो अन्य प्रसिद्ध कथाओं में भी मिल जाते हैं। सन्तानाभाव का अभिप्राय राम के पिता-माता से भी संबंधित है। वहाँ योगी नहीं ऋषि आया है। ऋषि यज्ञ कराता है उससे यज्ञ पुरुष ने निकल कर खीर दी है। जिस प्रकार खीर तीन रानियों में बाँटी गयी है उसी प्रकार यहाँ गूगल पांच में बाँटा गया है। ननद की शिकायत का तत्व लोक प्रचलित सीता वनवास

की कथा में भी है। यह लाछन की बात और लाछित को मारने या निकालने की वात सीता वनवास में भी है और राजा नल की माता मभा से तो एक दम बहुत मिलती है। निष्कासन के उपरात का तत्व जाहरपीर में अनोखा है। पीर का गर्भ में से जाकर वासुकि को विवश करना, अपने नाना और बाबा को विवश करना। ये इस कथा के अनोखे तत्व हैं।

दूसरे कथाश के अभिप्राय ये हैं--

१ स्वप्न में सिरिअल के दर्शन और आधी भावरें।
२ सिरियल की खोज में अकेले प्रस्थान।
३ गुरु गोरखनाथ से सिरिअल का पता।
४ घोडे पर चढ कर समुद्र तट पर वैमाता को जूडी बाँधते देखना।
५ घोडे ने सिरिअल के देश में पहुँचाया।
६ सिरिअल के बाग मे सिरिअल की शैया पर शयन।
७ सिरिअल का आना, मिलन, सार-पाँसे।
८ सिरिअल के पिता ने विवाह का प्रस्ताव ठुकराया।
६. जाहर का वन में जाकर वशी वजाना, नागो तक को मुग्ध करना।
१० वासुकि ने तातिग नाग को सहायता के लिए भेजा।
११ तातिग ने सिरिअल को स्नानोपरान्त डसा।
१२ तातिग सपेरा वन राजा से वचन लेकर कि सिरिअल का विवाह जाहर से होगा, सिरिअल को ठीक कर देता है।
१३ एक अन्य दूलह का भी आगमन और जाहर का भी।
१४ दोनो बरातो का युद्ध।
१५ दैवी हस्तक्षेप।
१६ सिरिअल से विवाह।

इस समस्त कथाश में कुछ भी असामान्य तत्व नही, सभी अभिप्राय अत्यत प्रचलित लोक-प्रेम-कथाओ में मिल जाते हैं।

तीसरे कथाश में ये अभिप्राय हैं--

१ वाछल की बहिन के लडकों ने राज्य में से हिस्सा मागा।
२ वाछल हिस्सा देने को तैयार।
३. जाहरपीर ने अस्वीकार कर दिया।
४ क्रुद्ध भाई मुसलमानी शासक को चढ़ा लाये।
५ सिरिअल का हठ पूर्वक झूलने जाना और अपमानित होना।
६ सिरिअल ने ही जाहर से साक्षात्कार की विधि बतलायी।
७ सेना ने गायें घेर ली।
८ जाहर ने गायें छुडाने के लिए युद्ध किया और दोनो भाइयो के सिर काट लिये।

गायों के लिए युद्ध ऐसा तत्व है जो अत्यत लौकिक हो गया है, विशेषत राजस्थान

में। पाबूजी ने भी गायों के लिए युद्ध किया है। मुसलमानी बालकों को चढ़ा लाने का भी अभिप्राय इतिहास तथा लोकतत्व दोनों से संबद्ध है।

चौथे कथांश के अभिप्राय हैं—

१ जाहर मा को सूचना देता है कि उसने दोनों भाइयों को मार डाला।
२ मा का क्रुद्ध हो आदेश देना कि वह भ्रातृ-हन्ता उसे मुंह न दिखावे।
३ जाहर का पृथ्वी में समा जाने की इच्छा।
४ मुसलमानियत स्वीकार की।
५ तब पृथ्वी में वह घोड़े सहित समा गया।

चौथा अभिप्राय जाहरपीर के किसी किसी संस्करण में ही है। यह कथांश संपूर्ण ही अनोखा है। साधारणतः लोक में प्रचलित नहीं।

पांचवें कथांश में—

१ सिरियल के वियोग में जाहर प्रेत रूप में ही प्रकट होता है।
२ प्रति रात्रि जब मा सो जाती है तो सिरियल के पास आता है।
३ सिरियल से वचन कि मां से नहीं कहेगी?
४ सिरियल गर्भवती होती है अथवा उसकी सासु उसे सौभाग्य चिह्न धारण किये देखकर संदेह करती है।
५ सिरियल मा से भेद खोल देती है और मा को दिखा देने का वचन देती है।
६ जाहर को पता चल जाता है। नहीं आता।
७ मा का उलाहना।
८ सिरियल काग से संदेश भेजती है। देवी से चौपर खेलता मिलता है जाहर।
९ जाहर सिरियल का निमंत्रण मान लेता है।
१ सिरियल से मिलता है चलने लगता है तभी सिरियल मां को जगाते हुए जाहर को दिखाती है।
११ मां आवाज देती है तभी जाहर सिरियल के साथ अन्तिम रूप से भूमि में समा जाता है।

यह अन्तिम कथांश पुनरुज्जीवन अथवा प्रेत-प्राप्ति का है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट विदित होता है कि समस्त कथा में वास्तविक ढांचा प्रेम गाथा का है।

पहला कथांश प्रायः सभी लोकप्रिय प्रेमगाथाओं में मिलता है। नल-दमयन्ती संबंधी लोक-कथा में भी नल के पिता पिंगल निपुती हैं। उन्हें पुत्र की बहुत कामना है। अन्य अनेक लोक-कथाओं में ऐसा ही उल्लेख है। प्रेम-कथा का नायक असाधारण प्रकार से ही उत्पन्न होता है। जन्म से ही उसे सिद्ध या देवी देवता का पोषण मिलता है।

दूसरा कथांश शुद्ध प्रेम-कथा है। स्वप्न में सिरियल को देखना उसे पाने के लिए चल पड़ना। बाधाएँ, उनका दमन। योगी होना या योगी गोरख की कृपा पाना। देवी

जाहरपीर

गुरू गैला[1] गुर वावरा[1] करै गुरून की सेवा है
गुरू ते चेला अति वडा[2] तौउ करै गुरू की सेवा है
महरी[3] पै वादर ओलर्यौ वरसँ कौढार है
रानी कौ भीजै काचुओ[4], जाहर मिरगुल[5] पाग है

---

१ ये दोनो नाथ गुरुओ के नाम प्रतीत होते हैं गैलानाथ तथा वावरानाथ ।

२ गुरु से चेला वडा माना गया है । इसमें एक सिद्धान्त तो यह विदित होता है कि चेला गुरु का ज्ञान तो प्राप्त कर ही लेता है, अपनी सिद्धि से उसे और आगे वढाता है, गुरु गोरखनाथ और मत्स्येंद्रनाथ की शक्तियो और सिद्धियो पर जव ध्यान जाता है तो विदित होता है कि गुरु गोरखनाथ अपने गुरु मत्स्येंद्रनाथ से बढ़े-चढे थे । उन्होंने गुरु का 'त्रिया-देश' में से उद्धार भी किया था । यह कथन साम्प्रदायिक भावना से भी कहा गया होगा । नाथ-सप्रदाय के प्रवर्त्तक गोरखनाथ हुए । गोरख-सप्रदाय के अनुयायी अपने गोरखनाथ को सवसे वडा मानेंगे ही । अत अपने गुरु को सब से वडा मानकर अपनी भक्ति की सार्थकता प्रकट की और उनका गुरु सव से वडा होते हुए भी अपने गुरु की सेवा करता है, इस कथन से गुरु का शील भी प्रकट किया ।

३ 'महरी' को जगदीशसिंह गहलौत ने गोगाजी का गाँव माना है। पर गोगा जी का गाँव 'ददेरा' है। महरी तो वह स्थान है जो गोगा मेरी या गोगा मेंढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। गोगा का गाँव नोहर तहसील में वीकानेर में है । वही गोगा मेरी या मेंढी है । इस मेरी या मेंढी का शुद्ध रूप 'महरी' हो सकता है। 'महल सुखाइ देउ काचुओ महरी' मरद की पाग, में महरी का अर्थ गायक ने हो मदिर वताया था जो ठीक प्रतीत होता है । मदिर अर्थात् पूजा का स्थान । यह सस्कृत 'मह' शब्द से बना है । (H H Wilson) विलसन महोदय ने अपने कोष में लिखा है मह-r 1st and 10th cls (महति महयति) To revere, to worship, to adore (ह) मह m (-ह) 1 A festival, 2 Light, Lustre, 3 A buffalo 4 Sacrifice oblation f (हा) 1 A Cow 2 A plant 'मह' धातु के जितने भी अर्थ ऊपर वताये गये हैं प्राय 'गोगा महरी' स्थान पर सभी का समावेश मिलता है । यह पूजा का स्थान है। मेला लगता है, वलि से सवध है, गोगा और गोगानो का 'गाय' से सवध है, पशुओ का मेला लगता है, जिनमें गाय का वाहुल्य होता है । गोरखनाथ की समाधि भी गोरख मेढ़ी, गोरख मंढी, गोरख मढी कही जाती है जो 'महरी का ही रूपान्तर है।

४ चोर

५ पाग

फरवा[3] हरदम द्वारा न्यारा
ावै कबर श्रोढै कारा,
। भीतर लडत लडत गज हारे
नागी नगे ई पैरन धाए ।
ल ऊपर जब हरि नाम पुकारे
। बनायौ
ाकरमा रोजु एक नाइ श्रायौ
,दामा के तन्दुल, रुचि रुचि भोग लगायौ
नें डार्‌यौ नगर तमासे श्रायौ
ा भाई, धुर मक्के में जात लगाई
भरथरी
ा बन्द
। नौऊ खड
ान्छा तारू गाम
पुर्स का सुमिरू नाम
ाका भी भला न दे ताका भी भला
ो महरी बनी पीर तेरी गचकोली श्रौर कलई सेत
ारौ खूट की श्रावै मेदिनी कादिम[3] लैंत पीर तेरी भैंट
पूरब पन्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारो देस
नाथन की करवाई मान्ता[४] राखी लाज भेस की टेक ।
मानसरोवर राजा मान की जा घरु कुमरि लियौ श्रौतारु
एक बरस की है गई दूजी लागनहार
द्वै ई बरस की रानी बाछिला जाकौ निकरयौ बाछल नाँउ
तीन बरस की रानी बाछिला चौथी में पगु धार्‌यौ ऐ
पाच बरस की रानी है गई, छैई बरसु मे पगु धार्‌यौ है
सात बरस की रानी है गई, श्राठेंई में पगु धार्‌यौ है
नौ बरस की रानी है गई, दसईं में पगु धार्‌यौ है
ग्यारह बरस की रानी है गई, बारही में पगु धार्‌यौ है[५]

---

३ चबूतरा ।
४ जाहर ।

१ धरथरी—धारानगरी ।
२ कपर ।
३ मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)
४ इस पक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नाथो की मानता हुई ।
५ लोक गीतो की यह शैली दृष्टव्य है । समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है ।

कहा सुनाइऐं बाबुओ कहाँ मरद तेरी पाग
महल सुनाइ देउ बाबुओ महरी[1] मरद की पाग
जाहर के बाजार में होती भई सुनार
घोड़ें कूं गहना बानुका रानी सिरियल की सिंगार
जाहर की पैल में स्याप लहरिया लेह[1]
पापी कैसा बसि भए दाता ऐ दर्शन देइ ।
गाना है
छोरैं नाग बनी नगिनिया तू बालक दिल भायो
नागिनि नाम बनाइ ईं अपनी मैं बाइ जोबन आयो
मारयो टोल पैद गई दह में गैंद के संग ई आयो ।
मारी फुसकार स्याप भयो कारो गोरे ते ई गयो कारो ।
ठाड़ी जसोदा अर्ज करै मेरो नाग छोड़िदै कारो ।[1]
मानसी गंगा राजा मान में खुदाई
जाके बीच में गिरवर धार्यो

---

१ मन्दिर

१ जाहरपीर और गुरु गुग्गा का एक नाम आता है, टैम्पल महोदय ने भी 'लीजेण्ड्स आव पंजाब' में संख्या (६) के आरम्भ में लिखा है गुग्गा की समस्त कहानी महान् चमत्कार में पड़ी हुई है, आजकल यह प्रधान मुसलमान फकीरों में है अथवा सब प्रकार की नीच जातियों का पूजा पात्र है और जाहरपीर के नाम से भी विख्यात है। श्री जयदीपसिंह गहलोत ने लिखा है गोगा जी यह जिला हरियाणा के गाँव महरी के चौहान राजपूत थे । सं० १३२१ में दिल्ली के बादशाह फिरोज के सेनापति अबुबक्र से युद्ध कर ये वीर गति को प्राप्त हुए । हिन्दू इन्हें देवता तुल्य मानकर भादों बदी ९ को इनकी जयन्ती मनाते हैं । मुसलमान इन्हें जाहरपीर के उपनाम से पूजते हैं ।

२ बंगाल में पट-गीतों में से एक गीत का अंश यों है

कालीदहेर कूले छिल केलि कदम्बेर गाछ
ताते चड़े कृष्णचन्द्र दिये छिलेन झाँप ।
कालीनाग छाड़ आहार करे सकले बोलिल
नागवती कुटी कन्या उपस्थित हइल ।
नागेर माथाय पद दिये देखुना ठाकुर नाचित लागिल ।

"बाङ्गलार लोक साहित्य पृ० १२४"

इस से यह अनुमान किया जा सकता है कि जाहर के गीत में कृष्ण का यह वर्णन पटकों के पुराने अभ्यास के कारण आ गया है। पहले वे कृष्णचन्द्र के पट दिखाते होंगे बाद में जाहर का दिखाने लगे। और पुराने कृष्ण गीत का अंश स्तुति के रूप में रह गया।

सिंगमरमर कौ वन्यौ मुकरवा[3] हरदम द्वारा न्यारा
काली दह में गाय चरावै कबर ओढै कारा,
गज और ग्राह लडे जल भीतर लडत लडत गज हारे
गज की टेर द्वारिका लागी नगे ई पैरन धाए ।
जौ भरि सूड रही जल ऊपर जव हरि नाम पुकारे
गोविन्दौ हरि आप बनायौ
एकमे एक लगै विसकरमा रोजु एक नाइ आयौ
भिलनी के वेर सुदामा के तन्दुल, रुचि रुचि भोग लगायौ
नाग नाथु रेती में डार्यौ नगर तमासे आयौ
पचवीर[4] पचो में भाई, धुर मक्के में जात लगाई
धरथरी[1] का भरथरी
[2]अलील का वन्द
जोगी खेलै नौऊ खड
मागू भिच्छा तारू गाम
अलख पुर्स का सुमिरू नाम
दे ताका भी भला न दे ताका भी भला
बकी महरी वनी पीर तेरी गचकीली और कलई सेत
चारो खूट की आवै मेदिनी कादिम[3] लैत पीर तेरी भैंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारो देस
नाथन की करवाई मान्ता[4] राखी लाज भेस की टेक ।
मानसरोवर राजा मान की जा घर कुमरि लियौ औतार
एक वरस की है गई दूजी लागनहार
द्वै ई बरस की रानी वाछिला जाकौ निकरयौ वाछल नाँउ
तीन वरस की रानी वाछिला चौथी में पगु धार्यौ ऐ
पाच वरस की रानी है गई, छैई वरसु में पगु धार्यौ है
सात वरस की रानी है गई, आठैई में पगु धार्यौ है
नौ वरस की रानी है गई, दसई में पगु धार्यौ है
ग्यारह वरस की रानी है गई, वारही में पगु धार्यौ है[5]

---

३ चबूतरा ।
४ जाहर ।

१ धरथरी—धारानगरी ।
२ कपर ।
३ मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)
४ इस पक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नाथो की मानता हुई ।
५ लोक गीतों की यह शैली दृष्टव्य है । समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है ।

ऊट परवती सजे तुरकी ऐराकी
रथवहली सजि गई धरी हाथिन अम्बारी
कैसोडे के चारि नगर परिकम्मा दीनी
लमकर फिरै नकीब देर काए कू कीनी
मो उटि उडि धूरि लगी अम्मर में दादा मेरे
सो भानु गर्द में अटि गयौ।
म्वाते उमरू चल्यौ मुरति जानें विरज की लगाई
नाऊ नेगी नाहि गैल हमें कौन बताई
म्वाते राजा चलि दीयौ ओर मानसरोवरि आय
मानसरोवरि आइकें राजा मान के घटाए मान
वामन राजा ते पिरोत ते मेरी कछू न वस्याइ
मो हात जोरि तेरे करू निहोरे दादा मेरे
मेरी कछु न वस्याइ, मो सादी कुमरि की है गई।
नेगी लीनो वोलि भूप प्याऊ करवाई
तुम राजा के पास जाउ, नेग करवाओ
नेगु कछू मति लइयो, नेगु चहियतु नांय,
वेटी की भामरि डारि कें तुम कुमरि ऐ लै जाउ
चमरा लीनो वोलि घास दानो मगवायौ
मेख दई गडवाइ।
अरे राजा ऐसी वात चौं करतु ऐ सो मेरे आए नौ्लक हजार
करी तैयारी वरैनुआ मगवाओ
जौ ढाकरौ[1] लावै वरौनिया तौ हमारी ब्याई रुपैगी रारि
उम्मरु गयौ दहलाय पुरोत अपनो बुलवायो
तुम लै जाओ वरैनुआ महाराज।
मान राजा के मान, मति घटाओ, सो हम लैंइ कुमरि ऐ व्याहि।
लै वरैनुआ पिरोत गयौ राजा भयौ खुस्याल
सो जल्दी करौ भामरि तुम डारौ मो दादा मेरे
सो मैं भोर होंत विदा ब्याते करि दऊ।
दै वरैनुआं म्वाते आये, उम्मर ने जव वचन उचारे
कहौ महाराज राजा नें क्या वचन उचारे
पाति फाति की कहा चली राजा लीजौ भामरि डारि
ऐसी जग्गि करी तैंने म्वांई, ऐसी ब्या मिलिवे की नाहि
नाऊ दीजौ भेजि भामरिन कौ सामान मँगाओ
मति करौ अवार जल्दी भामरि गिरवाऊँ
सो पाँति के भरोसें तुम मति रहियौ दादा मेरे

---

१ ठाकुर।

नंगार ते दिये निकारि, करम लिखी होगी सो हम भुगतिये।
कीनो कुमक चौक बैठार्यो बनी पवित्र में रचवाई।
सखियां गाइ रही मंगलचार
सो मुहुरी बाचते वा कुमरि कैं सो बैरीन वर है गौ काल।
रोसमस्त है गयौ मात में बाहर भरे
सखिमा देखि बिरहिन
मोसौ राजा कैसैं बोलैगौ बैरीन वर कर दौ काजु।
मामरि दीनी मैरि खुसी भयौ जम्मर राजा।
बेटी चहियत नाँह।
बेटी ऐ तुम अपने घर राखी अपने लाला कौ करि दू मो दूसरी ब्याहु
हाथ जोरि मात भयौ ठाड़ौ
तुम बेटी मैं जाउ जमाव हमारी दिखता ई सावै
तीज सनूने की तौ कहा चली मेरें नित मामी नित जाउ
बेटी तौ मेरी बहुत ऐ प्यारी जमाव के सू गौ आदर भाव
पौफाटी पिमरा भयौ भयौ ऐ सकारौ हा।
रानी बाछल उपत रसोई है हा
जा मेरी बाबी जा मेरी बादी रानी बोलिया
मरे सिरकार क मेरी हा
बिरम लकुट लई हाथ मं राजा ऐ बोलन जाइ
सार खिलते सारिया राजा तोड़ कैसी सार सुहाइ
महल बुलाए बोला पदमिनी राजा जी चली रात जी हमारे साथ।
सार बखाई लई तैं करी फासे बरनु सम्हारि
मन माला रदराख की राजा मुख ते राम जपाइ
भामत देखे बालमा रानी पलिका दीति नबाइ
राजा कू तौ पलिका नबायौ
दिग बैठि गई मूडा डारि
मोरछलीन की बीजना रानी राजा की ढोरति ब्यारि
ठर्डे पानी गरम् बरावै जल सियरे मैं ति समोइ
चदन चौकी डारि कै रानी राजा ऐ उबटि न्हवावै।
पीताम्बर करी धोवती राजा सूरज ध्यान लगावै
कुलसे[1] पै चदनु खिस्यौ राजा नरसीयी बीरि चढ़ावै
सवा पहर सुमिरिन करौ राजा चौथू जेड पहर दिन आवै
न्हायौ धोयौ सापरेराजा सुकि चौका में आये
काए के थार में भोजन परोसे रानी काए कटोरा में दूध
सोने के थार में भोजन परोसे राजा चाँदी कटोरा दूध
पहली गिरास भरवौ बर्यौ राजा दूबौ माइ गिरासु

---

[1] चकरिया।

तीजोकौर मुख में दीयो राजा जाके गिरी नैन ते धार ऐ
जौरे ठाडी गौरें गगा भमानी पूछै राजा से वात ऐ
कै वलमा मेरे भोजन विगरे खाली परी ऐ सिकार ऐ
कै काऊ वैरी नें वोल वोलें राजा, कै काऊ नें श्राय दावी सीम ।
कै तेरो घोडा हट्यो कै रन लोटी तरवारि
ना चातुर तेरे भोजन विगरे ना खाली परी ए सिकार
ना काऊ नें वोल वोलें रानी ना काऊ नें दावी सीमऐं
ना चातुरि मेरो घोडा हट्यो ना लौटी तरवारि
अन्न विछना जग वग सूना, वस्तर सूनी काया ।
[हे रानी यह लाख खानू है
तोपन पै तोरा, वह के गीत, मगल चार कौन कै गवि रहे ऐं
'आपकी बस्ती में एक साहूकारु ऐ श्रीमहाराज उसके नाती पैदा भयो ऐ, हुव्व के गीत उसके गवि रहे है, रानी धन्नि हमारी परालवदि ता दिना व्याहि कै लाये ऐसी मौज कवऊँ न भयो] ।
नीम देकै जनमु जाहरपीर को होइ
पन सारदा सुनै बोलो वागर के वीर की मदद ।
काऊ कै पुन्न परताप ते सभा जुरी आय
आपु नई उठि जाइयै गाय वजाय रिझाय
खरिया श्रोढ़ि वुलाए राजा नें गोला को दह्यो लगाय
साडीमान वुलाए राजा नें कासी कू दऐ खदाइ
कासी सहर ते विरमा वुलाइ लए कथा दई बैठाय
देस देस के पडित आये कथा रहे वे वाचि
विरमा वाचै वेद कू राजा ऐ गाय सुनावे
एकु विरामनु ज्यों उठि वोल्यो सुनि राजा मेरी वात ऐ
वेटा की तौ कहा चली राजा करमन में तौ बेटी नाऐं
इतनी वात सुनी राजा ने मारयो गादी तै हातु ऐं
जमदर काढ़ि म्यान ते लीयो हियरा कू लायो राजा हात ऐ
काए कू जननी मैं तैं जन्यो विसु दै डारयो न मारि
ए विरामनु ज्यों उठि वोल्यो सुनि राजा मेरी वातऐ

वार्ता--

काऊ के परताप तै सभा जुरी आय
आपु ई उठि जाइये गाय वजाय रिझाय
खरिया श्रोढ़ि वुलाए राजा नें गोला को दह्यो लगायो
खोदत खोदत गए पातालै जाको अमिरत पानी पायो ।
बेलदार राजा नें वुलवाए वागन की रौस डराई
घुर कावुल ते पौधि मगाई, घरवायो लखेरा वागु ।
वाग बीच एक वारहद्वारी, फूला माली कीयो रखवारो ।

नीव की निबोरी लगी, अम्मारतीन के फूल झरे
वनकाट की लकडी रौस पै ठाडी ऐ
फेरि आए फुलवारी की वहाल तौ देखि रहे
मरूए की छवि न्यारी है
मरूए की छवि न्यारी गोल के नीचें ढारो ए।
मोरछली के पेड राजानें फुलवारी के बीच धरे
गुमटी दुरटा की भारी ऐ।
एकु पेड परसेंदू कौ आयौ छवि जाकी न्यारी
ढरवारि भाइ जाइ, बेला कौ तमासौ एक फुलवारी न्यारी ऐ
फूलन के हजार देखे फुलवारी एक
हजारा गेंदा कौ भारी ऐ।
खसवोई तौ आमति न्यारी न्यारी
झूटी साखि बमूर नें डारी ऐ
भौंतु तौ सुहामनो फूल एकु देख्यौ
गोरखमुडी एक खेतन में न्यारी ऐ
अरे जारे माली के एक गोरख मुडी न लाए
सेंति मेंति की एक किसानू फुलवारी ऐ

वार्ता—

वास की डाली केरा के पत्ता फूल लए फल चारि
लै डाली म्हातें चल्यौ राजा की कचहरी आया
डाली धरी उतारि मालीनें नवि नवि के मुजरा कीया
मैं तोइ पूछू हीरामनि माली मेवा कहाते लाया
जो राजा तुमनें वाग लगायौ मेवा राम बाग ते लाया
खुसी भयौ रे देसापति राजा माली कू देतु इनामु ऐं
चढनौ तौ जानें घोडा दीयौ, उडनो वाजु ऐ

वार्ता—

जादिन वागु व्याहिवे कू आमें तेरी राजी करि आमें
फूला माली विदा करि दीयौ फुलवारी डाली पै आई राजा की आखें
फिरि राजा नें माली बुलवायौ बेटा वासी मेवा लायौ
अरे राजा परि सिगमरमर की वनी कचहरी पानो से वगला छाया
परि लागी भभैक मेवा कुम्हलानी मैं फूल कालि के लाया
धनि धनि रे माली के बेटा तैनें राख्यौ सभा में मानु ऐं
लै डाली म्वा तें चल्यौ आया वाग के वीच ऐ

वार्ता—

लै डाली मालिनि चली रानी के रावर आई
परि डाली धरी उतारि मालिनी मुरि मुरि पैरो लागी

मैं योग पूत, घर की मालिनि आ बागी में कहा लाई
तुमने रानी नामु लगायौ मेवा राम बाग ते लाई।
खुशी भई देसापति रानी मालिनि क देति इनामु ऐ
परि दखिन का पीर, मुल्तान की माली मालिनि कू देति महाइ ऐ।
परि मुहर रूपयो से भरी खवरिया मालिनी विदा हो भाई
परि आ दिन बाग ब्याहिबे धामें तेरी राजो करि धामें
परि सांझ भई दिन गयौ मु दन क राजा राजलि आयौ
सै मेवा मागें धरी आ बाइ लेउ राम कुमार ऐ
परि बाइ लेउ पीलेउ बिलसि लेउ राजा करि लेउ मिम की सार ऐ
करव निकारी कौसाव की कल पै धरतु जमाइ ऐ
राजा ने तौ करव जमाई रानी नें पकरयौ हाथु ऐ
परि क्वारे बाग की मेवा म मागें ब्याहु करैं तब खामें
होते मे आयौ नाइ राजा पहरयौ नाइ मुस्हागु ऐ
मरघट दिमे बोलना धूम उतारयौ भाइ ऐ
माया दीनी धूम कू ना बिसरै ना बाइ ऐ।
धरे राजा सरग हमारी सौंपदा म्या तो भाभा पार ऐ
पीछें बढ़ा बाइ गो दियो मुकौका बाइ ऐ
कल्लि करैं सो अब्ब करि राजा कालि करै सो हाल
धरे तू कल्लि तौ ऐसी मावै दौक्कन की है बाइ काजु ऐ
बोलो बाबर के पीर की मदद।
रानि जमावै जोरैं बिरागी
जगम सुनै ब्याकी बरि कै काम
रिद्धि सिद्धि देता बहुतेरी कमी म आवै बिसकें हानि
गोर्धम के माली नें बायौ गुसका बचन हुआ परमान
हीरालाल बनिया मे बायौ तुसने राजा मिल कर राम
अपनी ई बौला है धरे सजवाद लै
माक देस के हीरा हो उम्मर की हाथी सजवाद
रानी की डोला सजवाद, आवे बाइस लागें रे कहार
पार्छे ते बाकी बारी ऊ बाद
अगरे बगरे बाकी फौज हंकिगी बाकी लसकर मूमतु जाय
धरे बागन में राजा पहुच्यौ बाइ
बाबन में पै जै [illegible]
र ज मे [illegible]
बाकी बढ़ि गई
[illegible]

राजा नें भट्टी दई खुदवाइ
जानें खाड दई गरवाइ
जानें नेगी लिए वुलवाइ
हरी हरी गिलम बिछी दरियाई, मुरब्बन जू ठसकत पाय
सोभा पातुरि राजा नें वुलवाई, ठनवायौ बागन में नाचु
छोटे छोटे छोरा नाचें ब्रजवासीन के चुटकीन में उडाइ रहे तान ऐ
डोला में ते रानी बोली करि लीजौ वाग कौ व्याहु ऐं
काए काए में राजा मेरी सीग रे मढावै
काए में खुरी मढवावै
सोनें में राजा मेरी सीग रे मढावै
रूपे में खुरी रे मढावै
अगिनि कुड राजा नें खुदवायौ हुतिवे कू नागर पान ऐ
हुती ऐ लोग समद चन्नन की और नागर पान ऐ
सुर गायन के घीअ मगाये राजा न्योई देंतु ऐ ढरकाइ ऐ
एक भर तौ पाताल जायगी वासुकि देवता मगन है जाय
धनि धनि रे देवराय से राजा तेरें होइ वेटन औतार ऐ
एक भर तौ आगासै जाइगी इदुर देवता मगन है जाइ ऐ
बेटीन की तौ कहा चली राजा लाल तौ रोजु ई हुगे
अरे राजा काए काए की तौ भामरि लेगौ
काए की परिकम्मा देगौ
गोला ते भामरि लेगौ तुलसी की परिकम्मा देगौ
परि वागु व्याहु ठाडौ भयौ राजा विरपन कू देंतु इनामु ऐं
परि विरपन कू तौ गैया दीनी, भाटन कडे पहिराये
डोमन कू तौ चोरा दीनें मीरासीन गाम इनाम ऐं
इक तखता में बिरामन जैमें दूजें में भैया वन्द ऐं
इक तखता में अभ्यागत जैमें चौथे में और भिकरौंडि ऐ
परि सवकू पाति जुगत तै परसौ मति करौ पाति में दुभाति ऐ
एकु एकु रुपया एकु एकु लड्डुआ विरफन कू देंतु गहाइ ऐ
हुकमु करै तौ गौरै गगा भमानी करि जाऊ वाग की सैर ऐ
एकु विरामनु व्यो उठि बोल्यौ मति जइयौ वाग की सैल ऐ
चारि धरी तौपै मूल की निछुत्तर मति जइयौ वाग की सैल ऐ
तुम तौ राजा नित नित आओ कब जावै राजकुमारि ऐ
अस्त्री पुरुख कौ सगु मिल्यौ ऐ जुरि मिलि कें करि लेंइ सैल ऐ
कौन के हाथ रे गडुअरा सोहै कौन के कुस की डार ऐ
रानी के हाथ गडुअरा सोहे राजा के कुस की डार ऐ
परि दिवराइ राजा हेरू हाकैगौ भोरी वाघति राजकुमारि ऐ
परि मूहरन कै तौ कूड लगावै मोतीन के जइया चारि ऐ

परि सिरसन की महलो माइ मायी कुकि आयो बाग कै बीच ए
आमें आमें देखें तमासी पाछें तें पतझर होइ ऐ
बोलो बागर के पीर की जय
बाग की बावरि रानी ब्याही साहिब नें राखी बाँधि ऐ
परि बाग की बावरि बागु लगायौ मेरौ सूख्यौ सारौ बागु ऐ
परि ठैगा बाहि म्यान से सोयौ हियरा कूँ लायौ हातु ऐ
और अबी गोरे गंगा भमानी राजा की पकरति हातु ऐ
बाप कूँ जननी तें मैं जन्यौ बिसु दै डार्यौ न मारि
बाग की बावरि मैंने रानी ब्याही बरछा नें राखि दई बाँधि ऐ
बाग की बावरि मैंने बागु लगायौ मेरौ छोड़ सूख्यौ बागु ऐ
पहलें बमना मोइ मारारौ फिरि मरिवौं अपघातु ऐ
तोइ मा मारें हम ना मरिये तजि जागे तेरा देस ऐ
परि हैरै पीरि जेठ में रोवै है मारै रोसन तें मूड़ ऐ।
मेरौ सूख्यौ ऐ नौलखा बागु राम तैनें कछु न करी
अरे दौना सूख्यौ मरुवौ सूख्यौ रायबेल चमेली
सबरे पेड़ नारियल सूखे सूखि गई ऐ कचनार सूखी तौ चंपे की कली ॥ मेरी
अरे परि तिरिया में मति हरी राजा रे साढ़ के बमला आयी
परि आमतु देख्यौ देसापति राजा फाटिगु दयौ अकास ऐ
परि मेरी कचहरी मति आवै राजा सौने के खम्म दहनाइ
खम्मु गिरै छज्जौ गिरै दबि मरै कचैरी की लोगु ऐ
पहलौ बोसु तोइ बो लग्यौ पतिबरता दीह गई लाज ऐ
अरे साढ़ मति बोली मारै, लाला बोली मति मारै
जिन जिन कूँ मूसि बयौ ऐ टीतिक ते भाग्यौ आयौ।
अरे पामन में पन्हई नाई, तेरे सिर पै पगड़ी नाई।
अरे चढ़िबे कूँ घोड़ा नामो चढ़िबे कूँ घोड़ा दीयौ।
अरे तोइ खायौ राजु दीयौ अरे रहन कूँ महल दीनें।
अरे बरम्बरि की भैया कीयौ अरे साढ़ मति बोली मारै।
अरे बखतर कूँ फौरि गई ऐ, अरे पिंजर कूँ तोरि गई ऐ।
अरे बोली की बाव भला ऐ।
अरे बोसी तै ससम्बु रहता अरे गोसी ते सीर रहता ॥ रे जो
साढ़ मति बोली मारे
साढ़ मारे बोलना भए करेजा सालु ऐ
परि उलटी बोडी फेरि कें राजा आया महल के बीच ऐ
बोडी पै ते म्यो गिरै राजा गिरछु कबूतर जाय
बोडी पै ते म्यौ गिरयौ रानी नें पकरयौ हातु ऐ
रानी नें तो राजा पकरयौ लै गयौ महल के बीच ऐ
अरी हम तो चले बनवास कूँ रानी तू जाने तेरो कामु ऐ

बोलौ वागर के बीर की मदद ।
वाछलि को पूत वाजन कू भूत, परचै की खातरि धाया ई ऐ
अजी हिन्दू मुसलमान दोनो दीन धामें, वादशाह नही आया ई ऐ ।
गुसा भया वागर कोई राना, जव घोडा सजवाया ई ऐ
घोडा मारि गयौ डिल्ली कू वास्याइ जाइ जगाया ई ऐ
अजी लाल पलक पै सोवै वास्याइ पलके ते औंधा मारा ई ऐ
अजी दौरी आई वास्याई तेरी अम्मा कौनें मरद सताया ई ऐ
पाच मौर और एक नारियल पीरजी कौ पजौ उठाया ई ऐ
जव मेरौ मालिकु महरि करै, सवु कुनवा जारति आया ई ऐ
महलन में राजा देवराय निरपु दुख्याइ
भली सी रानी किसिमिति में ई फलु नाइ
जोगी जती सेऐ मैंने इन पै मैंने डार्‌यौ सुवाल
रानी और सकलपी गाय, रानी किसिमित में तो फलु नांइ
अरे भली सी रानी०
रानी माल परगनो वहुत ऐ बैठो भूजौ राजु
राजा माइ बिना कैसौ माइकौ, पिय विन कैसौ सिंगार
घन विनु नाइ धनेसुरी राजा ऋतु विन नाइ मल्हार
महलन में रानी क्यो रही ए समझाय ।
अरे सग सहेली बोलि कै करि आमें गाइ वजाइ
पिया पनारे पौरि जू धनि ठाडी पकरि किवार ऐ ।
अरे वाह छुडाऐ जातु ऐ निवल जानि के मोय ऐ
परि हिरदे में ते जाइगौ राजा मरद वदूगी तोय ऐ
जो तेरी मनसा जोग पै काए कू कीयौ व्याहु ऐ
परि नौ सै घोडी ले चढ्यो बाबुल जी की पौरि ऐ
वनजारे की आगि ज्यो गयी सिलगती छोडि
अरे मेरे राजा जौ तेरी मनसा जोग पै तपौ हमारे द्वार ऐ
मढ़ी छवाइ दऊ काच की मढवाइ दऊ हीरा लाल ऐ
परि गगा मगाऊ हरद्वार की नित उठि करौ असनान ऐ
भूखे तो भोजन करू हारे दावू पाइ ऐ
ज्यों जोगु वनै रानी क्यो वनिवे कौ नाइ ऐ
परि ऐसे जोग ना वनें रहे भोग का भोग ऐ
अरे राजा साधू जन थमते भले जौ मति के पूरे होइ
अरे राजा वदा पानी निरमला जो जल गहरा होइ
साधू जन थमते भले मति के पूरे होइ
अरी रानी वदा पानी गादला वहता निरमल होइ
साधू जन रमते भले जाते दागु न लागै कोइ
अरे राजा गलखासा जामा वोरि कै किया भगम्मर भेस ऐ

जे सहर दलेले में आयौ
खासे के घोडा जाके फाके में बधे ऐं
मकुना हाथी जाकी ड्योढ़ी घूमतु ऐ
नगर की प्रजा जाकी रोवै, ऐसौ राजा फेरि न मिलैगौ
अजी कौन के हाथी कौन के घोडा अपनो जानि मरदो फाके में परी ऐ
अरे भोर भयौ ऐ परभात, रानी वाछिल जागै
वोलो वागर के पीर की मदद ।

६ देवी सोइ गई भमन में नौरग पलग नवाई
अरी नौरग पलग नवाइ
आइत पाडत गेंदुवा टाडो वालम ढोरै व्यारि ऐ
धूर उडी ब्रजराज की अजी जिन गलियन की धूरि ऐ
अजी जिन गलियन की धूरि अग लागी लिपिटि नही
जम भाजे जात ऐं दूर ऐ ।

वार्ता--

अरे चलि मेरे वेटा डिगरि चन्नौ हतिनापुर मनुआ ढारया
कैतौ रे गुरू गगाजी न्हवाइ दे नातौ छोडयौ जोगु ऐ
तो पै तै गुरू जाउ न्हाइ लेंउ गोरख सी गगा
अरे मै मिलू कुटम में जाइ वाजरौ वै लु गी वगा
तम्मू मेख उखारि मेसे चेला कसना लियौ वनाइ ऐ
मजल्यौ मजत्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ ऐ आसन माडयौ
आमन माडि भगम्मर तान्यो वावा वैठ्यौ जल थल पूरि ऐ
अजमति के गुर तम्मू तनाऐ अनहद के वाजे नाद ऐ
विन खूटी विन डोरि मेरे वावा अधर भगम्मर तान्या
परि सोमत जागे पाचौ पडा छठी कमता माइ ऐ
अरी ए कैरी टिडोरी[1] कै वजारो कै कौरो दल आये
कै सिपाई कै रगीलौ कै जरजोधन आयौ
अरे वेटा ना सिपाई ना रगीलो ना जरजोधन आयौ
परि न टिडोरी ना बनजारी ना कौरो दल आये
परि कजरी वन का गोरख जोगी[2] परमी न्हाइवे आयौ
अरी माता जा जोगी से वादु करूगौ मेरी भुमि नाद वजायौ
भाई जोगी जती से वादु न करना रहना दोऊ कर जोरै
परि घुटी दवाई मुडिया जोगी जे तो अपरपार ऐ
जोगी जती से वाद न करना रहना दोउ कर जोरै
सेर चून दे पाइ पूजना जे जोगिन का वादु ऐ

---

१ टिडोरी से अभिप्राय टिड्डी दल से प्रतीत होता है ।
२ गोरख नाथ को कजली वन का जोगी बताया गया है ।

मोड़ परभी को वखतु वतावै
एसा बात माइ ना सूझै परभी जाइ पडवनु वूझै
अरी कहा खेलें तेरे पाचौ वीर अरजुन, भीमा सहदेव भीम
सौ गचकीली कौ वन्यौ ऐ चौंतरा ए वावाजी
सो गचकीली कौ वन्यौ ऐ चौंतरा ए वावाजी
देखि सीतल पेड़ु रो मल्हारी
म्वा खेलें पाचौ पडवा
मातु कमता भेदु वतायौ, जव ग्रौघड पडन ढिग आयौ
भीमसैन भीयौ कीनौ, अव सहदेव नें दानु दीयौ
गाडि कचैरी पाड नादु फूकि दीयौ
अरे राजा वैठे न्यावु चुकावें, इदरु वैठे जलु वरसावै
वैठे जगल चरती हिरनी।
हम जोगी कू वैठें ना वनें, नवै कठ पदमिनी फिरतो, सिघ गोरख जागै
अरे वेटा उडता तीतुर उडता वाज, उडती जग हिवाई
हम जोगी से उडता ना वनै पाचौ जनो से टक्कर खाई, सिघ गोरख जाग
अरे हम भी मरसी[४] तुम भी मरसी, मरसी कोट अठासी
वेद पढते विरमा मरिगए, जे परी काल की फासी, सिघ गोरख जागै
अरे काकौ गुरू तू काकौ चेला, कहा तो तिहारो नामु ऐ
अरे चेला गोरखनाथ कौ ग्रौघडिया मेरौ नामु ऐ
अरे वेटा कजरी बन मेरौ स्थान, गुरू हमारे विद्यमान
हम आए तेरी परभी न्हान
तेरी कवै परैगी परभी पढा वेद की वताइ
अरे परभी पूजैं सेठ साहूकार दुनिया और राजा
भैनि भानजी न्योति जिमावैं, जोरा औरू तीहरि पहरावैं
जे करैं गऊन के दान सौने में सीग मढावै
सो सिर पै टोपी, गाडि लगोटी, वृक्षन आए ए वावाजी
तुम दान तौ करौगे परमाधारी
सौ कहा गगा में तुम जौ ववौ
गरव की वोली जी मति मारौ पढवा, वचन करौगे यादि ऐ
जा वोली कौ म्यानो दुंगो वेटा, असलि गुरू कौ चेला
परि छिमा खाइ ग्रौघरिया चाल्यौ आयौ गुरून के पास ऐ
जै लै वावा झोरी पत्तुर नाइ सधै तेरौ जोगु ऐ
परि जोग नाइ जोहुर भयौ वावा विन खाडे सगरामु ऐ
वेटा के पडन्नें मार्यौ, छेड्यौ के पडनु दई गारी

---

४ 'मरसी' शब्द का रूप राजस्थानी मारवाडी प्रतीत होता है।

अरे ज्या पत्तुर में कवऊ न आऊ वावा घर घर मागी भीक ऐ
झोरी हमारी कामधेनु, ससार हमारी वारी
अरे जल की छोड्या करै जुवाव, सुनि री गगा मेरी वात ।
वया लगायी जोगी ते वादु, तुम ऐसी लहरि वहौ पटरानी
जोगी और जोगी को तोमरा, काऊ लोक कू वहि जाइ
वैठि मगरु खार के वीच, जाइ काकरी सौ खाइ
अरी माता आइजा पत्तुर, है जा पवित्तुर, गुरू करैं निस्तारा
वावा नें पहला पत्तुर वोरा दरयाइ में पहला समद समाना
दूजा पत्तुर वोरा दरयाइ में दूजा समद समाना
तीजा पत्तुर वोरा दरयाइ में तीजा समद समाना
चौथा पत्तुर वोरा दरयाय में चौथा समद समाना
पाचा पत्तुर वोरा दरयाय में पाचा समद समाना
छठवा पत्तुर वोरा दरयाय में छठवा समद समाना
सतवा पत्तुर वोरा दरयाय में सतवा समद समाना
सातौ समद आठई गगा नौसै नदी नवाडा
ताल पोखरा सवुई समाइ गए पत्तुर भरि ऐ नाइ ऐं हा हा ।

६ मूगानाथ गामें, गुरू गोरख उस्ताद कू मनावें
सुन्दरनाथ अर्थामें छवि महरी की न्यारी ऐ
चोआ चदन और अरगजा आमे महक भारो ऐ
भीतर परसि के आए पीर, भीतर ऊते आए
छवि डूगरऊ की न्यारी ऐं
डूगर की छवि न्यारी, डोरी नाथ ने उतारी
डोरी तौ उतारी जाकी सोभा वरनी न्यारी ऐ
ऐरापति हाती सजवाए, लख चौरासी घट लगाऐ
नकुल कुमर हौदा वैठारे ।
गुनु क्षाऊन में उडति दिखी रेती
चलौ रे वेटा परभी सौमोती परी
गैयन के से छूटे झुड रीते पाए राधाकुड
ददवल कुड, सकल वल तीरथ गगा में जलु नाऐं
हम परभी काए में न्हामें ।
वारू रेत के जमि रहे खासे
लैकें वेद सहदेव वाचें
माइ कमता पूछौ एक पोथी वा पै धरी
माता वाचि रही असलोक, कै गगाजी भई अलोप
कै सिवसकर सग गई
मोइ व्वाई कौ मरमु समानो, गगाजी मेरी व्वाई नें हरी
अरी माता सवरी पौहमि पै ढूढि ढूढि मारू मेरी गगा कहा लै जायगो

जब दाने की जाँघ चीरी गगा ने लीयौ परभाइ[२] ऐ

वार्ता—

गोरख— मेरे पास भभूत कौ गोला जल में दु गो डारि ऐ
जल में दु गो डारि पडवा सूखौ लेउ निकारि ऐ
सूखौ लेउ निकारि मेरे बेटा घिसि घिसि अग लगाऊ
सकल बरन ते कपडा उतारे कूदि परे जल बीच ऐ
परि पहली डूबक मारी पडवा सौने के जौ लाए
परि दूसरी डूबक मारी पडवा चाँदी के जौ लाए
परि तीसरी डूबक मारें पडवा ताबे के जौ लाए
चौथी डूबक मारे पडवा लोहे के जौ लाए
परि पाचई डूबक मारें पडवा पाँडौ माटी लाए

कुती—अर बाबा सैर दलेले की रानी बाझ, रोवति ऐ सवेरे साझ
बुन की कोखि हरी करै बाबा तेरी जब जानू करामाति

बाछ०—अरी मैना तेरे ऐ तीरथ कौ धाम, जोगी जती करें असनान
कोई पूरौ सिद्ध आवै बेलो बागर भेजि रो

गो०—अरी हतिनापुर की रानी, तैंने बात कहीए स्यानी
मेरे हिरदै बीच समानी
तोइ गगा दीनी कौल की, तोइ परी का और की
तुम लबो कूच करौ, क बेलो बागर कू चलौ
बोलोई बागर कौ पीर मदद ।

१० चलि मेरे बेटा चलि मेरे बेटा
डिगरि चलौ औघरिया चेला हा
चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ नगरी कौ लोगु दुख्याना
तम्बू मेख उखारि मेरे चेला कसना लीयौ बनाय
देसु भलो रे पच्छिम की धरती औह मिठ बोला लोगु ऐ
पानी मागे दूधु रे पिलामें देसु भलौ हरिआना ।
घर घर गोरी हासिली मिरगा नैनी नारि
पानी मागै दूध रे पिआमें देसु भलौ हरिआना
देसु भलौ हरिआना बेटा दही दूध कौ खाना
अजी काम जाम हाकि दीए, लबे ऊ कूच कीए
जाते बौलै गोरखनाथ बेटा देस कौन रे

औ०—बाबाजी चलतू अगारी, बागर छोडि दई पिछारी
सैर कामरू घना
आसनु करौ बनाइ, तम्बू नायकौ तना
हाती पीलमा लाए, तम्बू ठाडे करवाए

२ प्रवाह का रूप 'परमाइ' हुआ है

वार्ता--

११ चलि मेरे वेटा डिगरि चलो हरिआने कू करो कूचु ऐ
उखरी तम्मू और कनात, चलि दई जोगीन की जमात
जाते वोले गोरखनाथ
वेटा हरिआने कू चलो
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ पै आसन माड्यौ
आसनु मांडि भगम्मरू तान्यो वैठ्यौ जलु थलु पूरि ऐ
हरिआने की सीम में वावा नें वजाइ दयो नाउ ऐ
हरिआने की रानी वोली, जे आइ गए भोलानाथ ऐ
अरे जा मेरे वेटा डिगरि चलो दूध के भोजन लाइदै
अन्न के भोजन ना मै जेऊ वेटा दूध के भोजन लाइदै
अजी लै पत्तुर औघरिया चल्यौ
ओघड करी नाद में घोर, जव चौंकें जगल के मोर
हाजुर ऐ सौ भेजि माता
वावा दूधाहारी ऐ
अन्न के भोजन नाइ लेइ माता वावा दूधाधारी
कै तो माता दूध री पिलाइ दै ना तौ ओटि सरापु ऐ
नाद में नाऐं, गोद में नाऐं दूध कहा ते लाऊ
पार के नाऐं परौसी कै नाऐं दूध कहाँ ते लाऊ
गाम में नाँऐं परगने में नाए मै दूध कहा ते लाऊ
अरी कै तौ माता दूध री पिलाइद ना तौ ओटि सरापु ऐ
अरे न्हाइ धोइ कुमरि चौकी भई ठाडी, सुरति करताते लगाइ लई
वावाजी मेरे ख्याल परया ऐ
वेटा जसरत के उदई के नाती, मेरी तुमई ते डोरि लगी ऐ
जाकी छूटी कुचा ते धार धार पत्तुर में आइ गई
जानें पत्तुर भरयौ ऐ झकोरि दुआ मेरे गुरू की आइ गई
अरे क्या तुम देऊ भोलानाथ कहा मेरें हतु नाऐं
अजी जे तुमनें माग्यौ नाथ दूध मेरें हतु नाऐं
अरी माता नौ कोठी मारवाड में
छप्पन कोट हरिआनो
वारह पालि मेवाति ऐ
अन्न चाल परि जाय
पानी के जवाल परि जाइ
परि दूव घनेरा होइगा
वोलौ वागर ई पीर की मदद ।

१२ किए कूच पै कूच सग सबु चेला लै लीये
राजा उम्मर के वाग नाथ ने डेरा दै दीये

मन में बडौ घबडानो
अरे आयौ गुरू जी कौ नाम, गोला तौ मुंहडे जू उमग्यौ
पानी पाछे झमारियौ, मरूए ते लाग्यौ
अरे डोडा चलि बाज्यौ फुलवारी में लाग्यौ
अरे तौमा भर्यौ ऐ झकोरि नाथ के आसन आइ गयौ
अजी तौमा धरयौ ऐ अगार सरकि पीछें भयौ ठाडौ
बर्राकिगे भोलानाथ चेला तौ मेरौ कहा गयौ ऐ
बाबाजी मैं पाछैं ठाडौ
अरे बेटा नेंक आगें आइजा, कुल्ला करवाइजा
अरे नेंक थोरौ सौ पीलै पानी
पानी के बदा जौरें न जाइगौ
बाबा सुनि आयौ मैं पानी कौ बतायौ
जहरु ऐ पानी, पीऐं ते है जाउगे नाथ गुरमानी
अरे बाबाजी पीवैं तौ पीलै नाथ अरे नँई लुढकाइदै
अरे नई उल्ले तैं पल्ले ऐ प्याइ दै
अजी आकनाथ ढाकनाथ पत्थरनाथ
नई सबु चेलनें प्याइदें
पानी के जौरैं न जागौ

वार्ता—

रगी चगी वौ भौनारी, खोटी भौंह मुलम्मे डारी ।
घिसि घिसि एडी धोवैं नारि, उनके गोरख द्वार न जाइ
बाती खैंचि चूल्हि में देई हौलैं हौलैं मेरी चन्दो मगरे लेइ
झगा बिछावैं सोवैं नारि, पार परोसिन जौरें न जाइ
हीसतई ब्वाइ छोडौ कठ, सोमत ई ब्वाके देखौ दत
रोमति पीसैं, सिनकित पवैं, सदा दिलद्दर उनकें रहै
तिल भौरी माथे मसौ
और कनफुटी लीक, भाजनो होइ तौ भाजि कता नइ वेगि मगावै भीक ।
अरे बनि ठन औघडनाथ बस्ती में आइगयौ
मागत जी मागत नाथ पल्ली होर कू निकरि गयौ
नाऊन के माउ
जाते कोई माई मुखना बोलै, औघड गलियन में डोलै
कुअटा पै चबैया, गलियन में गैरा
एक सखी ज्यो कहै राज की ऐ बेटा
जाके गुरू नें खदायौ जे तौ मांगि न जानै भीख
जाके घर में नारि करकसा
जाकें मारी बोली, जाई ते भैना है गयो जोगी

अरे रानी जहा भेजै म्वा जाऊ मेरी रानी वावा माऊ अव न जाऊगी
परि भकर भकर वाकी आखि वरै सोटन की मार लगावै
अरी महल चढ़ी तोइ बोलै कमता सुनि बावाजी वात ऐ
पीर की मदद ।

१५. पतिभरता के द्वार नाथ नें नादु वजाइ दयौ
थार भरे गजमानिक मोती रानी भिच्छा लावै
लीजौ रे परदेसी वावा जोगी आस्या लागी तेरी
तेरे हात को भिच्छा न लुगौ माता वालातन की वाझ ऐ
वादी आई मेरी मारि कें बिडारी मोइ का ऐवु लगावै
नाती हमारे पलना में भूलें वावा वेटा गए रे सिकार ऐ
पाच चारि तौ घर आगन खेलें द्वै भैंसिन पै ग्वार ऐं
जो मैया तेरें लालु घनेरे एक फलु माग्यौ देना
तीरथ वरत करावें वहुतेरे तेराऍ तोइ मिलायें
सुनियो री मेरी पार री परौसिन जा वावा के बोल ऐं
मैं आई वावा पै मागन वावा वेटा मागै
तुम रे गुरू मैंने सेए घनेरे पूरी मेरी काऊनें न पारी
हा जो सेओ जो निगुरौ सेओ सतगुरू भेंट्यौ नाइ ऐ
जाइ नाइ सेवै माता मेरे गुरू ऐ हरयौ री कीयौ तेरी वागु ऐ
नामु सुन्यौ रे जानें हरे रे वाग कौ सीतल भयौ रे सरीरू ऐ
कौन गुरू रे तुम का के चेला कहा तिहारौ नामु ऐ
चेला गोरखनाथ कौ औघडिया मेरौ नामु ऐ
नामु सुन्यौं गोरख जोगी कौ जाकौ सीतल भयौ सरीरू ऐ
हा वावाजी वैठि जा गुरू कह देउ मन की बात ऐ
चारि घरी रे वातन विरमायौ तौजू भोजन है गए त्यार ऐ
आ वाला जी बैठिजा गुरू बैठि कें देंउ जिमाइ ऐ
लै पत्तुर आगे धरयौ जाइ भरि दै राजकुमारि ऐ
दावि भरू तेरौ पत्तुर फुटै बहि में भोजन छीजै
छोटौ पत्तुर मुकति घनेरी कहौ नाथ क्या कीजै
सैज ई लैन सहज ई दैना सहज करौ ठकुरानी
सहज ई सहज करौ ठकुरानी पत्तुर सव की करै सम्बाई
अरे बाबा बारह भैगी पकमान समाइ गए दस वूरे के माट ऐ
परि सोलह कलस जामें घी के समाइगए पत्तुर भरिऐ नाइ
उभकि उभकि पति भरता देखै भरै न रीतौ होइ ऐ
पत्तुर पूजि छत्तरू पूजि कालकट भाजै दूरि
जा भडार ते आवै सदा भरपूर

अलहदास करते की वानी
क्या करते कू क्या करें

परि जोगी उठियौ लहराइ हात लई पावरी
मीसु बचायौ नाथ पिंजरा झारि डारयौ
परि सिर पै धरि दीयौ हातु भभानी करि डारी ऐ
तू अपने घर जाउ तपस्या पूरन भई
मैं सोइ गई भोलानाथ तपस्या नाइ भई
अरी ऐसे भोजन लाउ व्वा दिन लाई री
हुकम देउ तौ जाउ वे हुकमें ना जाइवे कौ।
अज्ञा मागि भोरी माइ महल पग धारे
पीर की मदद।

१६ सब पीरो में पीर ओलिया जाहरपीर दिमाना है
दोनों जोरूआ मारि गिराए कीया राज अमाना ऐ
डिल्ली के आलमसाह बारयाइ बिदरगाह बनाई ऐ
हेम सहाय ने कलस चढ़ाए, दुनिया झारत[1] आई ऐ
मकुवा हाती जरद अम्वारी जिही तुमारे काम का
नवल नाथ साचौ करि गायें वासी विन्दावन धाम का जी
ठगन बिरानी आस ठगिनी आमति ऐ
मैंना मिलि लै कठ मिलाइ मौतु दिन बिछुडी जी
अरी जोगी का दोसु सरीरू तुजाइ लौ री
गुर गारी मति देइ कोढिन है जाइगी
गुरुन के पूजो पाइ गुरु नौंति जिमाइ लै री
गुरु मेरे भोलानाथ भैंनि मति कोसै री
कासी सहर ते पडित आए री पुस्तक लै आए री
पुस्तक लाए मेरी भैंनि भौतु समझाई री
अजी आजु नगर में तीज मैंना कपडा मोइ दे री
जे कपडा ना देंउ और लै जइयौ री
अरी गुन में दे दे आगि पुराने भैंना मोइ दे री
अरी दुहरे तिहरे थान रेसमी जोरा री
कम्मर के लै जाऔ जामें बडे बडे छव्वा री
नैनू की चादरि लैजा जामें जरद किनारी री
मिसरू की चादरि लैजा जामें गोटा लगि रह्यौ जी
अरी ऐसे मति बोलै बोल करूगी हत्यारी
बगुदा लै लीऔ हात बुरज पै चढ़ि गई री
सुनौ बस्ती के लोग याइ हत्या दै देंउ री
तेरे पिछवारें नदी जाई में बहि जाऊगी री
तेरे अगना में कुइया भडकि मरि जाऊगी री

१ ज्यारत।

अरी ये पसेरी बिसु लाउ टका भरि होइ देऊ री
पीसी ते भरके पेटु सरवा में बूबू री
अरी मा कपड़ा देइ लाइ मुख ते बोलै री
जनिकी असलि भवानी जानें बगलि घुमाइ लाई री
कपड़ा दिए उतारि चलै मन फूली री
फूली अंगना समाइ कुठीया रानी है गई री
अरे धेरक चामर राँधि माथ पै धावै री
भोजन अरे ऐं अपार सरकि पीछैं ठाड़ी री
अरे भोजन भोग लगाइ महरि करि मोपै री
बाबाजी भोजन भोग लगाइ महरि करि मोपै रे
अबी अरकिगे भोलानाथ बेटा बे माई जाए रे
अबी औषध भरि दयौ साथि भीख ना धावै रे
बौ माई पिसरी पिसरी ल्याइ बोलै बोलु न धावै रे
बेटा बौ माई हति लाइ हलमुष्टी कहति माई री
बेटा बो माई हति लाइ बेटा भीम जनेरी माई री
अरे बेटा बुड़ी पे पाई गुई है माई सा बडुमा बरिआई
अबी बडुमा में जारयौ हाथु चाल है जो पाए री
अरी संत के तौ लै जाइ फली भीख फूली री
अरी ये सत के सैजाइ होत भरि जाइगी री
अबी डाढ़ी में है दऊ मागि भाग मति कोसे रे
पीर की जबर।

१७ अरी मैना जोगी छिपरे जाइ राज तनें छिए री
अरे भरि बहुरीनु में मासु भाग धमु धारै री
ठाड़ी रही जोगी तनक तुम ठाड़े बाबाजी
जाइ गुहाई मैंने खीरि रवाइ लई जोगी जी
गाइ गुहाई मैंने खीरि रंधाई तौ मन कीनी अपनी
ए तेरे कारनें मैंने गूजरी छिपाइ लई तेरे भोजन क टोली
मैंने तौ जानी सतगुरु मिल्यौ अरे बाबा निकरयौ ऐ असलि कटीनु
बाबाजी बिरफल है गई ल्याइ जी
ए पति पै तनी भीऊ ल्योरखा
अरे बाबा सपति पै कबई ग्यास जी
अरी ऐसी फावरी मारि बेटा ठगिनी धावै री
ऐसी फावरी मारि बेटा इतमें न धावै री
भुम्भी फावरी जी लाउ मैया बहुमरि रौवै री
डारी रहि बीरा रे बाट बटोहिया मेरे मा के जाए होंगी
अरे तैनें बहु देसे गोरखनाथ जी
अरी बूली न नेहे मोंरा बग्यौ अरी माना पया गुष्टि दे मोइ

अरे जिन धूनी में भोरी जरि मरीछु अरी मैं फूल पहुँचाऊ बाके गगाजी
बाबाजी पेड जौ वए बमूर के मैं आम कहा ते खाउ ऐ
मैया परि तेरो सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई और ऐ
बाबाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मा की जाई बहना
मेरी सूरति मेरे कपडा माकी जाई वहना ।
परि महलन मे तौ मोइ ठगि लाई भाग प्याइ गई तोइ ऐ
मैया व्वा ठगिनी ऐ ठगि लै जानदे माता ग्वाइ ठगे भगमानु ऐ
परि सेवा मारी गई मैया औरु करै फलु पावै
बाबाजो अब सेवा कैसें करू जोगी डिगविग डोलै नारि ऐ
परि अव सेवा कैसें करू माता धौरे परि गए वार ऐ
वावाजी अब सेवा कैसें करू बाबा हालन लागे दात ऐ
बाबा परि मौति बुढापा आपता सबु काऊ कू होइ ऐ
पीर की मदद ।

१८ अरे दाव काटिकरि लीयौ विछौना आसन लेति बनाइ ऐ
अरे खलका छोडिकें गोरख चाले ठाकुर पै कीनी फिरादि ऐ
ठाकुर ज्ञानी न्यो उठि बोल्यौ चौं आयो मारे लोको में
रानी बाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कू
परि नाद में नाऐ, वेद में नाऐ, फलु नाऐ चारौ जुग में
गोरख चाले ठाकुर चाले जब आए सिवसकर पै
महादेव जोगी न्यौ उठि बोल्यौ चो आयौ म्हारे लोको में
अजो बाबा पति भरता ने करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कू
ठाडी गवरिया गुदरी हलावै फलु न पायौ गुदरी में
अरे जोगी नाद में वेद में नाइ फलु ना पायौ गुदरी में
परि गुदरी में फलु नाइ चारो जुग में
परि तीनो मिलिकें म्वातें चालें तव आए व्वा जोटो में
अरी बरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मास भरि
अगु मैलया मथि मल्या गूगर की डरी बनाई
परि निरकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
परि जा गूगुर कू लैंजा माता होइगा गूगा पीरू ऐ
वावाजी हाल की आई तोतें व्दै फलु लै गई
मोहू गूगा गैरा दीयौ
अरी गूगा नाए बावरा नाऐ सच्चा जाहर पीरू ऐ
अरी जोरन की ना पैदि करै वागर कौ भजे राजु ऐ
अरी जोरन की नापैदि
पीर की मदद ।

मो पै किरपा करिगे गोरखनाथ जी
मान हरायो जे तो, म्वा तै आई ननदुलि छवोलदे अपने वावुल ते चुगली खाई हो जी
लाज वी घनेरी जी, परदा घनेरे मेरे, गरूऐ से वावुल होजी
आजु वहूजी नें परदा डारयो ऐ फारि होजी
सोनें की नादी रेसम की झोरी अरे कि जानें जोगिन कू दई ऐ गहाइ ऐ
वडे वडे लट्ठा जाने धूनी में जराए मेरे गरूऐ से वावुल हो जी
अरी सबरी दौलति दई लुटाइ जी हा।
हा दौलति लुटाई जानें भली रे करी ऐ मेरे गरूऐ से बावुल हो जी
वारह वारह वर्ष जे तो वागन रहि आई माधारी राजा हो जी
अजी जै तौ जोगीन कौ गरभु लैकें आई आ होजी
राजा रे वावू कोई सुनि जौ रे पावै मेरे मेरे गरूऐ से वावुल जी
मेरे सगाई व्याह वद है जागे जी हा।
अपने वीरन को मै तौ व्याह करवाऊ मेरे गरूऐ से वावुल जी
अजो अपनी ननदुलि कौ डोला लैकें जाऊ हो जो हा
वेटा री होतो में तो व्वाइ समझामतो मेरी वेटी छवील दे हो
अजी कि मेरी वहू जी ते कछू न बस्याइ जी हा
सुघरो गई ऐ जाकी कुघरी जो आई मेरी वेटी छवीलदे हो
अरी क मैंनें वेटा ते प्यारी राखी जो
सेवानु करिकें जाको वेटा जो आयौ अरे कि जानें वावुल ते मुजरा कियौ आयजी
तेरौ तेरौ मुजरा मैं तो कवऊ न लु गौ मेरे देवराय लाला हे
अजी कि बहू जी नें परदा डारयो फारि हा।
दूजौ २ मुजरा जानें उम्मर माऊ कीयो मारू देस के राजा हा
जानें नीचे कू नवाइ लई नारि हो।
तोजो २ मुजरा जानें बाबुल माऊँ कीयो देवराय लालाजी
अरे कि जे तो मुजरा पै दें तु जुबाबु जी
तेरौ तेरौ मुजरा मै तो जवई रे लु गौ मेरे देवराय लालाजी
आजु तुम बहूजी ऐ जो मारौगे डारि
म्वति चल्यौ मारू देस कौ राजा पहुच्यौ ऐ महलन जाइ
जुरि आई घर घर की कामिनि जी
जे तो गामें वधाई हा जी
अजी कि जाको लौट आयौ राजा जी
ऐंब असबाव जाके सबु ढकि जागे
अरीक जाके धरिगी सातिए द्वार हा
रानी तौ जी ठड्डे तौ पानी गरम धरावै बेटी सजा की जी
अजी अपने वलमे उवटि न्हवाइ रही जी।
वलम न्हवायौ जाइ दिलु न सुहायौ घर घर की कामिनि हो जी

अजी क राजा रोबै जार बेजार हा जी
बारह बारह वर्स तू तौ उघटि न्हवायौ खाडे दुधारा हो जी
अजी क गाड़ू तू न भयौ सहाइ जी
अरे क तैनें रानी डारी गाड़ू मारि हा ।
गोरख तुही ।

× × × ×

राजा उम्मरु नें तो जल्लाद बुलाए
रानी बाछल ऐ जगल में आओ भैया डारि
म्वाते चले ऐं जाके घर के कमेरे
उम्मर कौ कहनौ डार्यौ हतुनांए ।
म्वाते चले ऐ रे
यह जन आए
फाँटिकु खूल्यौ पायौ नांहि ।
अवाज दई ऐ तूतौ
सुनि तौ री लोजौ सजा की बेटी
आज तेरे सुसर नें बादर डारे फारि ।
बोल सुन्यौ ऐ जानें हुकमु सुनायौ
मन की तौ कह दै बोरा बात
तेरे सुसर नें री दीयौरी निकासौ
बाछल बहना हाँ
मेरी तौ सुनि लैं बहना बात
मान सरोवर रे मान की बेटी
तौ सुनिलैरी भैना बात
इतमें लजायौ री सासुरौ
दोउकुल खोइ दई तैनें लाज
म्वाँते चले ऐं चार्यौ
जल्लाद आए
उम्मर ते करत जुवाब
तैनें कही तौ रे ।
मरी तौ जे पावै, जिन्दी तौ पाई बैठी आज ।
"भैया वुही तौ रे गाढा, वुही रामू गडवारौ
ब्वाई में बैठि घर जाई
"कितनी रे गाढ़ी रे, कितनौ सहाबौ,
कितनी हजारी सग भीर
तेरे बाबुल नें तो कू गाढौ दीयौ ।
मेरी बाछल भैना

नही गड़वारी तेरे साथ ।
सोने को लोटा होतो नही तो री दीनी
मुही रेसम डोरि वाके हाथ ।"
"मैना चंदन रूख कटाइ
रानी रथु बनवायो ।
नाद्यो धम्होरिनु मामू रानी
पीहर चाली री
वे सुरई के बैल रमझम चाले री ।
सात परिकम्मा रानीनें बैरी की दीनी
"सूवस बसियो ? मेरे सहर दरेरे म्हारे सुघर के वोरे
तेरी घर धंसो पाताल
रे हाँकि गाडी मेरे, रामू गड़वारे
बाबा सुरज पहुँचाइ ।
रुदन मचायो जामें गामू जमाम्यो
सुरिमायो कुटमु परिवार ।
रामू गड़वारो वाको रतकि में बोलयो
"मेरी सुनि लीजी मैना बात।
मेरी री सैरो होतो संघाजी को
मामु उम्मरे डारि दौ ई दो मारि ।
बैल जो जोरे रानी रथ बठारी
मात की बेटी जानें रथ सीधी बैठारी
म्हाँ ते रे माड़ा जानें ऐसी रे हाँकयो
दीनो बनी में जानें हाँकि
परे एक बनी गुजरात
सूनें बन मार्ये ।
दूजो दीजो धाइ हरयो बगपायो ।
पायो हरी की पेड़
रानी रथ बिरमायो री ।
रथु दीनो बिरमाइ
जानें पलनू बिछायो री
धरी जैमति राजकुमारी
जिमायो गड़वारो जी
पीयो जोहर को पानी
जाइ निंदा धाइ गई री
बैल बांधे रे हरी की डार
जगायो गड़वारो री ।
प्यास मर्यो रे बीरा मोर

नेंक पानी प्याइ दै रे
कूआ नाएँ वावरी नाएँ
जल कहाँ ते लाऊ री ।
अरे सोइ गई राज कुमारि
सोयौ गडवारौ री ।
गू गा गरभ कौ राउ
गरभ में सोचैगा ।
अरे जौ नानी कें लै जाइ
निनुआ मेरौ नामु परै
भाई दिगी वोल हरामी लाई री
नाना मामा कहें टूकन तें पार्यौ ऐ ।
गूगा गरव का राउ गरभ में सोचैगौ ।
तोरि दूव को पेड इकु सरप वनावैगौ ।
सरपु वनाइ वनाइ वाँवी में डारैगौ ।
उठि रे वासुकि राइ, तेरौ वैरी आयौ ऐ ।
वासुकि पूछै वात क कैसौ वैरी ऐ ।
अरे जव लैगौ अवतार पीरु विसु हरि लेगौ ।
रहेगी जाकी छूछि लीला घोडा ऐ हाँकैगौ ।
धरती के वासुकि राउ इकु वीरा डार्यौ ऐ ।
सवुई गये सिर नाइ बीरा काउ नै न खायौ ऐं ।
कारे को असवार पौनियाँ धायौ ऐ ।
चल्यौ ऐ कारौ नागु वाछिल ढिग आयौ ऐ ।
पलिका की लगि रही आनि
चढैगौ वैरी कित है कें ।
जाहर सोचै वात जाइ परचौ दिदै रे ।
एक कला ते वाहिर आयौ—
जानें चौटी खोली ऐ।
लगे गिल गिले वारु वहियन ते जाइ लिपिट्यौ ऐ ।
छाती पै वैठ्यौ जाइ
द्वै जीभ निकारैगौ ।
कहाँ डसूँ मोरी माइ तुरत मरि जाइगी री ।
जौ अम्मा ऐ डसि जाइ जनमु कहाँ लु गो रे ।
मारी गरभ में ते थाप,
गाँडै सरपु खिस्याइ गयौ ।
गयौ ऐ खिस्याइ खिस्याइ
डसे दोऊ नागौडी ।
भोर भयौ भरमात रानी वाछल जागैगी ।

उठि रे बीरा गाड़ीवान गाडी जोरीजे ।
भाँमी से लई हात बेल पे धामँमी ।
घरी क्या जोर्ड मोरी भैनि
बचिया तौ दोऊ हुक्क भई ।
'पीहरिया मरि जाऊँ
रोड मे च्यौं धाई
मूसि गई माया मांसु
मटक्त मेरौ जनमु गयौ ।
गू मा गरब की राउ
गरम में बोलेगा ।
कै तू भूत पलीत देव कै जागौ रे ।
मा मै भूत पलीत देव मा जागौ री ।
देयौ गोरखनाथु गुमा को बालकु री ।
मिटि गइयौ गोरखनाथ मोइ कहा बताइ गयौ ।
चमड है गयौ मोइ गरम में बोल्यौ ।
तेरे मरे बिवाइ चऊ बैल चमरि मर जावें री ।
लोटा सौं सीयौ हात नीर क मावें री
पामा की पहि लई पैस हरीसिंगु पाइ गवा ।
बोले राजा बात मेरो सुनै मेरे भाई रे ।
ये लोटा तौ बाधमि क दीयौ
जाइ तू कहाँ ते लायौ रे ।
तेरी बहनि क दीयौ ऐ निकासो
मरमु सौं भाई रे ।
कितनी मीर सहायो भाई रे ।
घरे बूही चवन को ए याउ
बूही रामु मजकारी रे ।
बूही गुराही पे बैल बड़ी ऐ मड़कारी रे ।
म्याई अटि भैंयौ मेरे बीर
पिया है मिमि घाऊँ रे ।
म्यांठे कुमर चल्यौ जाइ
मानमरोवरि आयौ ऐ ।
मातु प बूझे बात कैसें चित्त उदासी ऐ ।
घरे बादर भरे घ्यारि
मरमु सैं भाई ऐ ।
पू गा मरब को राउ
गरब में तडपयौ ऐ ।
घरे पतरा ते घाँयौ मारि

कहाँ फेरि भडक्यौ ऐ।
खूननु रकतु वहाइ
परचौ जाने दीयौ ऐ।
गूँगा गरव कौ राउ
वागर में आयौ ऐ
उम्मरु राजा वैठ्यौ तखत पै
तखत ते औंधौ दीयौ मारि।
(दोनों ओर के दल आए) वाछल वोली—आपनें हाथ पकड़।
'तूतौ हटि जा मेरे धरम के वावुल
गोता गयौ ऐ खाइ
तू वौ हटिजा मेरे वावुल प्यारे
तू अपने घर जाउ
'अपनौ सहावौ तू तौ लैकें रे जैयौ
मेरे गरव गुमाने वावुल,
मेरौ सहावौ तौ रे मेरौ गोरखनाथ
सीक समाइ तहाँ जाँउ।
(वाछल ते जाहर ने कही—सवासौ गज का निसान, गैलमा डका तो पै से लै लुगो)
भादो आधो राति औलियाँ जनमु लियौ
मथुरा में जनमे कान्ह वागर गूगा भयौ
हम्वै हम्वै कोयल वौली पापियरा झिंगार्‍या
भाई के मैदान में चौहान खेलन आया।
जिन धाया, इन पाया, वागर में सच्चा पीर रे कहाया।

जाहर का विवाह—

सूवसु वसौ ढकपुरा गामु तरैं हाथुर सी भाई
हेमनाथ नें कथी जोरि चेता ने गाई
ऊँचा अटा पीर कौ भारी
विधि रह्यौ पलगु लगी फुलवारी
सोइ पीर नें कीयौ चैनु
खुलि गये पलकु लैन नापैनु
भोर भयें माता पैं आयौ
आइ माता कूँ सीसु नवायौ।
सुनि री माता मेरी वात।
कहा कहू सपनें की वात।
साँची कहूँ समाइ न गात।
सुघड नारि सपनेन में देखी।
तिरिया देखी अति परभीन
भामरि ल गई साढ़े तीन।

मेरा री दिल हरि जौ लै गई
वेटी राजा की।
विनु व्याहें हे मानू नही ऐ वाछिल दे माइ
अच्छा वेटा जो सात सगाई उठी जा देस में
करि देंउ वेटा तेंरे सातौ व्याह
म्वांकी सगाई हम ना करें जी।
डारू री पजारूँ तेरे व्याहु नें
वुन सातौ नें।
मेरा दिल री हरि जौ लै गई
वेटी सजा की।
द्वै व्याहि दऊँगी गगा पार की
झरपेटो नारि
द्वै व्याहि दऊगी सकल दीप की
चदवदनी नारि
द्वै व्याहि दऊगी जा देस की
लडि हारी नारि।
इक व्याहि दऊगी जा विरज की
लडिहारी नारि।
करि दु गी रे तेरौ सातौ व्याह
म्वा की सगाई हमना करे वावरिया पीर।
चल्यौ रे पीर भौंरे में आयौ
आइ भौंरे में ठोकर मारी
लीला हस्यौ थानते भारी
छै महीना ते तिनु ना दयौ
अव लीला तोकूं कोतल भयौ।
छै महीना ते जल नाइ प्यायौ
कहा कामु लीला ढिग आयौ।
पकरि वकसुआ लै चलि भाई
चांदनी चौक जाइ ठाडौ कीयौ।
पहले न्हवायौ कच्चे दूध
जा पीछें गगा जल नीर।
पटने से रगरेजनि आई।
नादन में महदी घुरवाई।
तुम हरियल महदी लाओ सुघड वांगर की चोखी।
मस्तक गोरख लिखू लिखू लीले कें चोटी।
गले लिखू लीले कें ग डा

जो तेरो जाहरू जूझिजाइ तौ बागुर में खबरि पहुचै श्राइ।
सो श्राधौ व्याहु भयौ बगला में माता मेरी
श्राधे के कौल रे करारी
सो जाहर व्याहिवे जातु ऐ।
७ कमची मारी लीला के गात
लीला उड्यौ पमन के साथ
हुश्रा हुस्यार लगी नाइ चोट
फादि गयौ खाई श्ररु कोट
म्वा जाहर ने दहसति खाई
मति रोवै जाहर गुरु भाई।
धरम सुम्म लीला दयौ टेकि।
जाहर हँसे समद कू देखि।
समुदर देखि छूटि गई श्रास।
जूरी दैंत मिली बहमाता।
कौन कामु ज्यौं उतनु तिहारौ।
जाई कौ भेदु बताइदै न्यारौ।
सासु बहून है गई लराई।
मनु फटि गयौ डिगरि चौं श्राई।
वा दुसमन नें बादर फारे।
तो बुढ़िया कू दए निकारे।
सुफेद वस्तर धौरे केस।
बुढिया रहति कौन से देस।
उज्जलि गात भान कीसी लोइ।
जिया जन्त भकि जागे तोइ।
बूढी उमरि कठिन की विरिया।
चोरे पट पर खाइ जाइ लिरिया।
न्या बैठो तू कहा करतिऐ, हमें तू देइ न रे बताई
जगल में बैठी कहा करै।
८ जब बुढिया नें कही कुमर मैं तोइ समभाऊ
श्रारे जाहर पीर भेद मैं तोइ बताऊ।
मेरा नगरु इदुरपुर गाम
बहमाता ऐ मेरौ नाम।
जूरी को बाधू सजोग
करनी करै सो पावै भोग।
मो लिखनी में श्रसुर सहारे
पाचौ पड हिवारे जारे।

निरखत परखत चालें चाह
जाहर पीर देखि लै न्या उ।
सिगमरमर की पटिया सेत।
मिही काम रानी को देखि।
वाच्यो श्राकु रह्यो घन मवारी
फिरति श्रानि राजा की भारो।
नर वच्चा कोई न्हान न पावै।
उडत जिनावर राजा मारै।
सोने को सिडो दूध सो पानी
कौन रजन की श्रामें रानी।
गोता लेंतु ताल के वीच
लीला घोडा ऐ देंतु असीस।
नीर सीर वाछिल के जाए।
तैनें घोडा ताल न्हवाए।
पहलो लोटा भर्‌यो ढारि श्रर्जुन ले (धरती) दीयो
दूजो लोटा भर्‌यो ध्यान गोरख को कीयो।
तीजो लोटा भर्‌यो जापु सूरज को कीयो।
चौथो लोटा भर्‌यो नीरु घोडा कू दीयो।
हसत पीर लीला ढिग जाई
लीला घोडा रिस है जाई।
दाके दाके फिर्‌यो ऐड दै खूब भजायो।
छिन मतर के वीच पीर मैं तोड़ लै श्रायो।
तोकू जरा मोहना श्रायो।
श्रापुन जाइ ताल में न्हायो
मेरी तेरी टूटी रीति
मेरी सुधि ना विसराई
सो श्रापन न्हायो वहू के ताल में।

१०. तु दिल नगरी जाउ जहा सुसरारि तिहारी।
गुन महलन के वीच प्यारु करै सासु तिहारी।
मोहरी पट्टी दिपै दिपै माथै पै चोटी
सहर दलेले जांउ कहूँ वाछिल ते खोटी
तेरी जाहर मरघो जिलो भगा श्ररु टोपी।
दात तिनूका दै लिए श्राडे
हात जोरि जाहर भये ठाडे
तुही मेरो भैया वद तुही मेरी मा को जायो।
परदेसन में मोइ लै श्रायो।
श्रव का लीला मोते रूठे

चार तखता की सैर करी जाहर नें दादा मेरे
फिर बगला की सुरति लगाई क जाने बगला कैसौ होइगौ ।
म्वाते जाहर चले पीर बगला में आए
चारयौ ओर बगला फिरि आयौ
वगला कौ दरबज्जौ न पायौ ।
ऊपर कोट नीचे ऐं खाई ।
जाहर ऐ गैल बगला की पाई
चार्यौ कौन पींजरा आठ
पढ़वैयन की म्वा विछि रही खाट
कमरि मर्द के वधी दुलाई
जो पलिका पै भारि विछाई
तान दुपट्टा जुलमी सोयौ
छैमासी नीद रे सुहाई
दादा मेरे
सोयौ बहू की सेज पै ।
रेसम के रस्सा तोडारे ।
अनवोला के बाग उजारे ।
दातो से नारंगी खाई
भरिगौ पेट जम्हाई आई
फोरि फुहारो पानी पीयै ।
लीला नें दु दु वाग में कीयौ ।
इतनौं नुकसान वाग में कीयौ व्वा
घोड़ा ने दादा मेरे
तो जू आइ गई तीज रे हरियाली
सो पिछले पाख की
पिछले रे पाख तीज जब आई
सिरियल नें नाइनि वुलवाई
घर घर नाइनि फिरै नगर में देंति बुलाए ।
तिरियन लगे उमाहु फौज के से वधे तुलाए ।
तरुनी और नादान सिमिटि भई सव इकि ठौरी
वटैं सुपारी छाल औरु पानन की ढोली
सिरियल नारि मात ते वोली
मेरौ डोला दै सजवाइ सग चौदह सै डोली ।
पाइजेब वादी पहिरावै ।
पाउ धरै जैसे नौवति वाजै ।
नैनू की चद्दरि वुक्क खडी अजमत की फुलरी ।
नैन आम कीसी फाक, नाक जाकी सूआ सारी ।

वागर वारी तैंनें राख्यौ ।
नेंक अदल वावुल कौन राख्यौ ।
घोडा वारों ऱ्यातें कहा निकार्यौ ।
इतनी सुनि के वात हींसि घोडा नें दीनी
ऱ्वातें रानी वहा गई घोडा के पास ।
वीरा तेरा रे चढता कहा रे गया लीला घोडा रे
"मेरा भी चढ़ता भौजी सोवै तेरी मेज पै"
"क्वारी से तैंनें भौजी चों कही दई मारे रे !
वीरा भी कहिके टेरतऐं हमारो तु दिल में ।"
"भौजी भी कहिकें टेरतऐं हमारी वागर में ।
मैं जानि गयो रे जानिगी धनि सिरियल तेरो नामु ।
सपने में वात जौ तेरी है जो गई जुलमी जाहर ते ।
पाँच-सात कमची सड-सड मारि जो गई लीला घोडे में ।
"मैं भी तो जानुगो री आड गयौ फागुन मासु
हम तुम होरी खेलिलें री ओ सजा की धीअ ।
सग की सहेली रे वोलि फूल उन पै तुरवावै ।
जानें गोदी भरि लई वेगि फूलमाला पहरावै ।
तेरी पति सोइ रह्यौ वगला माल व्याके नहिं डारै ।
जौ सुनि पावै वापु तेरी हमे माडारै ।
तू राजन की धीअ कहा गजवानौ फारै ।
तेरौ वावुल सुनिकें वात हमें माडारै ।
तुम ऱ्याई ठाडी रहौ पास वगला मैं जाऊँ ।
अपने वाल मे जाइ जगाऊँ
व्वाते रे फाँसे मैं तो खेलू ।
मैं घोडा लु गी जीति किले की ईंट ढुवाऊँ ।
फूलन ते भरि लीनी गोद ।
रानी रहै कमल कौ फूल ।
तैंनें वाजू हमतें खेली
तेंनें वुलाइ लई सग सहेली
गलमाला अवकें पहराऊँ
अवकें चौपड फेरि विछाऊँ ।
साँची कहूँ वागर वारे गूगा राना
मानि लीजौ वात हमारी
नारि तिहारी मैं है गई ।

१४ सग की सहेली कहैं वात सुनि लीजो हमारी
कहा माया तैंनें फैलाई
जिही वात हम पै वनि आई ।

मानि लीजौ बात रे हमारी, राजा की बेटी
तोहि ब्याहि दलेले कू लै चलें
व्या की व्या रहि गई
व्याते कछू और चलाई
पए कुमर के तेल रहसि हरदी चढ़वाई
रोरी मरुअटि धुरै बैठिकें कजरु लगायौ
एक आखि मिचि गई एक में कजरु लगायौ
भौंह बिनूली उडी चादि पै बार न आयौ
कोतनारि आखिन में कजौ, दात दतूसरि मुख में भारी
ऐसौ जनम्यौ कुमरु कन्नि जाकी महतारी
पगौ तेलु आरतौ कीयौ
व्वा दुलहा कौ, दादा मेरे
भीतर कू लै जाइ
जाके हात हतौना धरि दिए ।
आठें कौ माढयौ राज घर नौते आए ।
भूप चलौ ज्यौनार पाति कू सबै बुलाए ।
भूप चले ज्यौनार जोरि प गति बैठारी
दौना पत्तरि फिरै हात गागर औरु पानी
दुहरे लड्ड फिरै मगद नुकुतिनि के न्यारे
भई जलेबी त्यारु ठौरु बरफीनु कू कीयौ ।
जाकौ बिगरै चित्त जाइका सौठि कौ लीजो ।
लुचई पूरी मगद कचौरी
वूरौ दह्री पाति दई गहरी
सुगढ राइने बने गहरि केरा की आई ।
सरस दारि म्वा भई जुरी महलन त्यौंनारी ।
हीगु मिरच बटि लौंग सौंठि औरु साम्हरि डारी
राध्यौ सागु सुधारि औरु राघी चौलाई
मैथी पालकु फिरै लहरि की गाडर आई ।
सरस दारि म्वा भई जुरी महलन त्यौंनारी
हीग मिरचि बटि लौंग सौंठि और सामरि डारी
सो ऐसी पाति दई
व्वा राजा नें दादा मेरे
नगर में हौंति रे बडाई
भूको म्याते ना फिरै ।
दहगड दहगड भई मगन भए सबुहि बराती
रथ बहली सजि गई धरी हातिनु अम्मारी
घूटु परवती सज्यौं तुरकी ऐराकी

एक बहसी सखिगई बरी झाबोनु ग्रम्मारी
ताकी गुरकी कवियो बंश।
मुरवा बनात नारि में बंझा
चोडा सचि बए मोर कराई
चव कमलाएनु में सुरति लगाई
एक बरन के सजीरे सिपाइ
मुस्लिम नमरी की सुरति लगाई
नारि में डोरा बुहरी कठी
सो एक बरन के सजे सिपाही
सो दादा मेरे
मौमा बरनि न जाई
सो दुलहा ताके (कागे) कू हम कहा करें।
केसीड़े के नारि नगर परिक्रम्मा कीनी
लशकर फिरे नकीब बेर काए क कीनी।
कटि कटि चूरि उडी मम्मर में
दादा मेरे
पूरब में जोति रे छिपाई
सो भाग गरद में घटि गयी।
साहब सीप में कही बेर काए क कीनी
सुनि सेज मेरी रे बाद सेज में नींद न कीनी
तुम चसि सेज मेरे सग
पो कछू होइगी दीदना मेरी सबरी साहिबी संग।
म्हारो साहबु चल्यो सुरति तु दिल की कीनी
सखिया गामें गीत
ऐसी कछू मोह दीजति ऐ दुलहा की फिरि आइगी न पीठि।
म्हारीई लौटजामें तेरी बरना
सबकों सबदु सुनाइ हर बरना (मार्ह)
हरबरना मनु कहि बात परि गई मन भारी
चौहानन की नारि म्हा है बाद विहारी।
म्हापें गोरखनाथ सहाय
चौरहसैन की सप ताके चलित समाधि।
सगरू चलै समाधि सब सम्पूब धर्मि मानी
नगर कोट की मात बात सुनि सेज हमारी।
म्हाके सबु सग ऐ रनधीर।
बारा रे हमारी मानि लें रे मरे म्हा भूटी उठैगी पीर।
पीर सबै का बीर सम्हारै
म्हाके कहा सब में देखि मीर

चौहानन के वीच में रे खूननु की उटाइ दु गो कीच ।
इतनो सुनिकें वात ज्वावु ज्वाला नें दीयौ
मै तु दिल कू न जाउ
चौहानन के आगें मेरी नई फरैंगी तरवार
साहबसिंह नें कही वात सुनि लेउ हमारी
तुम आगें परि लेउ कही मानो इक हमारी
तुम बनरस के सिरदार
ऐसी कच्ची लामतौ जी, हमारी घूमि घूमि चलैंगी तरवार
सिरियल नारि व्याह कें आमें
चौहानन ते तेग चलामें
बे पाँचई ऐं सरदार
एक फल में ते पाचौ भए, बे कहा तौ करिंगे तरवारि ।
मैं हरिगिज मानू नाइ
नातेदारी बिगरि जाइगी मैं आगें न धरूंगो चाचा पाइ
सात लाख की भीर, राउ चिंतामनि भारी
तुदिल की व्यानें करि दई त्यारी
तु दिल नगरी कितनी दूरि
वात बताइ दै भेद की रे अरे म्वा नियरी ऐ कै दूरि
साहबसीग नें कही चलौ तुम मसकौ घोडा
सिरियल नारि के फेरि मिलाऊँ सिरियल ते जोडा
जो सजा की घीग्र
हीरा भेंट में दै गयौ रे, वहमाता नें जूरी लिखि दई, दै दई ऐ व्यानें जोरी ठीक
गढ़ आमरिते चले फेरि तु दिल कू आए
राठौरी मिलि गए सगुन जे बिगरे तिहारे
अबऊ मानौ बात बगदि तुम चलौ विचारे
तु दिल ते वगदि आयें ठीक
वात हमारी विगरि जाइगी तुम वात हमारी मानौ ठीक
"अरे तू वादी कौ जामु वात तैनें खोटी कीनी
हम छत्री कैसें हटि जाइ वात सुनि लेउ हमारी
आगें चलैंगी तेग भेक जे चलैं हमारी
नगरकोट की सग मातु जे हौंति अगारी ।
घौरा गढ़ की सग
तुम बनरस के सरदार,
ऐरी कच्ची लामतु ऐं रे म्वा घूमि घूमि चलैगी तरवारि
सबु सिरदारी चली फेरि तु दिल में आई ।
राजा बूझै वात फौज कितनी ऐ आई ।

वाला भानुजौ वु हासी कौ सिरदार
तोइ गैल मै वो मिलै खेलतु होइगौ सिंह की सिकार
ग्वाते जाहर चल्यौ फेरि हासी में आयौ
भूश्रा पूछै बात हात में कहा लै आयौ।
जि कहा वधि रह्यौ तेरे हात में वीर
जे ककनु कैसें बधि रह्यौ मेरे पेट में उठी ऐ पीर
"कहा वाला मेरौ वीर
सग बरौनिया के वो चलै रे, वुही आगें सम्हारै तीर।"
"भैया वो ज्या तौ हतु नाइ
कहु बनखड के बीच मेरे खेलतुई मिलैगौ सिकार।"
इतनी सुनि कें रे बात ज्वावु भज्जू नें दीयौ
हम चार्यौ सिरदार पीर डरु कौन कौ कीयौ।
मेरौ जिही ऐ नरसिंह वीर
मेरे मान मिसुर कौ कदमु ऐ रे, वरैनुआ पै जिही सम्हारैगौ तीर।
ग्वाते घोडा उडयौ, फेरि समदर पै आयौ।
जाइ वाला भानजों खेलत पायौ।
"मेरी साची बताइ दै बात
तुम कैसें आमतौ रे, मैं तुमते ऊ चलतू तु दिल कू अगार।
तुम मती करौ रे देर नाथु जे चलतु अगारी
तु दिल नगरी रे नाथु,
चौदहसैन की जमाति परी तु दिल में न्यारी
खप्पर वारी परी पिछारी
नगरकोट की मात सग वो रहति अगारी
तोइ नल कौसौ वरदानु
जहा सुमिरै तहा आमति ऐ रे, वारौठी पै गावै मगल चारु।
इतनी सुनिकें बात ज्वावु जाहर नें दीयौ।
सुनि लै रे मेरी बात कहा ढगु तेरौ कीयौ।
नल कौ सौ मोइ ऐ वरदानु
सग हमारे रहति ऐ रे, रहति ऐ सिंह सवार
मात हमारी वो वडी रे
जाकें पीछें सवरी जाइफा मात
देखि समद कौ नीर वेगि घोडा दहलानौ
कलि गोरख के नाम सम्हारौ
तुम वेडा वाधि समद में डारौ।
अबु उडिवे की मोमें वाकी नाइ
मैं बेडा में ज्यौं चलू, मेरे अधर चलिगे भैया पाइ

नरसिंह वीरा लयौ अगार
भज्जू चमरा चलतु पिछार
बाला भानज करै जुवाव
भैया व्यापै रे वीरन की मार
कोई नरसीगै डारै मारि
इतनी सुनिकें वात ज्वावु नरसीग नें दीयौ
अरे वारौठी की कीनी त्यारी ।
सजा नें देखि मानी न्यारी ।
इतनी सुनिकें वात ज्वावु हरीमिग दीनौ ।
पिछिली तोकू नाइ खवरि वाग में सिरियल खाई ।
सात दिना गए बीति ताल पै ढांकु बजाई ।
नाश्रो भर्यौ वु नाश्रो खेल्यौ
सबु वाइगी पचि गए तनक ना मुखते वोल्यौ
तिरवाचा तुम पै भरवाई
मरी कुमरि तेरी सिरियल ज्याई
अवकें ताखे फेरि खदावौ
डसि जाइ नाग हात नाइ आवै ।"
अरे चौं गाड़ूँ तू सगुन विगारै ।
भाई जौ जिदिगी वचिजाइ तिहारी
मानौ चाचा तुम वात हमारी
एकु कह्यौ तुम मेरौ कीजौ
पीर कौ व्याहु सिरियलतें कीजौं ।
मोते ल्हौरी भैनि व्वाइ कछवाइनु दीजौं ।
मुसक वाधि वो तेरी डारै
सबु दल कूँ भज्जू माडारै
फेरालेगौ डारि बात वो फेरि विगारै
राजी ते चौंन फेरा ऊ डारै ।
चौं चाचा मेरी बात विगारै ।
जवरन रे वो भामरि डारै ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु राजा नें दीनौ
चौं गाड़ू तू परनु विगारै
हम चौहानन कें करै न सगाई
हमनें पहले लीनी मांग, उनते करें लडाई
उल्टी सिड्डी बटा चौंरे चढावै
सो हटि हटि जुज्झु करै तु दिल में
चाचा मेरे
मानि लीजौ तू वातरे हमारी

जो क्वारी लै जाइ वात डिगि जाइ हमारी
हमनें रे सजा कीनी नाही
तैंने वावा हिरिगिजि मानी नाही
सो हटि हटि जुज्झ करौ तु दिल में
दादा मेरे
होन देउ रे लडाई।
वारौठी की कछवेनें कीनी त्यारी
सात लाख की भीर राउ कछवन की भारी
जौ गाडू वनि जाउ वात विगरि जाइ तिहारी
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ
जौ गाडू अगारी परि जाउ तेगना भलै तिहारी
हसि हसि वात करै रे जाहर
दादा मेरे
सपने में है गई नारि रे हमारी
तुम टरि जाओ अपने गढ आयरि देस कू ।
इतनी सुनिकें वात ज्वावु दुलहा नें दीनौं
जे क्वारीई ना जाँउ वात गहि जाइ हमारी
भज्जू चमरा तेग सम्हारै
सवु कछवाइनु हाल विडारै।
कछवाए लीने घेरि
काने तू चौं न तेग सम्हारै
हमारौ जाहर चल्तु अगारी
तुम वारौठी की कीनी त्यारी
वीरन की ऐ तुम पै मार
कहा चलति ऐ हमारी वार
सो हाथ जोरि तेरे करूँ निहोरे
दादा मेरे
व्याहि दीजौ सिरियल नारि रे हमारी
जाइ गढ आमरि कूँ लै जाँय
इतनी सुनिकें वात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
नरसिंग पौंडे चलतु अगार
वाला भानज करे जुवाव
सुनिरे मामा मेरी वात
कछवाइन ते खेलौ घात
कुर्सी मूँढा लए मँगाइ
सजा जोरै ठाडौ हात
भैया भक्क भक्क वहि चली, जैसे मति वहि चली गंगा।

जो जाहर ऐ न लागै दागु
अवकें कमठा फेरि सम्हारि
नरसीग वीरई म्वा खेलै सार
भज्जू चमरा लडि रह्यो हाल
सुनि लै सिरियल मेरी वात
कन्यादान में आवै न तेरौ वापु
जार भमरिया लीजों डारि
फेंटा कटारी की नाए वात
सखियाँ गाओ मगलचार
हरीसीग कहौ गैल तू देउ हमारी
भज्जू चमरा ने घेरो अगारी
सुनि लेउ सजा वात हमारी
नातेदारी जुरी हमारी
अव तौ सिहु पौरि पै गाजै।
लीला घोडा करतु जुवाव
भामरि भैया चौं न लेइ डारि
सिरियल तेरे खडी अगार
पाँच–सात भामरि लै जो गया, जाहर उन महलन में।
साढे तीन भामरि मेरी रह जो गई, वागर के रे पीर।
वुही तौ रे हरिगिज लुगो, साढ़े तीन भामरि, है जाँइ भया वीर।
वो सिरियल की मात फेरि माढए तर आई
अवकें माता करति जुवाव
मेरी सुनि लै जाहर वात
फेरा तैनें लीए वाग में डारि
सो जवई धीअ हमारी तू लै जातौ
जाहर वागर वारे
मानि लें तौ वात जो हमारी।
जे कुटमु नासु काए कू होतो।
ठाडी ठाडी सिरियल कहि जौ रही, महलन के वीच
घोडा तूवी लीला सुनि लै धरिलै मोइ पींठि के वीच।
'भौजी तोइ तौ पींठि पै मै ना धरू, मेरी जिही कुल की रीति
जाहर जो मेरा वीर है, वो चढि लेउ मेरी पीठि।
केस पकरि लै तू मेरी नारि के अरी भौजाई वीर
नरसिंग पाँडे हमारे सग में तुम मानौ मेरी वीर।
भज्जू वी चमरा साथ में, तुम मानौ मेरी वीर
नेग जो वाला वीर का, वुलेगौ गोद में वीर।
व्वाते वी देही मैं ना लगाउगी, लीला मेरे पीर

इन्नें तौ चेताइ कें तू जिनमें दीजो सास तू डारि ।
तैनें दईऐ सवद की मार
तोप गोला चलन नाइ पाए, नांइ चलो पिस्तौल कमान
तैनें दईऐ सवद की मार
सिर इनके कटे हत नांए, जे पोटि रहे परे परे पांइ ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु हरोसीग नें दीयौ ।
तेरौ कहा विगर्‌यौ ऐ लाल, लाल तैनें सबके लीये
तैनें सब दोए मरवाइ
मरे मराए कहां बगदि आगे, तैनें दोयौ भेकु कटवाइ
तू तौ भौतु बनामतु ऐ बात
तेरी बात कहां रहि जाइगी, तेरी लई चौहाननु काटि नाक ।
हात जोरि देखि कहि रह्‌यौ बात
मेरी तौ रे कछू नाइ चलती, तैनें मारी सबद की मार
कहा ऐ गोरखनाथु
ब्वानें तौ गूगुर दयौ, जालदर नें दीनी ऐ भभूती हाल ।
मेरे कौन जनम के पाप, धीअ नें सिग्यिल जाई ।
चौहानन की भीर आजु चढ़ि तुदिल पै आई ।
तुम बेटी ऐ लै जाउ
बात हमारी विगरि गई ऐ, नातेदारी जुरैगी हति नाइ ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
चौं सजा तू गरूर विचारै
तू इतनी बांधै हिम्मति बात तू अपनी विगारै
हम बागर कूं जात ऐं भाई ।
तेरी धीअ हम नें सिरियल व्याही
सजा तू अब कें तेग सम्हारै
हरोसीग ऐ वेगि बुलावै ।
घोडा पै ताखौ करै जुवाब
अरे सुनि रे सजा मेरी बात
खाई तेरी सिरियल नारि
मरि गई ऐ वू हालई हाल ।
तिरवाचा हमनें भरवाई ।
तेरी मरी कुमरि हमनें सिरियल ज्याई ।
सो बात कहै सुनि बात हमारी
सजा चाचा
तू महलन कूं चलि भाई
सोवे में कहा तू देइगौ ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु सजा नें दीनौं

सजा राजा, चाचा मेरे
सो सिरु भुट्टा सौ लु गो तारा कौ काटि कें ।
परिकम्मा घोडा नें दीनी
एक ठोकर सजा में दीनी
सजा राजा चलतु अगार
जुलमी घोडा करै विचारु
गाँड़ अब चौं चलतु अगार ।
मूज, बकौटा और चमारु
चौंचौ कूटै चौंचौं फारु
तो में दई ठोकर की मार
अब गाडू चौं चलतु अगार ।
तारे दै अब तू खुलवाइ
फाटिक की रस्ता लै जाइ
अब कछवाइनु लेइ जगाइ
बुनते हमारी तेग चलै फराइ
वे सबरे तुमनें डारे मारि
अमिरितु बूँद हम सबपै डारे
चाचा मेरे
अमरु सबनु करि जाँइ
सो डोला में बीअ अपनी तुम धरौ
माढ़्यौ पट्टा गाड्यौ नाहि
भामरि कैसें लीनी डारि
खयौ पकरि ब्वानें लीयौ डारि
महलन में रही रुदन मचाइ
तैनें जबरन लीनी डारि
बाबा गोरख करै जुबाब
तौ जू आए जलधर नाथ
सो लै लीनी बीअ गोद में
दादा मेरे
तौ जू है गए नाथ जौ सहाई
सोवे की त्यारी करि रह्यौ ।
बेटा तुम सहर दलेले लै जाउ नारि है गई तिहारी
जूरी हमनें दई मतवारी
ठाडौ गोरख जोरै हाथ
सुनि लेउ बाबा मेरी बात
एकौ देउ तुमऊ करवाइ
सोवे में लुटिया देतु गहाइ

न्यारौ किलौ चिनामें मौसी छोटे छोटे बुर्ज वनामें
छोटे छोटे बुर्ज वनाइकें उनपै तोप धरामें
जवई जाइ गाम अपनें कू गाठि कछू ना बाधें।
सो हात जोरि तेरे करें निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
थोरौ सौ विसवा बाटि दै।

लाला खेलन गयौ सिकार औलिया ऐ आमतई समझाऊ
ढिग लुगी वैठारि पीर ते भुम्मि की वात चलाऊ।
मन सन्तोक धरौ रे जौरा, उर्जन सुर्जन
वैहन के बेटा
करि दुगी तीनिरे तिहाई
सो आवे मेरौ औलिया।

माता तेरौ जाहर सिर्री दिमानौ
वागर देस में है रौ रानौ
तेरौ जाहर ऐसौ धीगु
मागे विसे दिखावै सीगु
जैसोई जाहर ऐसोई सिरियल
सो हात जोरि तेरे करैं निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
सो जापै तौ लिखवाई।
बाछल रानी कहत कहानी
मैं पतिभरता जगनें जानी
द्वात कलम महलनते लाइदै, जेठनु भुमि की ठानी।
वाला तन ते मैंनें पारे, अन्तर कछू न जानी।
वडे भए जव विसे भुम्मि की ठानी
सो बाछल भोरी
समझी थोरी
व्वा मैया नें
द्वात कलम मगवाई
सो सजा की वेटी लाइ दै।
सीलमत सजा को बेटी
तैखाने में आई।
मनते अकलि उपाइ कुमरि नें द्वाति कलम दुबकाई।
सासुलि टूटी क़लम औंधि गई स्याही

छिन भुमि होति रे पराई
सो डुकरिया बाटै देति ऐ।
देवी जाहर खेलैं सार
मीरा गाजी करै जुवाब
जाहर पीर महलन कू जाउ
तिहारी बांगर बाटी जाइ
छोड्यौ पासौ पटक्यौ दाउ
लीला घोडा तुर्त मगाइ।
जाहरपीर बडे परवीन
कसि बाधे घोडन पै जीन
सुई सुरख सीस पै पगडी
हाथ बनी भाले की लकडी
उल्टौ घोडा राह लगायौ
ठम ठम ताजी नचतौ आयौ।
उगिलिपरी तरवार, हाथ ते भालौ सटक्यौ
फडकै दाई आखि, होइ बागर में खटकौ
मारि घोडा महलन कू आयौ
दादा मेरे सो पौरी पै झुलस्यौ आई
सो जाको लीलौ घोडा हीसियौ।
७ बजी खमखमी टाप, भये महलन हुकारे
भाई अजमत धारी पीर, टूटि गए बज्जुर तारे।
अब तौरी सिहु पौरि पै गाजै, दरवाजे बाजै तरवारि
बेटा समुही परिकैं करियौं रैलौ।
तुम पहलैं बाटौ सहर दलेलौ।
जो कहु बाटैं आवैं आधु
मति मानौ जाहर की बात
तुम फेंट पकरि डारौ गलबाई
बागर बाटौ तीनि तिहाई
ठाडी माता अर्जु करति ऐ
उर्जुन सर्जुन
मन में दहसति चौं खाई
समुही बेटा ज्वाव करौ।
सुर्जन बात चटपटी कही
बांह पकरि बाछल लै गई
जौ जौरा जिय में दहलाउ
तिहारी राह बनी मोरी मे जाउ
जो पाग उतारि काख में दीनी

जग जोरम्नें
बाबा मेरी
मोरी की राह रे सिधारे
बाछल मौसी रामु रामु।
८　दोनों दोनों जोधा निकरि जौ गए पाछी रूप के जोरा।
जाहरपीर महलों में आइ जौ गया बाबा गोरख का चेला।
चोखा सवामी चुकवार में सहूरी गू दे ने
सिरियल मारि बिछाइ दियौ पलिका।
बैठि गयौ जाहर नर बंका
पगड़ी में सोने की झब्बा
माथे बरे आफूम के छिब्बा
सिरियल मारि धरी अलबेली
आपु सजी सीव संग सहेली
पीए रे भंग भुलाए मस्ती
अब सिरियल मारि चढ़ी अलमस्ती
फेंकी कलम पटकि दई हाथि
या अपने बीर को मूँ ड सिरोहीते काटि।
ठाड़ी ओट चोक बंगला की
वो संजा की बेटी
बीरी होति रे लगाई
बलमा मेरे जाहिसी।
९.　मैया देखि देखि कैं मूरति अम्मा बीक फोरिकें रोई।
बेटा एकन के ऐं लाख भाम एकन कै ना कोई।
अम्मा कौनम की ती लाख लोग और कोनस का ना कोई।
उमु न मुर्दन कें साथ सोमुऐ तेरौ आगि अगेसी
बाबा मेरे तीऐं लाल तौमु और पूजई कौना कोई
सो माने बिमे तबक तू दै दै
जाहर बेटा
ए बाबरिया
जाहर करिबे लड़ाई
बीरी नो बिमका काटि दै।
माता नें नामु भूमि भी सौपी।
जाहरपीर की अकरपी हीपी।
बहु अगर टूटि गए बामा कै
दिन में मैना है गए रामे।
जौ कोई कहूंगो हमनी पीर

वाकूँ मारि डार तौ ठौर
सो तेरी कुक्षा जनमु लियौ ऐ
वाछल मैआ
ए ठकुरानी
तोते मेरी कछू न वस्याई
मर्दन के विसवा न वटैं।
१० मारें मारें रिसके मारें निकरि जो गया वावा गोरख का चेला
कासौ बी देंति लगाइ
सजा की वेटी भोजन लाई तू जैलें चित्तु लगाइ।
अव कें चलैगी दल में तरवारि
समझि वूझि लै मेरे वलमा तेरी वरनी रही ऐ खिमाइ।
वादर फारे जा राड नें
वहनौतऊ लीए पारि।
मौतु करिगे दिल्ली तक जागे वास्याइ लामें चढाइ।
हम पै गोरखनाथ सहाइ।
चौदह सै सोटा ऐसे चलैंगौ, व्वाकी एक चलै न तरवार।
एक न मानी वांगर वारे तौ जानें लीयौ जीनु सजाइ
फारिका डार्‌यौ जानें घोडा पै, भालौ लीयौ उतारि।
जाकी घनऊ खाति पछार
म्वांते चलतौ है आयौ, तौजू है आयौ परभात।
उर्जुन सर्जुन दोनो आए।
मौंसी वे रहे वात लगाइ।
बेटा नाम्रो रिसके मारें पीयौ दूध
कौंसौ लाई लगाइ कें
सो भोजन फेंक्यौ दूरि।
मेरे दिल में उठति हिलौर
वांधन कौ छौना गयौ, वांगर में नांइ मेरौ और।
११ म्वांते सुर्जन चल्यौ पास मोदी के आयौ
सुनि रे मोदी वात मेलु वावा नें खूव वनायौ
सुनि रे मोदी वात
भोजन करि तैयार वीरन कूँ, हमें लड्डू देइ वताइ।
वजन वताइ देउ ऐ सहजादे
जामें कितनौं देंइ किनकु हम डारि।
१२ सवा पांन सेर के चार्‌यौ लड्आ
नेंक जामें दीजौ जहर मिलाइ।
हल्ला मति करियौ वांगर में, हम पीर ऐ देंइ खवाइ।
म्वांते घोडा दीए हांकि

बिसके लड्डू लाए बनाई ।
ठेंठर खोटी जाति जहर लडुअन में दोयो
तुम मेरे नगर में रहो रौंद सुरई न को पीयो
जो जौरन कूँ देइ सहारो
गधा पै देंउ चढ़ाइ, करूँ जाकौ मुहडौ कारो ।
हम लैन कहत एं भुम्मि, उलटि भयौ देस निकारो ।
वाँधन कूँ मडोल कडे पहरन कूँ तोरा
बैठन कूँ सुखपाल ग्रोरु हाथी ग्रौ घोडा ।
सो करत ए ऐस पराए पोछें
उर्जुन सर्जुन ए मौसाइते
दादा मेरे
खातए हम पान रे मिठाई
सो ग्रापुनि जौरा निकरि गये ।
१४ ग्वांते सुर्जन कहे बात एक मेरी कीजौ
तुम दिल्ली कूँ चलौ सहारो ग्वाऊ कौ लीजौं
तुम ग्रच्छे कसि लेउ जीन
दिल्ली ग्र्याते दूरि ऐ
सजा जू पहुँचिगे कितनी दूरि
१५ धरि मसक्यौ सुर्जन नें घोडा
धरि मसक्यौ वोरनु घोडा
घोडा पैते भरतु उसास
एक डोकरी ऐ पूछन लाग्यौ न्या कौन की ऐ राजु
रा राजा कौ काऊ ऐ मति पूछैं
वो सहजादौ लाल ।
बनन में बोह खेलतु ऐ, काऊ पैते नाइ लेंतु भेजऊ दाम ।
ऊटन केऊ हलकन वारे ज्वान
जे सबरौ देखि राजुऐ जामें जाहर ऐ सिरदार ।
ऊचे कू चाहे नजर परि जाइ
जे मौसाइते दोऊ ऐं ज्वान
मेरी तौ जे हरि फोरि जागे, मोरे सुनि लेउ घोडा बारे ज्वान ।
थोरौ सौ राजु ऐ उर्जन सर्जुन कौ, वे मौसी पै लैंइ लिखवाइ ।
जा डोकरी नें बादर फारे, जाऊते पहलें हम है ग्राए ठोकि बजाइ ।
व्वाकी एक चली हति नाइ
जहर के लड्डू हम लै गए बनी के बीच में
व्वापै है गयौ नाथ सहाइ ।
स्यापन के जहर ते बुनाग्रो मर्‌यौ मात ।
हम दिल्ली सहर कू जननी जात

वाछ्याई झडा म्वा मिलै
म्वाते सुर्जन चल्यौ फेरि दरवाजे पै आयौ
पहुच्यौ ऐ रमनीक
तखत पै पहरे दारुऊ पायौ
पहरेदार कहै मेरे वीर
कैसें औ मन दिल गीर
हम कहा पूछतु बात
ब्वास्याइ ते दादा हम मिलें
सो हमें दीजौ गैल बताइ
कौन रजन के पूत कहा गढ-किले तुम्हारे
रौतिक रूप भयौ एकु राजा
दिल्ली कौ वास्याइ लागतु चाचा
महम किले पै बज्यौ नगाडौ
व्वा दिन पाग राजा रूप तें पलटी ।
सो परि गई लाज पाग पलटेकी
दादा मेरे
का हौति ऐ वाछ्याई
वाछ्याई तबला कहा ठुकै
१८ इतनी सुनिलई वात ज्वाब ज्वानन नें दीयौ
पिरथी राज भयौ मन फूल
चार्‌यौ दिसान में जाकौ राजु रह्यौ चार्‌यौ खूट
सो जानि अजाही तेरी जाइगी
व्वा चौहानीन में
दादा मेरे
मरिगे जहर विस खाई
सो तेगा हमारै ना फलै ।
१९ "लम्वौ कौ यौ हाथ
सलाम वाछ्याइ तें कीनी
वाछ्या ठाडौ ऐ करजोरि
कौन रजन के पूत ओ तुम भौतु मलूक रखत औ मोइ ।"
"रौतिक रूप भयौ एकु राजा
दिल्ली कौ वास्या लागत चाचा
महम किले पै वज्यौ नगाडौ
लाख खिंची तरवारि पीठि दै व्वा दिन भाज्यौ
मेरे पिता नें झुकाइ दए हाती
व्वा दिन पाग राजा-रूप ते पलटी
सो परि गई लाज पाग पलटे की

बाबा मेरे
बोजी फिरावे रे हमारी
माठे में भतीजे सपत एँ ।
२१ कै कोई जाहर जिन्दु मरे राठौरी रामा
क्यों लिए हाथ की जाह करें जोड़न की दामा ।
जु जमींदार अपनी भूम्मि की
क्या में फितनौ जोर ।
हटिया जाइ बोल्या तैनें कहा मचायौ शोर
सो ठाड़ौ भास्या काहि पहूँची
जाहर अलबेलौ हा
जाइ रह्यौ अड़ा देखु
पुंडीर, कौए, असल भिमार, बाकरे सब माझारे
मे सबर बारे कौन बिचार
मे बाकर है रहे हमारे
सिकरवार परवार
किए कछवाहे तक्कर
पुंडीर कीने असलि भिचार
मे परे कैदि में बत्ते चार
कैदि किए जामो कमराई
चाएसौ दिसम में फिरति दुहाई
सो इतनी जोर भयौ भौ बाबा मेरे
दिल्ली के बाबे बरि रह्यौ
२२ भीमतु छोरि हतुनाए
बात सुनिलेउ हमारी
तुम बापर की करि देउ त्यारी
हम बात गइ एए ठीक
जु मरदानो ऐसौ ऐ
सो दिल्ली की उजाड़ देगौ धूरि
ठोक लेगौ मारि करै तेरी दिल्ली बस में
बारा बड़ सौ भइ नहीं नहीं जिगु सौ योधा
मीरा गाजी सौ मरदु नहीं सौ बाने बारामड़ ठौरा
बादशाह ने लिखवाईं पाती
जारि रुक्का मारि चिट्ठी डारी
सै चिट्ठी महरी की बस्ती
तीन मुकामु गइ ना कर्‌यौ
मेरठ के दरवज्जे पै गयौ ।
मेरठिया बूझें बात

कहा को चौकीदारु ऐ, मो साचुई साचु बताइ
नौरग तौ सिरदारु है, व्वाके हैं पहरेदार
चिट्ठी दीनी हात में तुम वाचिलेउ सिरदार
दरमनिया कहि रह्यौ बात
लौटि पाछे कू जइयौ
ज्या नाइ हमारौ सिरदार
हस विनास होइ वागर मे
सो हमारी नाइ फलै तरवारि
नाइ फलति तरवारि
चेला गोरखनाथ कौ वो दे सोटन की मार
हम चढि कें कैसें जाइ
चौहाने में हमारो भैनिएँ, राठौरीनु लगि जाइ दागु
सो कहतु ऐ बात, लौटि जा ।
दादा मेरे, पिछमनौ
ठाडौ अहदीते कहि रह्यौ

२३ म्वाते अहदी चल्यौ फेरि रौतक कू आयौ ।
रौतक पूछै बात कहा हरआनी आयौ ।
वौ हरिआने कौ जाटु
ऐसौ तौ सिरदारु ऐ जाहर ऐ लेगौ मारि कें
तुम म्वाई करौगे फिरादि ।
जे आमें दखिन के दक्खिनी
नाचें घोडी झूमें हतिनी
जे आयौ हरिआने कौ जाटु
जाइ पर्यौ जमुना के घाट
जे आए विंदावन मुडिया
मुडि रही मूछ, कटाइ आए चुटिया
सो नरवर खेर जुरी दिल्ली में
चाचा मेरे
लखु आवे लखु जाई
सो फौजन की गिन्ती ना रही ।

२४ हवलदार वास्याइ वुलवावै
वागर के जानें करे पिहाए ।
चलति अगारी फौज
हम लडिबे कू जांत ऐं, सो वेगि सजाइ लेउ फौज
इतनी सुनि कें बात ज्वाब लाला नें दीयौ
गो छोटौ सौ सिरदारु
व्वापै कहा फौज पल्टनि ऐ भूडन में करै अपनौ राजु

ज्यौं तौ कोपि चढी वाछ्याई
लै चिट्ठी अहदी कूँ दोनो
दादा मेरे
वाँचिलो जौ हुरमरे सवाई
सो परमानौ वास्याके हात कौ ।
२५ लै चिट्ठी अहदी कौ चल्यौ
चल्यौ चल्यौ हाँसी में गयौ
नीचें चाहि नजरि फिरि जाई
जाकी वस्तो वडी लग्यौ परकोटा
अव सवु हासी कौ एकु लपेटा
नीचें चाहि नजरि फिरिजाई
दरवाजे पै तारी पाई
लै तारो जानें तारौ खोल्यौ
वाला के वो जौरें गयौ
जाइ वाला पूछतु वात
कहाँ के तुम सिरदार औ, कैसें आए हमारे पास ।
कैसे आए पास
सुनौ मेरी वात
अहदी दैरह्यौ ज्वावु खवरि तोइ अवऊ न सूझी
जे दल तो पै आए घूमि
घेरि तेरो हाँसी लीनी
चिट्ठी फेंकि तखत पै दोनी
वो वालानें वाचि हात में लीनी
मसि भीजत रेख उठान
लिख्यौ वास्याइ कौ फार्‌यौ
अहदी मीडै हात, कहा गजवानौ फार्‌यौ
सो चनन के भोरें मिरच चवाइगौ
वाला दादा मेरे
करुगौ हलकु भयौ जाई
परवानौ वास्याइ के हात कौ ।
२६ जानें अहदी लीयौ घेरि फेरि गलवाही डारी
अहदी दयौ खम्भ ते वाँधि
जामें दई कुरंन को वानें मार
मोइ मति मारै दादा मेरे, मोइ मति मारै
जे गजवानौ वाला तू चौ फारै
मे ऊ तौ नौकरु वास्याइ कौ भैया
चिट्ठी लायौ वास्याइ के हात की

सुनिरी नानी मेरी बात
अब जौरन नें हम डारे री मारि
जौरा आए हासी खेत
म्वा दीखि रहे ताला के महल
जानें हासी लीनी तोरि लूटि दिल्लो पहुचाई
सो ऐसा जुलमु कर्यौ ऐ नानी
उर्जुन सुर्जन नें
रूप मत के
मन में दया नाँइ आई
जानें भानज डार्यौ मारिकें ।

३० म्वाते पलटनि चलो फेरि बागर में आई
सासुलि गढति पडापड देखि, मेख
घोरा पडलि सेत, तूतौ मौंहरे ते बाहिर चलि कें देखि ।
नाहक रारि करी जौरान ते
फौजैं लै लै आए माजनि मौहरे ते बाहर चलि कें देखि
अपने बलम कौ मैं तो घोडा पाऊ
घोडा पाऊ, पाँचौ कपडा पाऊ
कपडा पाऊ, पाँचौ हतियार पाऊ
लैकें बीकू वास्याइ ते मिलि आऊ
ऐसे बचि जाइगौ सासुलि हेरौ तेरौ बेटा
और अब बचिबे कौ सासुलि नाइ
जापै जे दल आए घूमि
गोरख तुही
'अरी मेरी री जाहर नाहर भया ऐ
सजा की बेटी,
जाइकें चौं न देइ जगाइ
अरी वहू आजु देइ चौंत जगाइ
गोरख तुही ।

३१ नासिका में वारी चुन्नी
मोतिन की तोतादार
जापै घाघरौ घूमकदार
टेडिया हमेल हार
रानी पायल की झनकार
गोरी बलमै जगायन गोरी जाई
सो पिउ की प्यारी वल में जगामन गोरी जाइ ।
घारऊ सजाइ लियौ
चौमुख जराइ लियौ

फौज हम पै हति नाई
वे कछवाए भरि रहे जोर
मांगे लायौ ब्याहिकें सो वो खूबु दिखामतु जोर
मो सौमत सिंघु भयौ कछवायौ
लडिवे कू ठाडौ है रह्यौ
सो सुनि ठाडी माता कहि रही
इतनो सुनि कें वात ज्वाबु लीलोनें दीयौ
वागर वारे पीर तैंनें डरू काकौ कीयौ
मैं तो ऐसी भरू उडान
नौ जोजन मरजादैं जाऊगी फारि
ऊपरते छोडौ तरवारि
नरसिंगू पाडे देंतु जुवाव
अरी माता कहा लीला वो ऐ सिरदारु
लीला नें तोरि कें रस्सा ऊ लीनौ
वढि कें पासु महल में दीनौ
एक गुरु की पैदाति
नरसिंगु भज्जू और चमारु
हम पै तौ जाहर सिरदारु
भैया देखि चलैगी गुपत की मार
सोटा वारौ आवै वावाजी
माता रचादे (घोडी)
वुसवनु डारैगौ मारि
तुम कसि वाधौ अव जीन
वोलि लेउ नरसीगु कू नीर
भज्जू चमरा चलै अगार
जाहर तौ लीले के गात
खूबु फलै वीरन तरवारि
हलकारौ जानें फौजन में वोल्यौ
वे गजवानौ कैसौ वोल्यौ
नौसै नवासी तगु जो टूट्यौ
तुम सुरजनै लेउ वुलाइ
राजा पै लायौ काऊ देवता पै
सव की हात में तें छूटि गई एँ तरवारि
आजु सवकी छूटि परी ऐं तरवारि
भैया मेरे घोडा लेंतु वढ़ाइ, पिछमनौ तू मति करियो
नरसींगु कूदि पर्यौ कर जोरि
कछवाए लीये घेरिकें, मारि मारि कें भजाइ दए सवरे ग्रोरु

लीले घोडा के पैर घावु-घावु ग्रायौ
दुपटा री फारि व्वाकौ पैरु मैनें वाध्यौ
दिल्ली कौ वास्याइ मैने पैया परती छोड्यौ
हेमूसाह वनिया मैनें जात जात घेर्यौ
व्वापै तौ महरी वनवाऊँ
वनिया कलस चढावै भारी''
गोरख तुही
''ग्ररे वे कहू देखे तैनें उर्जुन सुर्जन
उर्जन सुर्जन दोऊ भैनि के वेटा
भैनि के वेटा वेटा वद रे तिहारे
वेटा उनकी कहौगे खुसराति
सौने की थारी ग्रम्मा माजि-माजि लैयौ
जौरन की री सौगाति दिखाऊ
थारी लाई माजि
जाहर के ग्रागें धरी, थारी में धरे ऐं दोऊ सिरदार''
''मैने तौ पारे वछडे तैनें चौं मारे
जिनकी तौ कामिनी वेटा कैसें कैसें जोमें
लवे लवे पट्टे इनकी खुली सी वतीसी
जिनकी रे कामिनी वेटा कैसे जीमें
तोइ नेंक तरसु ग्रायौ हतु नाइ
तेरौ रे मुखडा वेटा कवऊ न देखू
तोइ तौ रे दूधु मैनें वकडी कौ प्यायौ
मैंनें दीये ग्राचर कौ इनकौ दूधु
ग्रपनौ खीरु मैने इनकू प्यायौ
वकडी कौ दूधु वेटा तोइ जौ पिवायौ
नेंक तरसु तोइ इन पै नाँइ ग्रायौ।
तेरौरी मुखडा मैं तौ कवऊ न देखू''
''ग्ररी मैया मैं तौ तोइ दिखाइवे कू नाइ''
घरते चल्यौ ऐ जुलमी
जाकी देखि व्याही खाति पछार
'तुम तौ रे जातौ, राजा, चेला जोगी के
मेरौ देखि कौन हवाल
ग्राजु वलमा मेरौ कौन हवाल
गोरखजी।
''मन में उदासी तू तौ मति री लावै
ग्ररी व्याहता नारि
वचन तौ पूरौ मैं तो, व्वाते करूगो

लीली के गुरु भाई भैया ज्वान
तुंदिल नगरी मैंने वातजु राखी
व्याहि कें लायौ सिरियल नारि
तोकू फिरि व्याही ऐ सिरियल नारि
वो तौ री कामिनि तैंनें रोमति छोडी
छोडें तौ जातु ऐ मोऊ ऐ आजु
"तोइ ना रे छोडू मेरे लीले वछेडा
तुही तौ लगावै नैया पार ।"
"तोकू जिमी में वेटा ठौर जु नाइ
चौहानन कू नाए दादा ठौरु
अरे मक्के कू जाना, वेटा
कलमा पढ़ि आना
चेला जोगी के
मौलवी के जैयौ भैया पास ।"
घोडा तौ रे खोल्यौ जानें करी ऐ सवारी
घोडा उडावै जुलमी आजु
कारी तौ बदरी में घोडा समानौ
उडि उडि घोडा लगतु अगास
मक्के में आयौ याकू, मौलवी पायौ
जाइ दै रह्यौ धरकार
"हिन्दू धरमु तौरे चौंरे विगारै
उम्मर के नाती आजु
कहा तौ रे असनौ तोपै आनिकें पर्यौ ऐ
चौं आयौ हमारे पास
जाहर चौं तौरे आयौ हमारे पास
"मेरी रे अम्मा नें वोली जो मारी
गु समाइ गई गोरे गात
आज वुही समानो गोरे गात
कलमा सिखाइदै मोकूँ
मक्के पहुँचाइदै
तेरौ जनमु न भूलूँ अहसानु ।"
कलमे "पाक कदर वेली पाक ऐ
पाक साईं तेरौ नाम
पाक साईं केजे कलमा
कलमौं से उतरौगे पार
कुजो कलम कुरान को
कलमा मुख कू नूर ।

दिन में री जाऊ ससार लखैगो
दरवाजे पै पावै वाछलि माइ
घोडा वी खोल्यौ जानें जीनु निकार्‌यौ
चेला जोगी के
फरिका लीयौ डारि
कूदतु ग्रावै जाकौ उलल वछेडा
मोरतु ग्रावै दादा वाग
म्वाते चल्यौ ऐ सहर दलेले ग्रपने खेरे में ग्रायौ ।
म्वाते उडायौ, घोडा उडायौ
ग्रायौ सहर दलेले ग्रपने गाम
ग्ररी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
मूगा दे वादी,
दरवज्जे पै ठाडे जाहर वीर जी ।
ग्रजी राजा उम्मर के चौकीदार जगिगे
पहरेदार जगिगे
तुम कू चोरु चोरु कहिकें डारें मारि
गस्तीमान वी हमारे
चौकीदार वी हमारे
क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम वजुर किवार
ग्ररे करानी खोलौगी वजर किवार
तू तौरो वादी हमनें टूको से पारो
ग्ररे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ ग्राजु ।
मैं तौ रे राजा नैनें टूको से पारी
गैल वटोहीरा सुनिलै वात
तू तौ जाहरु ऐ चिरने वताइदै मैया ग्राजु
जौरे हमारी तूतौ सिर कौ साईं
ग्ररे तुम हौ सिरियल के भरतार
गगा रे जमुना तेरे ताख विराजैं
जे ही महलन में चिरने ग्राजु
ग्रजी मैं खोलू नांइ वजरु किवार जी
ग्रौर सरापु री कहा तोइ दुगो
घरकी कमेरो
मोर परैं कोडो की तोपैं मार
गोरख जी ।
भोरु भयौ चिरही चौहचानी
भयौ तौ सकारौ ग्ररे हा
सोमत ते जागी सजा की वेटी

अरे चढिकें महल पै मैं कूक मचाऊ
सोता नगर रे जगाऊ
का गस्तीमान रे जगाऊ
क्या तू भया था दिमाना
तो मैं लगवाऊ कुरौं की मार
म्वाते चली ऐ धन सिरियल आई
जाहर ते करै री जुवाव
मेरे देह को, मेरे रे सिर केरे साई, चिरने वताइदै तू आजु
दाई ओर तेरे देखि लहसनु कहि ऐं
म्हारे वाप के तू तौ रह्यौ तौ मजूरा
तैंनें मै गोद तो खिलाई
सुनि लै परदेसी जुवाव
वदी खोलै नाइ वजर किवार
जौ तू हमारे सिर कौ साई
अरे चेला जोगी के
खोलो तुम अपने वजर किवार
घोडा उडायौ रे, घोडा कूदि कें आयौ
जाकौ उलल वछेरा
आयौ महल के बीच जी।
जिन वातन्नें मैं तौ कवहू न मानू मेरे सिर के साई
ठोकर ते खोलौ जी किवार
दुनिया ऐ क्या दोसु ऐ
मौपै घर की तिरिया परचौ मागै
मेरे लीला वछेडा
गुरु तौ मनाइलौ जानें आपनौ
ठोकर मारी वाए पाम की, खुलि जाइ वजर किवार लोहे सार की
घोडा लगायौ घुडसार में
हसि हसि कें वातें होइ
नारीरे पुरिष की
भोजन लाओ तुम तौ कहा बतराओ
वेटी सजा की
अपने पीया ऐ देउ न जिमाइ, हाँ।
आधी रैनि गई ऐ रे, आधी खसि आई
राजा नाए भोग विलास जी, हा
अव तौरी जाइ रहे रानी
फिरि तौ आमें
सजा की बेटी

न आयौ नाऊ बाम्हन कौ
न आयौ मा जायौ बीर
राजा की बेटी
बिगरि बुलाई बहु जाउगी
तेरे न होइ आदर भाउ
इन महलन में
जो तेरौ भैया कहूँ आमतौ
मैं जांत न बरजू तोइ
राजा की बेटी
घर झूलौ री घर पालनौ
महलन में सामनु होइ
राजा की बेटी।
रानी धमकि महल पै चढि गई
खाती कौ लालु बुलाइ
लालु बिसकरमा
अरे बीर कहू, कै तोते बाढई
तोते देवर कहू कै जेठु
रे नवल खाती के
एकु पालनरौ गढि लाउ
काइ कौ तेरौ पालनौ
काए के बान मगावै
राजा की बेटी।
भैया अगर चदन कौ पालनौ
वही लाइ दै रे समवान
सुगढ खाती के
गुहि लैयौ लहरिया बान।
अरी आक-ढाक गढि लागो
मोपै चदन पैदा नाइ
धीम्र राजा की।
लाला और बाग मति जइयो
जइयौ ससुर के बाग
च्या बींजा वन में
लाला आठ कुठारो नौजनें
गहि लई ऐ गैल वा बीझा वन की
भैया रे आमत देख्यौ बिरछ नें
वो बिरछा दीयौ रोइ
चंदन कौ पौधा

भैया नरसींग मार्यो रोरिका
पलरंयन में उरझ्यो हारु
बहू सिरियल को
टूटि हारु धरतो गिर्यो
ऐ मन रोवँ पछताइ
रे घर सासु लड़ेंगी ।
भैया रे झूलि झालि म्वांते चले
दोऊन अधवर परिगो वादु
सासु वहून में
कौन पै पहरी जे चुरी
तैंनें कौन पै कर्यो सिगारु
राजा की वेटी
अरी अपने वलम पै जे चुरी
वलमा पै कर्यो ऐ सिंगारु, सासुलि प्यारी
मरि जइयो री डुकरिया
मेरी री वेटा मरि गयौ धरती में समान्यो
रग-जग नें जान्यौ
तैंनें महल कर्यो ऐ भरतार
तू मोइ जाइ न वतावै ।
तेरे जानें मरि गयो
मेरे नित आवै नित जाइ
सासु तेरौ वेटा
जौ तेरें आमतु जातु ऐ
मोइ इक दिन देइ न वताइ
लाल मेरे कू ।
इतमें लजायौ वहू सासुरी
तैनें दोऊ कुल खोइ दई लाज
राजा की वेटी
आजु सकारी होन दै
मरवाइ दु गी ढोल वजाइ
तैंनें कुटमु लजायौ
राजा की वेटी
जौ वेटे की सादिली
तौ इक दिन पहरौ देइ वैठि आगन में
हाथीदात की पलिकिया जानें लई मरुए तर डारि
मैया पहरे पै वंठी
इतकौ पहरौ इत गयौ चढ़गयौ पिछवार

मैया झुरि झुरि पिंजरा है गई
व्याकी नाइ जीवे की आस
लरकिया दैश्रा
मरि गई ऐ मरि जान दै
मैं चलत जिवाऊ राजा की बेटी
फागु दियौ ऐ बहकाइ कें
पीरु आप भए असवार
व्या लीले से बछेडा
घोडा उडायौ जाहर वीर नें
पौरी पै झुलम्यौ आइ
जाकी सिंघ पौरि पै।
रानी सोमति ऐ कै जागत्यै
तुम धन खोलो वजर किवार
जाहर म्वा ठाडे।
जाहरु ऐ तौ खोलिलै
नही चोरु वगदि घर जाउ
मेरी मासुलि जागै।
लीला दुनिया ऐ कहा दोसुऐ
घर की तिरिया परचौ मागै
मेरे लीले से बछेडा
ठोकर मारी वाए पाम कों
खुलि गई वजर किवार म्वा लोहे तौ सार की।
घोडा लगायौ घुडसार में
खुटियन पै धरे हथियार
पीर मरदानौ
भैया रे भरि लोटा जलु लै चली
जे धोवै वालम के पाइ
नैननु भरि रोवै।
रानी और दिन हंसतो खेलती
आजु कैसें मैलौ भेसु कहे चौ न मन की।
तेरी मैया मोते जारु लगावै
भरतार लगायौ
चुरिया उघटी
मैं सहर करी ऊ वदनाम
तेरी मैया नें, हा
आमन ऐ सौ आइ चुके
तेरे अव आइवे के नाइ

वाम्भन के छौना
जोगी सेयौ तैनें भली करी
करि दु गो मुलिक में नामु मेरी वाछल माता
मेरे जिय की कहा परी
तेरे लगी महल में ग्रागि
मालु जर्‌यौ जातु ऐ
बेटा महलन कौ तौ कहा जरै
सोटि लकडिया ककरा पथरा
मेरी लगी ऐ कोखि में ग्रागि
पीरु भाज्यौ जातु ऐ
ग्ररे मूडन पै पहुँच्यौ गयौ।
यौं घोडा गयौ समाइ
धुर वागर वारौ
रानी तौ रोवै जाकी गोरी रे रोवै
वाछिल खात पछार
वारह् वारह् वर्स रे धोई तौ लगोटी
ठाडो तौ रही ऊ दिन-राति
तोइ निरमोही ऐ मोहु न ग्रायौ जी
तैनें भैया डारे मारि
बेटा वीरन डारे दोऊ मारि
ऐसौ री जुलमी तैनें जुलमु गुजार्‌यौ
रोमति छोडी तैनें नारि जी।
रुदन मचावै रे सासु वहुरिया
ग्राजु ग्रपनी सासुलि ते करैंगी विलाप
राड जौ कीनी तेनें जुलमु गुजार्‌यौ
वहनौतनु भूलति वैरिनि नाइ।
जिनके काजें मैंने जोगी सेयौ
मेरौ वहुग्ररि प्यारी
सेवा तौ करिकें व्वाइ लाई मागि।
नामु जु डूव्यौ रे जातु सुसर कौ
मैंने जोगी सेए दिन-राति
मेरो सासु नें ऐबु लगायौ
सिरियल वहुग्ररि री
मेरौ पिया तौ घर ना ग्रोरी
हम तौ निकासे मेरे उम्मर राजा
तोसी तौ वहुग्ररि जाइ समाइ री
मेरौ री बलमा री ग्राजु तौ समानौ

इस मुलक में
मैं तो ब्याई करूंगी गुरुराज
गोरख जी ।
दाईं दाईं ओर तो सिरियल सौनी
बाईं ओर बाछलि माय
बाछलि रानी बाकी माइ री
सिरियल पै तो रे चुरियां चढ़ति एँ
बाछल पै नागर पान
इस मुलक में
रानी को विवाह पूरो भयो
सुनि लेउ रानी